प्राथमिक स्तर पर विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के अध्यापकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

(चित्रकूट–धाम मण्डल के विशेष सन्दर्भ में)

बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी की
शिक्षा–शास्त्र विषय में
पी–एच०डी० उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध प्रबन्ध

2007

निर्देशक – 19/9/2007

प्रो० डी० एस० श्रीवास्तव
पूर्व संकायाध्यक्ष शिक्षा,
पूर्व प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष,
संयोजन, शिक्षा पाठ्यक्रम समिति,
बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

अन्वेषिका – Singh 19.09.2007

श्रीमती संध्या सिंह
एम०ए०, एम०एड०

शिक्षा–विभाग
अतर्रा कॉलेज, अतर्रा, बाँदा

पूज्यनीय

माताजी एवं पिताजी

को

सादर समर्पित

Ex. Institute of Education
BUNDELKHAND UNIVERSITY
Kanpur Road, Jhansi - 284128 (Uttar Pradesh) • Mob. 09450081211
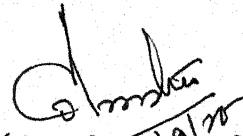
Prof. D.S. Srivastava
Ex.Professor & Head, Director
Ex.Dean, Faculty of Education
Convener, Board of Study

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि शोध प्रबन्ध **"प्राथमिक स्तर पर विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के अध्यापकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन (चित्रकूट-धाम मण्डल के विशेष संदर्भ में)"** जो पी-एच.डी. की उपाधि की अभिपूर्ति हेतु प्रस्तुत किया गया है यह अन्वेषिका का स्वयं का किया गया कार्य है। यह कार्य पूर्ण रूप से मेरे निर्देशन में पूरा हुआ है तथा बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय के शोध अध्यादेशों के सभी प्रावधानों की पूर्ति करता है।

श्रीमती संध्या सिंह ने 200 दिन विभाग में उपस्थिति रहकर इस कार्य को पूर्ण परिश्रम, लगन तथा अध्यवसाय के साथ सम्पन्न किया है।

दिनांक : 19-09-2007

(प्रो० डी० एस० श्रीवास्तव)
विभागाध्यक्ष
शिक्षा संकाय, अतर्रा कॉलेज,
अतर्रा, बाँदा

आभार

"The teacher is a golden key,

That opens the door of success"

अध्यापक के विषय में यह कथन बिल्कुल सत्य है। इसी प्रकार मैं आज जिस शोध अध्ययन को पूर्ण करने में सफल हुई हूँ उसका श्रेय मेरे निर्देशक प्रो० (डॉ०) डी०एस० श्रीवास्तव को है। अतएवं मैं हृदय से कृतज्ञ हूँ तथा इस कृपा दृष्टि हेतु आजीवन उनकी आभारी रहूँगी क्योंकि समय-समय पर अगर उनके द्वारा मेरी मदद व शोध हेतु मार्ग-दर्शन नहीं किया गया होता तो मैं शायद ही इस शोध को पूरा करने में सफल हो पाती। आपने एक पर्यवेक्षक एवं एक अध्यापक तथा संरक्षक के अतिरिक्त समय-समय पर एक अच्छे मार्गदर्शक बनकर शोध कार्य में मेरी पूर्ण रूप से सहायता की है तथा इस सहायता में मार्ग-दर्शन हेतु अपना महत्वपूर्ण समय व अमूल्य योगदान दिया है।

मैं शिक्षा विभाग, अतर्रा कॉलेज, अतर्रा के सभी प्राध्यापकों के प्रति भी आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से इस शोध कार्य को पूरा करने में मेरी सहायता की है, जिससे यह शोध कार्य समय से पूर्ण हो सका, इन सबके विषय में यह कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी-

"Teachers are here Teachers are there,

But good teachers are every where".

मैं सन्दर्भित पुस्तकों एवं रचनाओं के लेखकों एवं प्रकाशकों के प्रति भी कृतज्ञ हूँ जिनसे समय-समय पर मुझे अपने शोध अध्ययन में सहायता प्राप्त होती रही है।

इस शोध कार्य को पूर्ण करने में डॉ० श्याम सुन्दर कुशवाहा, पूर्व प्राध्यापक, शिक्षा संस्थान, बुंदेलखण्ड विश्वविद्यालय-झाँसी, डॉ० पी० एस० सेंगर, शिक्षा-विभाग, अतर्रा कॉलेज, अतर्रा तथा डॉ० ओम्कार चौरसिया, विभागाध्यक्ष बी.एड., पंडित जवाहर लाल नेहरू कॉलेज, बाँदा को हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने

समय-समय पर इस शोध कार्य को पूर्ण करने की गति बढ़ाने एवं सुझाव देने में कृपा की है।

इस शोध कार्य को मैंने अपनी पूज्यनीय माताजी एवं पूज्यनीय पिताजी की प्रेरणा से प्रारम्भ किया था उनका आर्शीवाद अध्यावधि तक मेरे साथ रहा है, अतः मैं यह शोध ग्रन्थ उन्हीं को समर्पित कर रही हूँ।

जहाँ तक इस शोधकार्य को पूर्ण करने का प्रयास है। वहाँ मैं अपने पति डॉ० ओउम् पाल सिंह जी को कभी भी विस्मृत नहीं कर सकती हूँ, क्योंकि प्रदत्तों के संकलन में शोध प्रबन्ध को टाइप कराने में तथा टंकण गलतियों को सुधारने में इनका सहयोग न मिला होता तो इस शोध कार्य को मैं पूरा करने में असमर्थ थी, क्योंकि मेरे साथ पारिवारिक दायित्व भी जुड़े थे।

मैं अपनी पूज्यनीय माताजी (सास) की भी आजीवन ऋणी रहूँगी क्योंकि उन्होंने इस कार्य को पूर्ण करने में मेरे मनोबल को बढ़ाया तथा जब मैं इस कार्य को करती थी तब उन्होंने मुझे गृह कार्य से मुक्त रखा।

अन्त में मैं श्रीमती (डॉ०) रागिनी श्रीवास्तव जी जिनका आर्शीवाद मुझे सदैव बड़ी बहिन के रूप में प्राप्त हुआ है तथा वह मेरी प्रेरणा-स्रोत रही हैं, मैं उनके प्रति अपना विशेष रूप से आभार व्यक्त करती हूँ।

यद्यपि प्रस्तुत शोध में रचना एवं टंकण की त्रुटियों को दूर करने का भरपूर प्रयास किया गया है तथापि कतिपय त्रुटियों के प्रति अन्वेषिका क्षम्य है। अन्त में, मैं श्री एन. आर. कुशवंशी जी के प्रति भी अपना आभार व्यक्त करती हूँ क्योंकि उनके द्वारा इस शोध कार्य को शुद्धता के साथ टंकणित किया गया है।

अतर्रा, बाँदा

19-09-2007

Singh 19.09.2007

(श्रीमती संध्या सिंह)

विषयानुक्रमणिका

विषयवस्तु		पृष्ठ संख्या

विषयवस्तु		पृष्ठ संख्या

*****

तालिका सूची

अध्याय–1

प्रस्तावना

प्रथम अध्याय

प्रस्तावना

परिचय :

हमारे समक्ष जो दृश्य सांसारिक प्रपंच का है। उसमें ज्ञान का वास्तविक रूप है? मानवीय व्यवहार में अच्छा क्या है बुरा क्या है क्या स्वीकार्य है तथा क्या त्याज्य हैं? ये प्रश्न मानव की जिज्ञासा तथा अन्वेषण का केन्द्र बिन्दु रहे हैं। इन प्रश्नों के सम्यक् एवं सर्वमान्य उत्तर की खोज में मनुष्य कभी-कभी परस्पर विरोधी निष्कर्ष पर भी पहुँचा है क्योंकि ये प्रश्न इतने जटिल एवं दुरूह हैं कि अनन्त समय से मनुष्य इसकी गुत्थी सुलझाने में अनवरत रूप से संलग्न रहा है और पता नहीं आगे आने वाले कितने समय तक मनुष्य को जिज्ञासु बनाये रहेंगे तथा उनकी क्षमताओं के समक्ष चुनौती बने रहेंगे जीवन और जगत की उत्पत्ति एवं प्रकृति ज्ञान के वास्तविक स्वरूप तथा मूल्य विषयक मौलिक प्रश्नों के सन्दर्भ में विभिन्न मान्यताओं और विश्वासों के ढ़ाचे को ही सामान्य भाषा में मूल्य कहा जाता है।

मूल्य, या यों कहा जाये कि मनुष्य के सम्मुख सबसे बड़ी कठिनाई यह है कि उसे स्वयं अपनी प्रकृति की व्याख्या करनी है, स्वयं को परिभाषित करना है। मनुष्य के अध्ययन का क्षेत्र स्वयं मनुष्य ही है। वह ज्ञाता भी है और ज्ञेय भी। मनुष्य के ज्ञाता और ज्ञेय के कारण ही उसकी नियति और प्रकृति विषयक परिभाषा या मूल की व्याख्या जटिल है। मूल्य से तात्पर्य किसी वस्तु के अन्तर्गत विद्यमान गुणों से है जो उसको किसी वस्तु से भिन्न दर्शाते हैं। मूल्य वह गुण समुच्चय है जो किसी वस्तु विशेष में निहित होते हैं तथा वस्तु उस गुण समुच्चय से विशिष्टता के आधार पर परिभाषित की जायेगी। जैसे अग्नि का मूल्य है उष्णता तथा जल का गुण धर्म है शीतलता।

वस्तुतः किसी भी वस्तु के व्यवहार में उसका मूल्य प्रतिबिम्ब होता है यथा अग्नि के कार्य में उष्णता तथा जल के कार्य में शीतलता होनी चाहिये यदि क्रमशः ये गुण परिलक्षित नहीं होते तो इनको जल व अग्नि नहीं कहा जा सकता अर्थात अपने ही अस्तित्व ये वस्तुयें मूल्यहीन हैं। कोई भी वस्तु अपने यथार्थ स्वरूप का बोध गुण एवं मूल्य के माध्यम से कराती हैं अधिकांशतः यह माना जाता है कि अनुभव इन वस्तुओं के संयुक्त मूल्य से बना होता है। नीति शास्त्र या नैतिक शुभ का सिद्धान्त दर्शन से अत्यधिक प्राचीन श्रेणी में से एक है और सन्दर्भ शास्त्र की विद्या ने दार्शनिकों को बहुत समय से ध्यान आकृष्ट किया है। लेकिन आधुनिक समय में अनेक व्याधियों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि इन स्रोतों तथा हमारे जीवन के अन्य मूल्य सम्बन्धी क्षेत्रों में व्याप्त एक सामान्य क्षेत्र है। यह विश्वास किया जाता है कि इन विभिन्न मूल्य सम्बन्धी क्षेत्रों को समझने में यह सामान्य क्षेत्र कुंजी का काम करेगा। कम से कम यह तो सम्भव है कि मूल्यों को तत्कालिक एवं परम मूल्यों के रूप में दो प्रकार का मानकर विचार किया जाये।

1.1 समस्या की पृष्ठ भूमि :

मूल्य अभिवृत्तियों एवं आदर्श हमारे व्यवहार को निर्देशित करते हैं। मूल्यों से अभिप्रेरणा को दिशा मिलती है। हमारे व्यवहार का नियन्त्रण करने में मूल्यों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ये अभिप्रेरणा को शक्ति देते हैं। आवश्यकताओं की सम्पुष्टि के स्वरूप को निर्धारित करने में निर्णायक का कार्य करते हैं। हम सहयोग करेंगे अथवा असहयोग, सहनशील होंगे अथवा भयभीत यह हमारे विचारों पर ही निर्भर नहीं करता वरन् यह हमारे मूल्यों द्वारा हमारे स्थायी भावों तथा अर्जित परिमार्जित मूल्य प्रवृत्तियों के द्वारा निश्चित होता है।

जीवन और संसार को हम जिस अर्थ के सन्दर्भ में समझने की चेष्टा करते हैं। उस अर्थ को सामान्य रूप से मूल्य कहा जाता है। कुछ दार्शनिक मूल्यों को वस्तुनिष्ठ अथवा विषय पदार्थ पर निर्भर मानते हैं। अतः मूल्य शास्त्र में वस्तुनिष्ठता का तात्पर्य देश व काल में अस्तित्व से नहीं लगाया जा सकता।

मूल्यों की व्यक्तिगत विचार धारायें पदार्थों का मूल्यांकन मनुष्यों की व्यक्तिगत संतुष्टि के संदर्भ में करती हैं, जबकि वस्तुनिष्ठ विचार धारायें मानवीय संतुष्टि का ध्यान रखते हुये भी कुछ वस्तुनिष्ठ सिद्धान्तों पर विश्वास रखती हैं और उन सिद्धान्तों के अनुसार ही मूल्य शास्त्र के सिद्धान्त स्थिर करती है। मूल्यों को व्यक्तिगत संतुष्टि पर आधारित कर देना मूल्यों के मूल्य को ही समाप्त कर देना है। इसीलिये इन व्यक्तिगत विचार धाराओं का अधिक महत्व नहीं है।

मूल्यों का विकास समाज में होता है। सामाजिक सम्पर्क द्वारा नैतिक विकास होता है। हम कुछ मूल्यों को प्राथमिकता देते हैं कुछ को त्यागते हैं मानव व्यवहार केवल विचारों द्वारा ही नहीं अपितु भावों द्वारा भी होता है। सिद्धान्तों को भावों द्वारा शक्ति मिलती है। स्थायी भावों के आधार पर ही मूल्यों का चयन होता है और उच्च मूल्यों के निरन्तर चुनाव करने से यह हमारा स्वभाव बन जाता है।

मूल्य समाज को व्यवस्था देते हैं तथा व्यक्ति के व्यवहार की दिशा को आधार देते हैं। जिस समाज में मूल्य निर्धारित एवं द्वन्द रहित होते हैं, वहां निर्णय तथा विकास उच्च स्तर पर होता है। इसके विपरीत मूल्यों के चुनाव के विकल्पों की सम्भावना बढ़ जाने से उनके निर्णय की समस्या जटिल हो जाती है। कुछ मूल्यों के लाभ-हानि से अधिक समस्या मूल्यों के निर्णय व निश्चय करने की होती है। समस्या के परिणामों के उत्तर दायित्व स्वीकार करना और भी कठिन हो जाता है व्यक्ति के सम्मुख यदि समाज अथवा शिक्षा द्वारा मूल्य प्रदान किये जाते हैं तो वह अपने व्यवहार निर्णयों के

लिये किसी भ्रष्ट अनुमोदन स्वीकृति के लिये धर्म तथा राजनीति के नेतृत्व की शरण ढूंढ़ता है।

हमारा देश तीव्र गति से विकास की ओर बढ़ रहा है। इस वैज्ञानिक युग में पुराने मूल्यों से उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हो रही है। उनमें आस्था धीरे-धीरे कम हो रही है। साथ ही दूसरे नवीन मूल्यों को भी स्थायित्व नहीं मिल पा रहा है क्योंकि जहां एक ओर हम पुराने मूल्यों को बनाये रखने का प्रयत्न करते हैं। वहीं दूसरी ओर नवीन मूल्यों का आकर्षण हमें अपनी तरफ खींचता है। अनिश्चितता की ऐसी स्थिति में सांवेगिक निर्णय लेने के परिणाम स्वरूप अपचारी व्यवहार बढ़ता जा रहा है। जिसकी चरम परिणति आत्मघात में भी अधिकाधिक हो रही है। नवीन मूल्य भी इस अनिश्चितता की स्थिति को दूर करने में असमर्थ रहे हैं।

जीवन मूल्यों के भरण की स्थिति में यह प्रसांगिक है कि जीवन मूल्यों के बदलाव एवं भोगवादी दर्शन के प्रति अतिशय की स्थिति समाज के उच्च पदस्थ व्यक्तियों में सर्वप्रथम आयी परिणाम स्वरूप अनिवार्यता में, अनास्था, विश्वास का अभाव उत्तरोत्तर सामान्य जन में बढ़ता जाता रहा है और बड़ी द्रुत गति से जीवन शैली एवं जीवन मूल्यों का आविर्भाव हो रहा है। जिसमें निहित काम और अर्थ ही जीवन का नियामक यथार्थ है।

यह एक अटल सत्य है कि समाज और सामान्य जन राज्य नीति से ही आचरण हेतु प्रेरणा ग्रहण करता है क्योंकि राज्य में ही वह बाध्यकारी शक्ति निहित होती है जो स्वेच्छाचारिता कदाचार तथा समाज की मान्यताओं के प्रति आचरण को बाधित करती है।

वस्तुतः शिक्षा, जीवन मूल्यों के सम्प्रेषण में उत्प्रेरक का कार्य करती है। इसीलिये किसी समाज की मूल्य विषयक जो भी स्थिति है नयी पीढ़ी में उसकी स्थिति अपेक्षाकृत

अधिक गति से होने लगती है। परिणाम स्वरूप जीवन मूल्यों में अन्तर्द्वन्द एवं विसंगति से समाज आराजकता, अस्थिरता और बिखराव की ओर अग्रसर होने लगता है। समाज के बीच भौतिक दूरी घटने में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है। समाज़ के विभिन्न मानकों के एक दूसरे को प्रभावित करने तथा इनमें अन्तःक्रिया के परिणाम स्वरूप उत्तरोत्तर विकासोन्मुख समाज में मानवीय व्यवाहर के मानकों में एक समय में ही अन्तर्द्वन्द व्याप्त रहता है।

मानव की कल्पनाशीलता तथा सृजनात्मकता उत्तरोत्तर अभिनव जीवन-मूल्यों की स्थापना तथा पुर्नस्थापना में प्रतिबिम्बित होती है। कल्पित स्थिति की प्राप्ति के पश्चात मानव के अभाव व असंतोष का अनुभव करने लगता है। परिणाम स्वरूप वह पुनः उस स्थिति की कल्पना करता है, जो अधिक सुन्दर, अधिक उपयोगी एवं अधिक वरणीय है। वस्तुतः इस अपेक्षाकृत सुन्दर, उपयोगी और वरणीय जीवन मूल्यों की खोज को सतत प्रक्रिया ही मानवीय प्रगति का इतिहास है।

मनुष्य की सर्जना शक्ति अनवरता श्रेष्ठतर तथा उच्चतर जीवन मूल्यों की खोज एवं उनके प्रतिस्थापना की प्रक्रिया निरपेक्ष मूल्यों की स्थिति भी अंततः असंतोष से अनवरिति नहीं दिला सकती क्योंकि सापेक्षिक जीवन मूल्यों में सुख अपेक्ष्य के अधीन होता है तथा अपेक्ष्य स्वयमेव किसी अन्य स्थिति के सापेक्ष होने के परिणाम स्वरूप नष्ट होने वाला हाता है क्योंकि मूल्य शून्य में विकसित नहीं होते वे सम्पूर्ण व्यक्तित्व में ओत-प्रोत होते हैं अतः इसके लिये सम्पूर्ण व्यक्तित्व को उसके परिप्रेक्ष्य में समझना पड़ता है। व्यक्ति के स्वप्रत्य का उसमें सर्वप्रथम स्थान होता है। नवीन तथा वांछित मूल्यों का विकास भी तभी सम्भव है।

मूल्यों के उद्देश्य तथा लक्ष्य उसी की पृष्ठभूमि तथा अनुभवों के आधार पर मूल्यों की शिक्षा देना होता है। मूल्यों को हम परिमार्जित व परिष्कृत परिवर्तित कर सकते हैं। उनमें आमूल परिवर्तन संभव है न कि वांछनीय।

कोई भी ऐसा समाज नहीं है जो कि मूल्य एवं उसके प्रभाव से अपरिचित हो तथा भविष्य में मूल्यों द्वारा मनुष्य के संदर्भ में किये जाने वाले विकास को आंकलित न करता हो मूल्य आधारित शिक्षा किसी भी समाज एवं राष्ट्र को किसी भी प्रकार की बुराई, हिंसा, भ्रष्टाचार एवं उत्पीड़न के खिलाफ आधार प्रदान करती है इसके विपरीत यह समाज के अन्तर्गत शान्ति, भाईचारा, सम्पन्नता एवं स्वतन्त्रता प्रदान करते हुये संयम, मानवता, धर्मनिरपेक्षता का विकास करती है इसीलिये मूल्यों के विकास के संदर्भ में किसी भी प्रकार के व्यवधान को बहुत सावधानी और तत्परता के साथ देखना चाहिये। मूल्य किसी भी समाज या राष्ट्र का वह आधार स्तम्भ होते हैं जिसके द्वारा उसका सम्पूर्ण विकास सम्भव है।

मूल्य पुराने समय से लम्बित मनुष्य की आवश्यकताओं जैसे अच्छे जीवन की तलाश एवं जिज्ञासा, अच्छे गुणों का विकास, भौतिक एवं आध्यात्मिकता के संदर्भ में अग्रसीत करते हैं। समय समय पर मनुष्य की भौतिक एवं आध्यात्मिक आवश्यकताओं का समायोजन भी मूल्यों द्वारा सम्भव होता रहा है। मूल्यों के सम्पूर्ण विकास के लिये समुचित उद्देश्य सन्दर्भित व्यूहरचना का चुनाव कर लेना चाहिये। किसी भी व्यक्ति या समाज के बहुउद्देश्य विकास के लिये यह आववश्यक हो जाता है कि आवश्यकताओं के अनुसार मूल्यों को विकसित किया जाये जिसका सबसे सशक्त माध्यम शिक्षा है।

एक अर्थपूर्ण मूल्य शिक्षा किसी भी समाज को अध्यात्म, संस्कृति, मानवता, विज्ञान एवं भौतिक क्षेत्र में सर्वोच्च स्थान तक पहुँचाती हैं। इस प्रकार परिणामतः हम यह पाते हैं कि यदि किसी भी समाज को उत्कृष्ट विकास तक पहुँचने के लिये हमें मूल्यों के सन्दर्भ में अपने विचार को अत्यधिक रूचि के साथ प्रयोग करना होगा।

मूल्य वह सिद्धान्त है जो किसी सभ्य संस्कृति वाले समाज की आधार नीवं डालते हैं। हमारे जीवन को आनन्दमय, सुखदायी बनाने में मूल्य का महत्व अतुलनीय

हैं। मूल्य की अवधारणा से तात्पर्य सिद्धान्त, आदर्श, स्तर, नैतिकता से है। मूल्य का अपना महत्व इसके अन्दर ही छिपा होता है तथा इस महत्व को मनुष्य अपने विकास हेतु प्रयोग करता है। भारतीय सभ्यता सबसे पुरानी संस्कृति की सभ्यता मानी जाती है। जो कि मूल्यों के महत्व पर सबसे अधिक जोर डालती है। हमारे मूल्यों का ह्रास दिन-प्रतिदिन हमारे कार्यों में साफ दिखाई पड़ता है। इसलिए यह एक ज्वलंत एवं चिंता का विषय बन गया है कि हमें इस पर गम्भीर विचार करते हुये मूल्यों का विकास केवल बच्चों तक ही सीमित नहीं रखना चाहिय, बल्कि वयस्कों को भी मूल्य विकसित करने हेतु प्रेरित करना चाहिये क्योंकि वयस्कही समाज का आधार व निर्धारित कारक होते हैं। परिवार एवं स्कूल के अतिरिक्त मूल्यों के विकास के संदर्भ में हमें व्यक्तिगत प्रयास भी करने चाहिये जोकि समय की आवश्यकता बन गयी है। इस प्रकार से हमें मूल्यों के विकास में एक रणनीति बनाकर चलना होगा जो कि हमारे समाज को दिशा, दशा एवं आदर्शता प्रदान कर सके।

मूल्य किसी विशेष व्यवहार की तत्परता तथा उसकी गति को निर्धारित करते हैं। मानव समय-समय पर किसी एक प्रक्रिया के संदर्भ में उत्साहित एवं उत्प्रेरित होते रहते हैं। जो कि मूल्य के द्वारा ही होता है।

सम्पूर्ण सृष्टि में मानव को सर्वोच्च स्थान प्राप्त होता है। मानव ईश्वर की सभी रचनाओं में एक विशेष स्थान रखता है। यदि हम इन सभी रचनाओं का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं तो निश्चित ही मनुष्य सभी दृष्टिकोण से भिन्न स्थान रखता है। इस आधार पर यदि हम कहें कि मनुष्य सृष्टि सर्वोच्च हो तो कोई अतिश्योक्ति नहीं व्यक्ति के अन्तर्गत इतनी विशेषतायें एवं गुण विद्यमान होते हैं कि उनका आंकलन वह खुद नहीं कर पाता।

प्रत्येक व्यक्ति अपनी जन्मजात एवं तत्पश्चात् विकसित हुई विशेषताओं एवं क्षमताओं के आधार पर अलग-अलग स्थान रखते हैं। यहां तक मनुष्य अपनी ही विशेषताओं के अन्तर्गत अलग-अलग होता है। ये सभी उसके अन्तर्गत मूल्यों, रीति-रिवाजों, संस्कारों, कार्यशैली के रूप में पायी जाती है। दर्शित रचनाओं का अध्ययन करने पर यह बात स्पष्ट रूप से आती है कि मनुष्य अलग है क्योंकि अन्य रचनाओं में मनुष्य के अनुसार रीति-रिवाज आदि नहीं पाये जाते है वे स्वयं का पोषण करते हैं स्वयं की रक्षा करते हैं तथा स्वयं के लिये जीते हैं। परन्तु मनुष्य में इन सबके अतिरिक्त आदर्श, रीति-रिवाजों, संस्कृति अलग-अलग स्थान व अतुलनीय महत्व रखते हैं, जोकि मूल्य के सारगर्भित हैं। इसीलिये मनुष्य के जीवन में मूल्यों का विशेष स्थान होता है।

मूल्य मानव जीवन में सर्वोच्च्च स्थान रखते हैं जिसके अभाव में मनुष्य लाचार, निकृष्ठ तथा अवगुणी हो जाता है। प्रत्येक व्यक्ति में मूल्य विद्यमान होता है। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति के मूल्य भी भिन्न होते हैं जो कि मनुष्य के संदर्भ में व्यक्तित्व विभिन्नता प्रदान करते हैं। परन्तु आज के समय में ये सब मूल्य विलुप्त होते जा रहे हैं। समाज मूल्यहीन दिखाई पड़ता है। यदि हम आज से 50 वर्ष पूर्व के समाज को देखें तो वास्तव में हम अपने आप को मूल्यों के संदर्भ में खाली पाते हैं। इनके अनेक कारण हैं आज मूल्य के अभाव में मनुष्य एक बेजान मशीन बनकर रह गया है। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रखते हुये आज हमें उन सभी मूल्यों को पुर्नजीवित करने की बहुत आवश्यकता महसूस होती है। यदि हम इसी प्रकार से अपने मूल्यों का पतन होते देखते रहें तो वह दिन दूर नहीं जब हम अपने को भारतीय ही नहीं वरन् मनुष्य जाति में होने पर अपमानित महसूस करेंगे।

मानव में तर्क की शुरूआत से ही जब मनुष्य ने प्रकृति के क्रिया विज्ञान से सीखना शुरू किया तब मूल्य, ज्ञान एवं चेतना में सामंजस्य की जरूरत पड़ी। शिक्षा का अर्थ अक्षर ज्ञान, सूचना एकत्र करना मात्र कभी नहीं रहा। अपितु ज्ञान के साथी ज्ञानी की पहचान करके विचार एवं आदर्श को वास्तविक व्यवहार में बदलना तथा मूल्यों की स्वीकृति और सर्जन से है।

आज शिक्षा मूल्यविहीन व संस्कार रहित हो गयी है, जब तक अध्यात्म शिक्षा का आधार नहीं बनता तब तक विज्ञान प्रक्रिया आरम्भ होने की सम्भावना नहीं हे। चाहे शिक्षा के नाम पर कितना ही परिवर्तन क्यों न हो जाये उच्च और सूक्ष्म ज्ञान अर्जित करने के लिये इस देश की यात्रा पर आये अनेक विद्वानों फाह्यान तथा ह्वेनसांग ने प्रकृति और चिंतन के क्षेत्र में निरन्तर प्रयोगों से उत्पन्न भारतीय बौद्धिक एवं वैज्ञानिक मूल्य का विस्तृत विश्लेषण किया।

प्राचीन काल से आधुनिक काल तक इस देश में शिक्षा के साधन के रूप में अनेकों साहित्यों का प्रयोग रहा और परस्पर विरोधी स्रोतों से विचारों एवं मूल्यों को ग्रहण किया गया इस काल के अन्तर्गत कई सन्तों ने अध्यात्मिकता से प्रेरित होकर जनता के साथ सीधा सम्पर्क किया और एक नई शैक्षणिक जागृति पैदा की इस जागृति ने मूल्य बोध के क्षेत्र में नव चिन्तन का द्वार खोल दिया। तक्षशिला, नालन्दा, मिथिला, वल्लभी एवं विक्रमशिला आदि संस्थाओं ने समय-समय पर भौतिक एवं अध्यात्मिक दृष्टिकोणों से मूल्य विकास के लिये संगठित तंत्र का काम किया।

आज वह समय आ गया है जबकि हमें क्षीण होते हुये मानव मूल्यों को बनाये रखने के लिये गम्भीरता पूर्वक विचार करना होगा और ऐसे तरीके अपनाने होंगे जिससे भारतीय शिक्षा के प्राचीन एवं आधुनिक मूल्यों का सामंजस्य प्राप्त किया जा सके। युवा शक्ति को ईमानदारी और सही ढंग से सामाजिक एवं राष्ट्रीय एकता के लिये

लगाया जा सके तथा उन महापुरूषों के जीवन तथा शिक्षाओं के अनुसार वर्तमान शिक्षा को नैतिकता और आध्यात्मिकता प्रधान बनाया जा सके जो आदर्श रही है।

यह आवश्यक नहीं है कि हम किसी विशेष प्रकार की आध्यात्मिक परम्परा का ही अनुसरण करें बल्कि व्यक्तिगत मूल्यांकन का प्रयोग करें जो कि समय की आवश्यकता बनकर हमारे सामने उभरी है आज इस बात की आवश्यकता है कि हम अपनी परम्परावादी मूल्यपरक शिक्षा पद्धति को बनाये रखें। शिक्षा को एक सशक्त माध्यम बनाने हेतु पाठ्यक्रम में पुनः समायोजन करने की आवश्यकता मुखरित हुई है।

आज मानव पश्चिमी उपभोक्ता संस्कृति का पोषक सा हो गया है। वह कर्तव्य प्रधान आस्था भाव वाली भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधि नहीं बनना चाहता। सभी स्टेट्स सिम्बल के चक्रव्यूह में फंसे प्रतीत होते हैं। दूरदर्शन, वीडियो लगातार महाभारत के चक्रव्यूह में जयद्रथ की भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं दूसरों के प्रति तो क्या अपने प्रति भी कर्तव्यनिष्ठ नहीं रह पा रहे हैं।

मनुष्य को वस्तुगत मूल्यों में विश्वास नहीं रह गया है व आध्यात्मिकता निरर्थक हो चुकी है। कभी समय था जब हमारी शिक्षा जीवन का आधार, आध्यात्मिकता होता था परन्तु आज के समय में इस ओर जाना तो दूर सोचना भी मनुष्य अपना समय व्यर्थ समझता है। इस दशा से मुक्ति पाने के लिये मूल्यों व आध्यात्मिकता की शिक्षा आवश्यक प्रतीत हाती है। देश के सभी व्यवसायों में संलग्न लोग आज कल यह महसूस करने लगे हैं कि सार्वजनिक तथा व्यक्तिगत जीवन में मानदण्ड शिथिल हो गये हैं। घर, बाजार, कार्यालय, मित्र-मंडली, सम्मेलन, शिक्षा संस्थान, संसद, विधान सभा, विधान परिषद्, राज्यसभा, नगर पालिका, नगर महापालिका पंचायत, पूजाघर, चर्च आदि में मूल्य उल्लंघन व मूल्य गिरावट की कोई न कोई बात अवश्य दिखाई पड़ती है। वर्तमान समाज मूल्यविहीन हो चला है हम अपने सामने मूल्यों का उल्लंघन होते

देखते रहते हैं। प्रत्येक परिवार, समुदाय, राज्य व देश अपने प्रत्येक सदस्य से अनिवार्य अपेक्षायें रखता है। जैसे वे चरित्रवान हो अपना कर्तव्य जानते हों, समझते हों व उसका निर्वाह करते हों जो जन कल्याण व राष्ट्र, राज्य की प्रगति के लिये आवश्यक हैं। इस बात की आवश्यकता महसूस की जा रही है कि हम सभी इस दिशा में अपने कर्तव्य का भली-भांति निर्वाह करें।

मूल्यों का औचित्य : दर्शन की दृष्टि से मूल्य मीमांसा एक विचारणीय क्षेत्र रहा है। मूल्य को परिभाषित करने हेतु समय-समय पर अनेक विचार परस्पर विरोधी रहे हैं। जिस प्रकार से मूल्य के विभिन्न सिद्धान्त एवं विभिन्न प्रकार हैं उसी प्रकार से मूल्य को विभिन्न प्रकार से परिभाषित भी किया गया है। वस्तुतः यह अनुभव किया गया है कि एक ही मूल्य का अर्थ परिस्थिति के अनुसार बदल जाता है। प्रकृतिवाद, प्रत्ययवाद, व्यवहारवाद एवं वास्तववाद आदि दर्शन ने मूल्य को विभिन्न दृष्टिकोण से परिभाषित किया है।

वे सिद्धान्त जिनकी मानव प्राणी इच्छा रखते हैं तथा आधारभूत रूप से जिनका आनन्द लेते हैं अस्तित्व में समाये हुए हैं। वे वास्तविक अस्तित्ववान हों, मानव जीवन के मूल्य वहीं हैं, जो कि वृहतरूप से हैं क्योंकि उन पर अधिकार करने के लिए तथा उनका आनन्द लेने के लिए व्यक्तिगत व्यक्ति हैं। मूल्य वे सर्वव्यापी नैतिक नियम एवं मान्यताऐं हैं जो मानव सम्बन्धों में आवश्यक हो जाती हैं। क्योंकि व्यष्टिगत मनुष्य व्यक्ति हैं। मूल्य एक ऐसा शुभ संकल्प है जो नैतिक नियमों की आवश्यकता तथा निरूपाधिक नियोग के तथ्य का अनुगमन करता है।

मानव जीवन मूल्यों से भरा है। हमारे ऋषियों व समाज के श्रेष्ठतम व्यक्तियों के विचारों से मानवीय मूल्यों का आभास मिलता है। मनुष्य के विवेक पर भौतिक पाश्चात्य संस्कृति के आक्रमण के कारण जीवन के पुरातन मूल्यो में हमारी आस्था या

तो समाप्त हो गयी है या होती जा रही है। आधुनिक बनने की होड़ में शामिल भारतवासी पश्चिमी मूल्यों से प्रभावित होते जा रहे हैं। आज के समय में आधुनिक व पुरातन मूल्यों में समन्वय लाने की चेष्टा करने की बहुत आवश्यकता है। वनस्थली विद्यापीठ जैसी संस्थायें इस दिशा में उल्लेखनीय योगदान कर रही हैं।

शिक्षा का लक्ष्य किसी विशेष को प्रमाणिक अस्तित्व जीने के योग्य बनाना होना चाहिये। हमें यह शंका नहीं करनी चाहिये कि रोजगार परक व्यवस्था में मूल्य कोई महत्व नहीं रखते या फिर मूल्यवान होना हमें आधुनिक ढंग से जीने व विकसित होने में बाधक है।

हम चाहते हैं कि रोजगार के नये नये आयाम खोजे तथा शुद्ध प्रतियोगिता में संलग्न रहें। अतः औद्योगिक क्षेत्र में शब्द प्रतिस्पर्धा के लिये मूल्यपरक रोजागारोन्मुख शिक्षा अति आवश्यक है। वर्तमान राजनैतिक आपाधापी के युग में नेतागण मूल्यों को तिलाजंलि देने में संकोच नहीं करते। इन नेताओं की मूल्य आधारित राजनीति सम्बन्धी संकल्पना अस्पष्ट प्रतीत होती है।

इस बात पर बल देने की आवश्यकता नहीं है कि अशिष्ट ग्रामीणों के लिये आधारित उपागम का आशय वह न होकर जो संस्कृति शहरी लोगों के लिये होता है। व्यक्ति से व्यक्ति तथा राज्य से राज्य मूल्य बदलते हैं। यदि यह कथन अंशतः सत्य भी हो तो केन्द्र व राज्य सरकारों द्वारा समय समर्थित मूल्यों, सरकारी व्यवस्था में निहित मूल्यों व ग्रामीणों के मूल्यों, विद्यार्थियों व नेताओं के मूल्यों आदि में परस्पर विरोध की स्थिति आ सकती है। राजनीति के क्षेत्र में यह स्थितियाँ प्रायः दिखायी दिया करती हैं। परन्तु इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि स्वस्थ्य मूल्य आधारित राजनीति समय की मांग है। इस प्रकार इन सब समस्याओं को देखते हुये आज मूल्य का औचित्य बढ़ जाता है।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जिस प्रकार से समाज में सभी व्यक्तियों का अपना एक स्थान है उसी प्रकार से अध्यापक भी समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। जिसे हम किसी भी स्थिति में नकार नहीं सकते। समाज में व्याप्त हर स्थिति तथा समाज में होने वाली हर घटना का अध्यापक पर सीधा प्रभाव पड़ता है। जिस प्रकार से समाज में आज मूल्यों की महत्ता कम होती जा रही है, उसी प्रकार से अध्यापकों के जीवन में भी मूल्यों की स्थिति उसी अनुपात में कम होती प्रतीत हो रही है। अध्यापक जिन छात्रों का निर्माण करते हैं वे छात्र भी मूल्यों को उसी प्रकार महत्व देते हैं। जिस प्रकार छात्र अपने अध्यापकों में देखता है, इसलिये अध्यापक के लिये मूल्य का औचित्य बहुत अत्यधिक बढ़ जाता है क्योंकि उनके जीवन में यदि मूल्य का कोई स्थान नहीं होगा तो वे उसी प्रकार की शिक्षा भी छात्रों को प्रदान करेंगे तथा एक मशीन के समान जीवन व्यतीत करने वाले होंगे उनमें दया, धर्म, तथा नैतिकता जैसी चीजों का पूर्णरूप से अभाव मिलेगा। अतः अध्यापक ही वह कड़ी है जो कि समाज को जैसा चाहे वैसा बना देता है या बना सकता है। इसलिये आज के मूल्यविहीन व आपराधिक प्रवृत्ति को बढ़ते हुये देखकर आज अध्यापकों में अधिक मूल्य का होना अति आवश्यक हो गया है। इन्हीं मूल्यों के आधार पर अध्यापक प्रत्येक भावी नागरिक को उचित मार्ग दिखाकर कुसंगति, अशिष्टाचार, व अन्य बुराइयों से व्याप्त समाज को सही दिशा प्रदान कर सकता है। इसलिये कहा जा सकता है कि आज के इस असमन्वय के बदलते समय में यदि भौतिकता तथा मूल्यों के बीच यदि समन्वय लाया जा सकता है तो वह केवल शिक्षा ही है तथा इस कारण से शिक्षक का मूल्यवान होना अति आवश्यक हो जाता है इसीलिये मूल्यों का औचित्य आज के संदर्भ में विशेष रूप से अध्यापकों के लिये और भी बढ़ जाता है।

मूल्यवान अध्यापक के अभाव में समाज को मूल्यवान बनाना या देखना एक कल्पना मात्र है, इसलिये आज मूल्य अध्यापक के सन्दर्भ में भी उतना ही महत्वपूर्ण है

जितना कि विद्यार्थियों एवं समाज के अन्य व्यक्तियों के लिये। इसलिये इस समस्या को महसूस करते हुए अन्वेषिका द्वारा अध्यापकों के मूल्यों के अध्ययन को एक समस्या के रूप में चुना गया है।

1.2 समस्या का कथन एवं परिभाषा :

प्रस्तुत शोध में अन्वेषिका ने सामाजिक, आर्थिक परिवर्तन और शैक्षिक विकास के सन्दर्भ में नैतिक मूल्य के महत्व को समझते हुए उस पर शोध की आवश्यकता को अनुभव किया तथा उनके स्तर को विकसित करने हेतु शोध की आवश्यकता को अनुभव करते हुए शोध समस्या को निम्न प्रकार से आंकलित किया –

"प्राथमिक स्तर पर विभिन्न प्रकार के विद्यालयों के अध्यापकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन" (चित्रकूट–धाम मण्डल के विशेष संदर्भ में)

प्रस्तुत शोध में समस्या को कथन के अन्तर्गत परिवर्तित करते हुए कुछ उद्देश्यों पर आधारित किया गया है समस्या का आधार व उद्देश्य विभिन्न प्रकार के प्राथमिक विद्यालयों के आध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

मूल्य की परिभाषा : फ्लिक ने मूल्य को निम्न प्रकार परिभाषित किया है "हम वास्तव में जिसे सम्मान देते हैं चाहते हैं या महत्वपूर्ण मानते हैं वही मूल्य है वह मानवीय संरचना की अभिप्रेरणा विधा हैं। वे व्यवहार के लिए अभिप्रेरणा स्रोत हैं। ये वे मानव रूपी मापदण्ड हैं जिनसे मानव प्रत्यक्षीकृत क्रिया कलापों में से चयन करते समय प्रभावित होते हैं।

मूल्य एक मानक हैं जिसके आधार पर मनुष्य अपने सामने उपस्थित क्रिया कलापों में से चयन करने में प्रभावित होता है। "मूल्य एक सामान्य और अमूर्त गुण है

जो किसी वस्तु में निहित होता है और उसके महत्व एवं गुरुत्व की ओर संकेत करता है इस प्रकार से यह स्पष्ट है कि मूल्य एक अमूर्त सम्प्रत्य है जिसका सीधा सम्बन्ध मनुष्य के भावात्मक पक्ष से होता है। जो उसके व्यवहार को नियन्त्रित एवं निर्देशित करता है। दर्शन शास्त्र में मूल्य को जीवन के प्रति दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है।

आलपोर्ट के अनुसार, "मूल्य एक मानव विश्वास है जिसके आधार पर मनुष्य वरीयता प्राप्त करते हुये कार्य करता है।"

"जीवन मूल्य ओस की बून्दों के सादृश्य नहीं है जो मौसम के अनुसार दिखाई दे इनकी जड़ें प्रत्येक प्राणी में बहुत गहरी होती हैं तथा इनका वास्तविकता से घनिष्ठ सम्बन्ध होता है।"

"मूल्य आचार सौन्दर्य या कुशलता के वे मापदण्ड हैं जिनका लोग समर्थन करते हैं जिनके साथ वो जीते हैं तथा जिनको वे कायम रखते हैं।"

"मूल्यों को सामाजिक दृष्टि से स्वीकार्य उन इच्छाओं तथा लक्ष्यों के रूप में परिभाषित किया है जिन्हें अनुबन्धन या सामाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा अभियन्त्रीकृत किया जाता है तथा जो आत्मनिष्ठ प्राथमिकताओं मानकों तथा आकांक्षाओं का रूप ग्रहण कर लेती हैं।"

1.3 मूल्य की प्रकृति –

जीवन के अन्य प्रत्ययों के अलावा मूल्य का विस्तृत क्षेत्र है जिसके अन्तर्गत हम मूल्य को विभिन्न दृष्टिकोण से देखते हैं। जो कि व्यक्ति को आन्तरिक और बाह्य रूप से महत्वपूर्ण बनाता है। दार्शनिक दृष्टिकोण से मूल्य न तो कोई वस्तु है न ही कोई व्यष्टि परन्तु वह जो व्यक्ति विशेष के लिये सर्वोपरि है मूल्य है। दर्शन के दृष्टिकोण से मूल्य

वह विश्वास एवं विचार है जिनका सीधा सम्बन्ध व्यक्ति से होता है इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मूल्य वह निर्णय है जो व्यक्ति की मनोदशा को दर्शाति हैं।

"वह मानदण्ड जो व्यक्ति की प्रकृति एवं चरित्र का व्याख्यान करते हैं उसके मूल्य कहलाते हैं। मूल्य भावात्मक निर्णय होते हैं, ये निर्णय भाव एवं वृद्धि से उत्पन्न होते हैं परन्तु वे भावात्मक होते है ज्ञानात्मक नहीं। जीवन के उद्देश्यों के संदर्भ में कार्य करते हुये कुछ धारणाओं का अनुसरण करना होता है जो मूल्य कहलाते हैं।

मूल्यों का प्रत्यय एवं प्रकृति विकास के स्तर के साथ-साथ भी बदल जाता है मूल्य अप्रत्यक्ष एवं प्रत्यक्ष रूप से पसन्द एवं इच्छाओं पर निर्भर करते हैं। मूल्यों की प्रकृति वर्णनात्मक भी होती है जिसका वर्णन अर्थशास्त्र में भी किया गया है। मूल्य वह है जो व्यावहारिक रूप से उपयोगिता रखते हैं सामान्यतः वह कथन या क्रिया जो अन्ततः मनुष्य की इच्छा की संतुष्टि करती है। मूल्य संचय होती है।

नीति शास्त्र मूल्य की प्रकृति में उसके गुणात्मक विश्लेषण को दर्शाता है। इसके अनुसार मूल्य वह शैली है जो मनुष्य के जीवन के उद्देश्य को समझने एवं प्राप्त करने में सहायक होती है। वह व्यक्ति के स्व-विकास, स्व-प्राप्ति एवं मूल्यांकन में सहायता करते हैं। इस प्रकार से हम मूल्यों को उसकी प्रकृति एवं उसके स्वभाव के आधार पर भी विभिन्न दृष्टिकोण से परिभाषित कर सकते हैं। इसी प्रकार प्राथमिक शैक्षिक स्तर पर जो कि प्रस्तुत शोध की समस्या का स्तर भी है।

यदि हम शिक्षक तथा शिक्षा के सन्दर्भ में बात करते हैं तो शिक्षक को इस प्रकार से अभिव्यक्त किया जा सकता है जो छात्रों के ज्ञानोपार्जन में सहायक होता है। शिक्षक का कार्य शिक्षा देना है तथा शिक्षण गतिविधियों का संयोजन करना है। कुशल शिक्षक वह है जो शिक्षा प्रदान करने में व्यवहार कुशल हो, उसका कर्त्तव्य केवल ज्ञान प्रदान करना ही नहीं बल्कि उस ज्ञान को प्रभावी बनाने हेतु परिस्थितियों का निर्माण

करना भी होता है। वह समय-समय पर अनेक कार्यों को वहन करता है। सबसे महत्वपूर्ण कार्य छात्रों के अन्दर उपस्थित कौशल को पहचानना तथा उसको पूर्ण रूप से विकसित करना होता है।

मूल्यों के अनुभवों एवं मूल्यों की सिद्धि में अनेक शर्ते पूर्व कल्पित होती हैं। जैसे अर्थो को संज्ञापन हेतु व्यवस्थित भाषा का होना आवश्यकता माना जाता है। उसी प्रकार से मूल्यों के लिए उन गुणों एवं कारकों का होना आवश्यक है जो कि मूल्य की प्रकृति या विशेषता को इंगित करते हैं मनुष्य के विभिन्न व्यवहारों को निर्धारित करते हैं। व्यवहार का मूल्य विहीन होना कल्पना मात्र है इस दृष्टि से मूल्य संस्कार परम्परा मात्र है। सामाजिक अनुभूति पर आधारित व आश्रित सामाजिक मान्यता प्राप्त है।

मूल्य इच्छा, रूचि, पसन्द, अभिरूचि, मेहनत, संकल्प, भक्ति, कार्य तथा संतोष जैसे अनेक कारणों पर निर्भर करता है। निजी जीवन में ये सब कारक हैं। जिनक परिणाम स्वरूप ही मूल्य विकसित होते हैं तथा अनुभव से अत्याधिक जुड़े रहते हैं। इस अनुभव के संदर्भ में अन्तर्गत जिसमें तीन शर्त भाषा, व्यक्तियों में आत्मत्व, और आत्मत्व का लक्ष्य व सामाजिक प्रतियोगी है। मूल्य उत्पन्न हो सकते हैं। इन बातों से युक्त अनुभव ही मूल्य को आधार प्रदान करते हैं।

मूल्य की प्रकृति एवं सामान्य एवं मूर्त गुण हैं। जो किसी चीज में निहित होती है और उसके महत्व एवं गुरुत्व की ओर संकेत करती है। जो भी वस्तु हमारे उद्देश्यों में सहायक होती है। उसकी उपादेयता उतनी ही अधिक होती है।

मूल्य की प्रकृति को साध्य के रूप में भी देखा जा सकता है। विभिन्न व्यवहारिक क्षेत्रों के साध्य ही मूल्य कहलाते हैं। जैसे भोजन, वस्तु, स्वास्थ्य आदि का मूल्य इसीलिये हैं कि ये हमारे जीवन के सहायक एवं बर्धक साधना हैं। यही साधन मूल्य कहलाते हैं।।

मूल्य गहरे, ऊँचे, जटिल विषय हैं और ऐसा ही उसका ज्ञान है मूल्य हमारे, संवेगों, अनुभवों, इच्छा आदि से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित होते हैं।

मूल्य की प्रकृति मूल्यात्मक भी होती है जिसके अन्तर्गत मूल्य किसी वस्तु या परिस्थिति की मूल अवधारणाओं से अवगत कराते हैं। मूल्य ही मनुष्य या व्यक्तित्व में संवेदना का सृजन करते हैं। वे मूल्य ही हैं जो मनुष्य की मनोदशा को परिवर्तित करने में सक्षम हैं। मूल्य व्यक्ति के अन्दर मूल्यात्मक दृष्टिकोण पैदा करते हैं। मूल्य व्यक्ति को आत्म मूल्यांकन की प्रेरणा देते हैं। मनुष्य को कार्य सन्दर्भित सन्तुष्टि भी मूल्य द्वारा ही प्राप्त होती है।

मूल्य व्यक्तिगत पद्धति को व्यवस्थापित करते हैं ये व्यक्तिगत निर्णयों को कार्यरूप में परिवर्तित करने की क्षमता प्रदान करते हैं। मूल्य व्यक्ति के कार्यों को निर्देशित करते हैं। मूल्य एक विश्वास का संदर्भ प्रदान करते हैं जिसके अन्तर्गत विभिन्न व्यवहार ज्ञानात्मक क्रियात्मक एवं भावात्मक एक दूसरे से निकटता रखते हैं।

मूल्य व्यक्ति को इन्द्रियों की शक्ति प्रदान करते हैं जिसके आधार पर मनुष्य अपने व्यवहार को वांछित दिशा में परिवर्तित कर लेता है। मूल्य व्यक्ति के व्यक्तित्व में विभिन्न गुणों का पोष्षण करते हैं तथा किसी भी संदर्भ में आने वाले विरोधाभासों को कम करते हैं। व्यक्तित्व का निर्माण ज्ञान का पोषण, संस्कृति की रक्षा एवं चरित्र का निर्माण करते हैं। मूल्य उन सभी गुणों को आधार प्रदान करते हैं जिनको हम एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी के अन्तर्गत पहुँचाना चाहते हैं। मूल्यों के अन्तर्गत विकास के उद्देश्यों, तरीकों एवं परिणाम को बदलने की क्षमता होती है।

मूल्य की प्रकृति से परिचय कराते हुए आशय यह है कि एक वस्तु हमारे लिये मूल्यवान न होते हुये भी मूल्यवान है। अनेक लोगों के लिये घर एक तथ्य है परन्तु घर जैसा कोई स्थान नहीं है। मूल्य एक वास्तविक अनुभव है जो अपने अनुभव में आदिपत्य

पाते हैं। मूल्य प्रकृति में वह किसी ऐसे सिद्धान्त का पक्ष नहीं लेता जो कि अमूर्त मूल्यों को वास्तविक बना दे। मूल्य की प्रकृति उन आत्माओं में तथा उन आत्माओं हेतु वास्तविक है जिनमें उनकी संवेदना होती है। सत्य, शिवं एवं सुन्दरम् तथा इसी कोटि की कोई वस्तुयें या बर्तिया नहीं होती। मूर्त सत्य एवं सुन्दरता की संवेदना देने वाली वस्तुयें संतोष होने वाली सामग्री अपने स्वयं के हेतु होती है। व्यष्टित्व मूल्य का केन्द्र तथा माप दोनों हैं।

मूल्यों के विषय में यह भी विचारना आवश्यक हो जाता है कि मूल्यों का मूल अस्तित्व में है साथ ही यह भी विश्वास करना होगा कि मूल्यों की प्रकृति एवं व्यष्टितव में घनिष्ट तादाम्य होता है। जब तक हमें उनका प्रयक्षण न हो तब तक वस्तुयें हमारे लिये व्यष्टियों के रूप में अस्तित्वान नहीं होती हैं मूल्य केवल व्यष्टिगत व्यक्तियों के लिये ही अस्तित्व वान हैं जबकि वह इन समायोजनों को कार्यान्वित करता हैं जो उसके लिये मूल्य की सिद्धि करते हैं। जैसे सौन्दर्यात्मिक मूल्यों की प्रकृति में कलाकृति का बोध, गुण विवचेन एवं एक विभिन्नकृत संकल्प के रूप में होता है।

मूल्यों की प्रकृति का अस्तित्व व्यक्तिगत सामाजिक क्रियाओं का उनके सम्बन्ध के संदर्भ में होता है। उसका अस्तित्व उसी सीमा तक होता है जिस सीमा तक घटनाओं के व्यक्तिगत सामाजिक प्रवाह में कार्य करते या प्रभावपूर्ण क्रियाशीलता के साथ होते हैं।

इसलिये मूल्यों की प्रकृति अनुभव या मूल्यों की सिद्धि में अनेक शर्तो को पूर्व कल्पित माना जाता है। इस अनुभव के सन्दर्भ के अन्तर्गत तीन शर्ते–भाषा, आत्मत्व और आत्मत्व का लक्ष्य है मूल्य अत्पन्न हो सकते हैं। इन शर्तो से युक्त अनुभव ही मूल्यों की प्रकृति के अस्तित्व को आधार प्रदान करते हैं। मूल्य अति संवेदनशील होते हैं। जो

व्यक्तियों की अभिवृत्ति के अनुसार संवेदनशीलता उत्पन्न करते हैं। मूल्य आकर्षण की प्रवृत्ति भी रखते हैं जो व्यक्ति को आकर्षक विशेषता युक्त बनाते हैं।

मनुष्य किसी वस्तु, क्रिया या विचार को अपनाने से पूर्व यह निर्णय करता है कि उसे अपनायें या त्याग दें। मूल्य जब सूक्ष्म प्रत्यय के रूप में पाया जाता है तो वह आदर्श कहलाता है। मूल्य संस्कृति समन्वयात्मक है सहिष्णुता इसकी प्रथम विशेषता होती है। मूल्य बुद्धि ग्राह्य अर्थ है न कि इन्द्रिय ग्राह्य पदार्थ। मूल्य निरपेक्ष, नित्य स्वरूपसत विषय है। मूल्य भौतिक स्तर पर वस्तु का द्योतक वस्तु की नियतरूपता है। इस प्रकार मूल्य–व्यावहारिक मूल्य, आदर्श मूल्य, परमार्थिक मूल्य में बदल कर मानव जीवन में परम सहायक होता है। सामाजिक हित या संग्रह मूल्य का मानदण्ड है।

मूल्य मानवता के समग्र क्षेत्र को इंगित करते हैं। चाहे वो भावना, संवेग, इच्छा या कर्म किसी भी क्षेत्र से सम्बन्धित क्यों न हो इस प्रकार मूल्य व्यक्ति के कार्यों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार से निर्धारित एवं अग्रसित करते रहते हैं।

मूल्य किसी व्यक्ति के अन्तर्गत शामिल उसके दृष्टिकोण एवं गुणों का मूल्यात्मक निर्धारक होता है। मूल्य ही व्यक्ति को परिस्थितियों के अन्तर्गत निर्णय लेने के लिए क्षमता पैदा करते हैं। मूल्य की प्रकृति विभिन्न रूपों एवं स्वरूपों में अलग–अलग होती है जैसे – नैतिकता, सौन्दर्यात्मकता, सामाजिकता आदि क्योंकि मूल्य के कार्य क्षेत्र के साथ ही इसका स्वरूप एवं प्रकृति बदल जाती है। मूल्यों की प्रकृति उसके चुनाव, उत्तरदायित्व, स्थायित्व, वांछनीय व्यवस्थापन आदि की आवश्यकता पर महत्व देती है। मूल्य व्यक्ति के अन्तर्गत आचरण, सभ्यता, संस्कृति, चरित्र, शीतलता, दृष्टिकोण आदि का संवहन करते हैं।

इस प्रकार मूल्य की प्रकृति में केन्द्रीयकरण, निर्धारण, संवाहन आदि का समावेश पाया जाता है जिनके आधार पर मूल्य परिस्थिति के अनुसार अपना कार्य

करते हैं। आधुनिक युग में मूल्यों को मानवीय राम कहानी के स्वतंत्र, सृजनात्मक, विकासोन्मुख उद्योग की उपलब्धि के रूप में सोचने समझने की एक नयी प्रवृत्ति मिलती है। जिसके अनुसार ये नित्यपाद से उतर कर जैव विकास अथवा सामाजिक विकास के अंग बन जाते हैं।

उपरोक्त विवरण से यह सर्वज्ञात है कि मूल्य सर्वव्यापी है और सन्तुष्टि के आधार पर निर्भर करत है। वह जो हमें संतुष्ट करता है मूल्य कहलाता है। परन्तु प्रश्न उठता है कि क्या और कैसे सन्तुष्ट करता है। इसका उत्तर कार्य–परिस्थितियों के अन्तर्गत ही निश्चित होता है। यदि मूल्य की प्रकृति को देखा जाय तो यह इस बात पर अधिक निर्भर करता है कि आवश्यकता, स्रोत, पसन्द व रुचि का स्तर क्या है। कुछ दार्शनिक मूल्य की प्रकृति को वस्तुनिष्ठ एवं कुछ वैकल्पिक मानते है वस्तुनिष्ठ दार्शनिक मानते है कि मूल्य वस्तु के अन्तर्गत निहित नहीं है परन्तु वैकल्पिक के अन्तर्गत मूल्य को छिपी अवस्था में वस्तु में पाया जाता है।

मूल्य की प्रकृति में तीन तत्व पाये जाते है – वस्तुनिष्ठ, वैकल्पिक एवं अनुपातिक अंश। परन्तु आध्यात्मिक एवं सांसारिक दार्शनिक मूल्य की प्रवृत्ति को अलग तरह से देखते हैं। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से मूल्य अध्यात्म है जबकि सांसारिक दार्शनिक इसे सुख की प्राप्ति का अनुभव मानते हैं।

कुछ दार्शनिकों का मानना है कि मूल्य की प्रकृति गत्यात्मक होती है। प्रत्येक मूल्य का मापन संभव है इसलिए मूल्य की प्रकृति गणनात्मक भी होती है। मूल्य की प्रकृति के संप्रत्य के सम्बन्ध में चेतन व अचेतन अवस्था भी महत्वपूर्ण है जो कि परिस्थितिवश प्रकृति को बदल देती है। मूल्य में गुणात्मकता एवं विवरणात्मकता भी पायी जाती है।

1.4 मूल्यों के प्रकार–

अरस्तु के दर्शन में मूल्य हेतु मानव मूल्य और नैतिक मूल्य में विवेक मिलता है। हीगल, मार्क्स, काँट, स्पेन्सर नीत्शे एवं वर्गशा ने विकास एवं सर्जन की प्रक्रिया के अन्तर्गत ही मूल्यों के विभिन्न स्वरूपों को परिभाषित किया है। उनके सहज या अन्तस्व नानात्म को इस प्रक्रिया के आन्तरिक क्रम से आंका है। इस प्रकार से मूल्य वह सिद्धान्त है। जो व्यवहारिक, आदर्श, पारमार्थिक तथा नैतिकता से पूर्ण होता है।

प्लेटों ने अपनी मूल्य विषयक धारणा इस प्रकार दी है –

1. मूल्य बुद्धिग्राहा अर्थ है न कि इन्द्रियग्राह पदार्थ।
2. मूल्य और सत् का मौलिक अभेद।
3. मूल्य निरपेक्ष, नित्य स्वरूप सत विषय है।
4. ज्ञान का परायण ज्ञेय और ज्ञेय में श्रेष्ठता का सम्पर्क आकार अथवा प्रमाण।
5. भौतिक एवं सामाजिक स्तर पर वस्तु का द्योतक वस्तु की निरूपता एवं उसके घटकों का परस्पर विरोध।

इस प्रकार से मूल्य को दो भगों में विभाजित किया जा सकता है। एक लौकिक अर्थात् व्यावहारिक दूसरा अलौकिक अर्थात् परमार्थिक इस प्रकार भारतीय दार्शनिक लौकिक एवं अलौकिक लक्ष्य की प्राप्ति को ही मूल्य का आधार स्वीकार करते हैं।

मूल्य का संप्रत्य इच्छाधारी उद्देश्यों, तरीकों एवं अन्त से लिया जाता है। जो मानव जीवन में सम्मिलित होते हैं और जो मनुष्य के जीवन के व्यवहार को परिलक्षित करते हैं। समयानुसार बहुत से संप्रत्य मूल्य के संदर्भ में दिये गये जिनमें से कुछ इस प्रकार से हैं –

मूल्यों का सीधा सम्बन्ध जीवन उद्देश्यों एवं जीवन के तरीकों के सम्बन्ध में रुचि आदि के अन्तर्गत होता है। मूल्य कुछ विशेष सिद्धान्तों का सामान्यीकरण एवं केन्द्रीयकरण है। मूल्य का प्रत्य उन माध्यम एवं क्रियाओं से होता है जो किसी व्यक्ति विशेष या वर्ग की विशेषता के आधार पर चुनाव को प्रभावित करती है। मूल्य का समप्रत्य दो स्वरूप के अन्तर्गत देखा जा सकता है। एक तरफ यह वस्तु के गुण, रुचि एवं मूल्य को दर्शाता है तो दूसरी तरफ यह मूल्यांकन हेतु तुलना एवं निर्णय बोधक होता है।

समय-समय पर आवश्यकता अनुसार मूल्य का वर्गीकरण किया गया, परन्तु मूल्य का वर्गीकरण पूर्णतः आन्तरिक एवं बाह्य आधार पर ही रहा। समय के परिवर्तन के साथ-साथ व्यक्ति के मूल्यों में भी परिवर्तन होता रहता है। परिणामस्वरूप आज के संदर्भ में जीवन की उत्कृष्ठ उपलब्धि हेतु अत्यधिक मूल्यों की आवश्यकता होती हैं जैसे-जैसे मूल्यों की संख्या बढ़ती गयी उसी क्रमानुसार मूल्य के वर्गीकरण की भी आवश्यकता अनुभव की गयी। विभिन्न समय में मूल्यों के विभिन्न वर्गीकरण किये गये जिसमें से मुख्यतः निम्न प्रकार है।

डॅकविष के अनुसार :- 'मूल्यों को मूलतः बारह मूल्यों में वर्गीकृत किया गया जो निम्न प्रकार हैं -

1. मानवता
2. धर्मनिष्ठा
3. स्वनियन्त्रण
4. सभ्यता
5. सौहार्दता
6. अखण्डता

7. मानसिकता
8. समानता
9. खुशी
10. कार्यकुशलता
11. भ्रातत्व
12. सम्मान

उपरोक्त वर्गीकरण के पश्चात् 1973 में रोहच ने मूल्यों को आन्तरिक एवं बाह्य मूल्य के दृष्टिकोण से वर्गीकरण किया –

(अ) आन्तरिक मूल्य

1. महत्त्वाकांक्षा
2. क्षमता
3. सौहार्दता
4. साहस
5. क्षमा
6. सहायता
7. ईमानदारी
8. कल्पना
9. स्वतन्त्रता
10. बौद्धिकता
11. तार्किकता
12. प्रेम
13. कृतज्ञता

14. सहनशीलता

15. उत्तरदायित्वता

16. स्वनियन्त्रण

(ब) बाह्य मूल्य

1. उत्प्रेरकता

2. सौन्दर्य

3. स्वतन्त्रता

4. सुरक्षा

5. समानता

6. शान्ति

7. आरामदायिकता

8. भाईचारा

9. अखण्डता

10. मित्रता

11. बुद्धिमता

12. निर्भरता

उपरोक्त वर्गीकरण के पश्चात् 1985 में वर्मा ने मूल्यों का वर्गीकरण निम्न प्रकार किया –

1. स्वतन्त्रता

2. सच्चाई

3. ईमानदारी

4. कठिन परिश्रम

5. स्वः अनुशासन
6. देश भक्ति
7. निर्णय
8. अहिंसा
9. धर्मनिरपेक्षता
10. चिन्ता
11. सम्मान
12. दृष्टिकोण
13. सौन्दर्यता
14. सहयोग
15. सेवा

1986 ई0 में केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद :– ने विद्यालय शिक्षा के अन्तर्गत मूल्यों की आवश्यकता को अनुभव करते हुये मूल्यों के संदर्भ में एक वर्गीकरण प्रस्तुत किया जो निम्न प्रकार है।

1. स्वसम्मान
2. सेवाशिक्षा
3. स्वतन्त्रता
4. खुलापन
5. अस्थिरता
6. मानवता
7. सहभागिता
8. जागरूकता

9. संवेदनशीलता
10. चिन्ता
11. वैज्ञानिक दृष्टिकोण
12. अखण्डता
13. समय की महत्ता
14. परिपक्वता
15. स्वीकृति
16. आत्मविश्वास
17. क्षमा
18. सामाजिकता
19. नैतिकता
20. कर्मठता
21. विश्वास
22. नैतिक साहस
23. संयम
24. समर्पण
25. दयाभावना
26. देशभक्ति
27. संचारिता
28. पर्यावरण सुरक्षा
29. निर्णय
30. आशावादिता
31. दूरगामिता

32. नेतृत्वता

33. सृजनता

34. साहस

35. क्षमता

36. आध्यात्मिकता

37. निडरता

38. समानता

1951 में अमरीकी शैक्षिक नीति आयोग ने पब्लिक स्कूलों के लिए कुछ निम्नलिखित मूल्य निर्धारित किये थे जो इस प्रकार हैं –

1. मानव व्यक्तित्व के प्रति आदर
2. व्यक्ति की नैतिक जिम्मेदारी
3. संस्थाओं का व्यक्ति के अधीन होना।
4. सामान्य सहमति
5. सत्यनिष्ठा
6. समानता
7. भातृत्व
8. आनन्द की खोज
9. आध्यात्मिक संवर्धन
10. श्रेष्ठता के लिए आदर

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली ने **"शिक्षा में सामाजिक, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों पर दस्तावेज"** में 83 मूल्यों का उल्लेख किया है जो इस प्रकार है –

1. प्रशंसा
2. नागरिकता
3. अस्पृश्यता
4. चिन्ता
5. देखभाल
6. सहयोग
7. सामान्य अच्छाई
8. प्रजातान्त्रिक क्षमता
9. व्यक्ति की महत्ता
10. शारीरिक कार्य का सम्मान
11. साथी भावना
12. अच्छे आचरण
13. राष्ट्रीय समाकलन
14. आज्ञा पालन
15. समय का सदुपयोग
16. ज्ञान की खोज
17. संयम
18. करूणा
19. सामान्य लक्ष्य
20. शिष्टाचार
21. भक्ति
22. स्वास्थ्यकर जीवन
23. अखण्डता

24. सूचिता

25. निष्कपटता

26. आत्म नियन्त्रण

27. साधन सम्पन्नता

28. नियमितता

29. दूसरों का सम्मान

30. वृद्धावस्था का सम्मान

31. सादा जीवन

32. सामाजिक न्याय

33. स्वअनुशासन

34. स्वसहायता

35. स्वसम्मान

36. आत्म विश्वास

37. स्वअध्याय

38. स्वअध्याय

39. आत्म निर्थरता

40. आत्म नियन्त्रण

41. समाज सेवा

42. मानव जाति की एकात्मकता

43. अच्छे बुरे में विभेद का भाव

44. सामाजिक उत्तरदायित्व का भाव

45. स्वच्छता

46. साहस

47. जिज्ञासा
48. धर्म के प्रति सहिष्णुता
49. अनुशासन
50. सहनशीलता
51. समानता
52. मित्रता की भावना
53. वफादारी
54. स्वतंत्रता
55. दूरदर्शिता
56. सज्जनता
57. कृतज्ञता
58. ईमानदारी
59. सहायता
60. मानवता
61. न्याय
62. सत्यता
63. सहिष्णुता
64. सार्वभौमिक सत्य
65. सार्वभौमिक प्रेम
66. राष्ट्रीयता व जन सम्पत्ति का महत्व
67. प्राथमिकता
68. दयालुता
69. जीवों के प्रति दया भावना

70. धर्म परायणता

71. नेतृत्व

72. नेतृत्व एकता

73. राष्ट्रीय एकता

74. राष्ट्रीय चेतना

75. अहिंसा

76. शान्ति

77. देश भक्ति

78. धर्मनिरपेक्षता

79. सहानुभूति

80. पृच्छा भावना

81. समाजवाद

82. दल भावना

83. समय की पाबन्दी

84. दल कार्य

उपरोक्त एन0सी0ई0आर0टी0 के वर्गीकरण के अतिरिक्त मूल्यों का वर्गीकरण इस प्रकार भी किया जा सकता है।

नैतिक मूल्य : इस अवधारणा के अन्तर्गत आन्तरिक सत्य का अनुभव किया जाता है नैतिक मूल्य सामाजिक प्रेरणा प्रदत्त मान्यतायें हैं नैतिक मूल्य वह प्रच्छन्न मान्यतायें है जो सार्वजनिक स्तर पर कार्य करती है। नैतिक मूल्य हमें तुलनात्मक दृष्टिकोण के आधार पर सही व गलत का चयन करने में सहायता प्रदान करते हैं।

ये मूल्य नैतिकता से सम्बन्धित होते हैं जैसे ईमानदारी, वफादारी, पवित्रता, दूसरों का सम्मान करना, सभी के साथ उचित व्यवहार करना आदि।

आर्थिक मूल्य : धन एवं मुद्रा मनुष्य की आवश्यकता की पूर्ति हेतु अति आवश्यक है जब मनुष्य अन्य वस्तुओं की अपेक्षा मुद्रा व धन को अत्यधिक महत्व देता है तो वह उसका आर्थिक मूल्य कहलाता है। इनको उपयोगिता मूल्य भी कहा जाता है। मनुष्य के पास उपयोगी और अनुपयोगी दोनों प्रकार की आवश्यकतायें होती हैं। इन दोनों प्रकार की आवश्यकताओं की सन्तुष्टि ही आर्थिक मूल्य कहलाता है। समस्त समाज एवं उसकी कार्य प्रणाली इन्हीं आर्थिक मूल्यों पर आधारित है। आर्थिक मूल्यों से तात्पर्य मुद्रा एवं धन एकत्र करने की प्रवृत्ति से भी है।

सौन्दर्यात्मक मूल्य : सौन्दर्यात्मक मूल्य वह जो मनुष्य को सुख एवं खुशी का अहसास कराते हैं। किसी भी वस्तु के अन्दर छिपे गुणों को जब मनुष्य भावनाओं के द्वारा ग्रहण करके सन्तुष्टि प्राप्त करता है तो वे सौन्दर्यात्मक मूल्य कहलाते हैं।

ये वे मापदण्ड हैं, जिनसे हम सुन्दरता का निर्णय व निर्धारण करते हैं। अर्थात इसमें हम किसी भी रूप में सुन्दरता के प्रति प्रेम, चित्रकला, संगीत, नृत्य, कविता, भवन निर्माण, कला व साहित्य के प्रति प्रेम आदि की भावनाओं को सम्मिलित करते हैं।

ज्ञानात्मक मूल्य : जीवन में कुछ नया करने हेतु कुछ न कुछ करना पड़ता है और कुछ करने हेतु स्पष्ट वाद को तथ्यों द्वारा समझना पड़ता है ये तथ्य हमारी महत्त्वाकांक्षा को जन्म देते है जो हमें जानने के लिए मार्ग प्रशस्त करते हैं।

इसके अन्तर्गत किसी भी क्रिया के सिद्धान्तों के प्रति लगाव व सत्य की खोज के प्रति प्रेम को सम्मिलित करते हैं।

समाजिक मूल्य : समाज व्यक्तियों की संस्था है जो परस्पर कुछ आदर्शों नियमों पर तथा परस्पर कर्तव्यों एवं जिम्मेदारियों के अन्तर्गत कार्य करती है। वे धारणायें जहाँ व्यक्ति स्वयं की अपेक्षा दूसरों को अधिक महत्व देता है तथा जब व्यक्ति स्वयं को छोड़कर समाज के आदर्शों एवं नियमों के अन्तर्गत दूसरे व्यक्तियों की अच्छाई के लिए कार्य करता है। सामाजिक मूल्य कहलाते हैं।

इसके अन्तर्गत समाज, सहायता, दया, प्रेम, सहानुभूति, मानव जाति की सेवा करने की भावना को सम्मिलित करते हैं।

राजनैतिक मूल्य : राजनीति का वास्तविक अर्थ सर्वकल्याण में परिलक्षित है राजनैतिक मूल्य हमें राज्य की प्रणाली एवं जीवन के सैद्धान्तिक पक्ष को स्पष्ट करते हैं। हम दैनिक जीवन में अधिकारों कर्तव्यों का निर्वाह कैसे करे सामाजिक एवं शोषण सम्बन्धी समस्याओं से कैसे निपटे। वे नियम जिनके अर्न्तगत हम उपरोक्त गतिविधियों का संचालन करते हैं। राजनैतिक मूल्य कहलाते हैं।

इसके अर्न्तगत पद,प्रतिष्ठा, प्रभुत्व, शक्ति, अधिकार कर्तव्य और भविष्य योजना की भावनायें परिलक्षित होती है।

धार्मिक मूल्य : धर्म से तात्पर्य ईश्वर, अखंड एकता में विश्वास है। वह धारणायें जिनके अन्तर्गत मनुष्य उन आदर्शों के अन्तर्गत आदि अन्त को मानते हुए भगवान को अनेक रूप में इसका स्वामित्व प्रदान करता है तो वह धारणायें धार्मिक मूल्य कहलाती है।

इससे तात्पर्य ईश्वर में विश्वास, स्वर्ग, नरक का भय, धर्म व गुरूओं में विश्वास ईश्वर की आराधना आदि धार्मिक भावनाओं से है।

मानवीय मूल्य : वह धारणायें एवं विश्वास जिनके अन्तर्गत मनुष्य, अच्छाई ईमानदारी, शांति आदि का पालन करता है जो उसे मनुष्य समुदाय में सर्वोच्च स्थान तक ले जाते हैं। मानवीय मूल्य कहलाते हैं।

इसके अतिरिक्त दरिद्रों व असहायों की नि:स्वार्थ सेवा द्वारा समाज में अपनी स्थिति को बढ़ाने के लिए उत्साह, उत्तेजना, रूचि आदि भावनाओं को सम्मिलित करते हैं।

सृजनात्मक मूल्य : सृजनात्मकता का अर्थ है नया। सृजनात्मक मूल्य वह मूल्य है जो हमें किसी पुराने स्वरूप के सन्दर्भ में बिना कोई हानि के कुछ नयापन एक अच्छाई के साथ प्रस्तुत करते है।

इसके अन्तर्गत विचारों की मौलिकता सत्य एवं भोजन के नवीन आविष्कारों के प्रति रूचि तथा विज्ञान तकनीकी की रूचि को सम्मिलित करते हैं।

पारिवारिक मूल्य : मनुष्य एक परिवार का अंग है परिवार एक से अधिक व्यक्तियों के एक साथ रहने की स्थित है इस परिवार के अन्तर्गत जब कोई व्यक्ति अपनी अपेक्षा से दूसरे व्यक्ति को अधिक महत्व देता है तो वह उसका पारिवारिक मूल्य कहलाता है। इसके अन्तर्गत परिवार के साथ सदस्यों के साथ अपने सम्बन्धों का निभाना तथा परिवार के सदस्यों के प्रति सभी कर्तव्यों तथा उत्तरदायित्वों को निभाना आदि।

स्वास्थ्य सम्बन्धी मूल्य : इसके अन्तर्गत अपने शरीर की देखभाल, शरीर को बीमारियों से दूर रखना, शारीरिक व्यायाम की भावना को रखा जाता है।

1.5 मूल्य की आवश्यकता–

आज के समय के संदर्भ में देश को मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता है क्योंकि हम जैसे–जैसे विकास की ओर बढ़ते जा रहे हैं उतना ही मूल्य विहीन भी होते जा रहे हैं भारतवासी जो कि संसार में संस्कृति एवं मूल्यों के आधार पर जाने जाते थे आज अपनी उस पहचान को खोते जा रहे हैं। इसलिये आज के समय में मूल्य हमारी प्राथमिकता बनने चाहिए ताकि हम उस खोये हुये स्थान को प्राप्त कर सके।

मूल्य शिक्षा या मूल्य हमारे दूसरे विकास जैसे आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक आदि का आधार होते हैं। इतना ही नहीं मूल्यों के अभाव में व्यक्तियों एवं समाज का भौतिक विकास भी प्रभावित हो रहा है। यदि हमें अपना चहुमुखी विकास करना है तो निश्चित रूप से हमें अपने मूल्यों पर ध्यान देना होगा तथा उन्हें आवश्यकता अनुसार विकसित भी करना होगा।

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। जो कल था आज नहीं तथा जो आज है वह कल नहीं होगा परन्तु जीवन के कुछ पहलू ऐसे भी हैं जिसमें यह पूर्णतया: लागू नहीं होता मूल्य भी उनमें से एक है यह तो ठीक है कि हमें इस धुव्रीकरण के युग में विकास के संदर्भ में पीछे नहीं रहना चाहिए परन्तु ऐसा विकास जो कुछ खोकर प्राप्त किया गया हो निरर्थक ही साबित होता है। आज जीवन का स्वरूप जो हम विकास के फलस्वरूप प्राप्त कर रहे हैं। जिसमें प्रत्येक सामाजिक प्राणी का मूल्य गिरता जा रहा है। मनुष्य भी उनमें से एक है। आज कल के बदलते परिवेश या विकास वादी परम्परा में मूल्य एक अवशिष्ट पदार्थ बन कर रह गये हैं कोई भी व्यक्ति अब मूल्यों को ग्रहण व इनका पालन करने में अपने आप को अल्पविकसित महसूस करता है। इसलिये अब हमें ऐसे तन्त्र को विकसित करने की आवश्यकता महसूस हो रही है जिसमें मूल्य का विकास भी हो और हम अपने आप को सांसारिक विकास के अनुसार स्थायित्व प्रदान कर सके।

आज व्यक्ति जितने विकसित होते जा रहे हैं उतने ही स्वार्थी, अशिष्ट और मूल्य विहीन बनते जा रहे हैं जबकि व्यक्ति का व्यवहार या कार्य उसके मूल्य क्षेत्र से बाहर नहीं होता वर्तमान समय में बढ़ती उपभोक्ता वादी विचार धारा, स्वार्थपरता एवं औद्योगीकरण के कारण मनुष्य का मनुष्य से सम्बन्ध लगातार टूटता जा रहा है। समाज इन मूल्यों के अभाव मे विघटित होकर रह गया है। हम आधुनिकता के भ्रम जाल में फंस कर परम्परागत मूल्यों एवं रीति रिवाजों से अलगाववाद की तरफ बढ़ते जा रहे है। जो कि व्यक्ति को पतन की पतन ले जा रहा है।

जीवन का कोई भी क्षेत्र हो चाहे– धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, नैतिक आदि हर तरफ मूल्यों में गिरावट आ रही है। आज के समय के संदर्भ में हम मूल्य ह्यस को अपने सामने एक चुनौती के रूप में पाते हैं। परन्तु हम असहाय बने खड़े हैं। मूल्यों के अभाव में परम्परागत संस्कार खत्म होते जा रहे हैं। शिक्षित होने का मतलब विकसित होना जरूर है परन्तु शिक्षा या विकास कोई भी हमें मूल्य विहीन होने को प्रेरित नही करता आज के समय मे मनुष्य अपने मानव होने के उद्देश्यों को भूलता जा रहा है। मनुष्य अनपढ़ हो या शिक्षित मूल्य दोनों की आवश्यकता है क्योंकि मूल्य व्यक्ति के व्यवहार को दिशा व दशा प्रदान करते हैं। आज विश्व में हर देश मूल्य के विकास पर विशेष ध्यान दे रहे हैं। यदि ऐसा नहीं होगा तो वह दिन दूर नहीं जब मनुष्य तथा जानवर में कोई अन्तर नहीं रह जायेगा। यदि वास्तव में हम आज के समय के संदर्भ में अपना आंकलन करे तो हम अपने को विकसित करने पर जितना गौरवान्वित महसूस करते हैं उतना ही या उससे ज्यादा हमें अपने को मूल्य विहीन पाने पर शर्मिंदा होना पड़ता है।

आज हमारे सामने एक प्रमुख समस्या यह भी है कि विभिन्न प्रकार से गिरते हुये मूल्यों का पोषण कैसे किया जाये। केवल प्रोग्राम बनाने मात्र से ही हम मूल्यवान नहीं बन जाते अपितु हमें उन सभी कारणों तथा परिणामों पर भी ध्यान देना होगा।

आजादी के पश्चात बहुत से आयोग एवं समितियों ने मूल्यों के विकास एवं पोषण हेतु शिक्षा पर विशेष बल दिया। यूनिवर्सिटी ऐजूकेशन कमीशन 1948–49, श्री प्रकाश कमेटी 1961, नेशनल कमीशन आन टीचर्स 1093, ऐजूकेशन कमीशन 1964–66। पुरातन काल में मूल्यों को प्राप्त करने का एक मात्र साधन अध्यात्म था।

आज हम वैज्ञानिक रूप में अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। मनुष्य के जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में क्रियाओं में वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया जा रहा है इन वैज्ञानिक आविष्कारों तथा औद्योगिक विकास ने मानवीय मूल्यों को पूर्णतयाः परिवर्तित कर दिया है। अतः यदि हमें अपना भविष्य कहीं सुनिश्चित करना है तो हमें अपने गिरते हुये मूल्यों के स्तर को सुधारना होगा नई शिक्षा नीति 1986 में यह स्वीकार किया गया है कि आवश्यक मूल्यों के नष्ट होने के कारण आज समाज मे बहुत सी बुराईयाँ एवं संक्रामक बीमारी या तो व्याप्त है या फैलती जा रही है। समाज में बढ़ रही कटुता के प्रति सामाजिक एवं नैतिक मूल्य पूर्णतयाः जिम्मेदार है। इन मूल्यों के विकास हेतु हमें अपना सशक्त माध्यम अपनाते हुये पाठ्यक्रम में पुनः समायोजन की आवश्यकता को पूर्ण करना होगा जो कि आज हमारे सामने मुखरित है।

पिछली शताब्दी के मध्य से लेकर आज तक समाज के विभिन्न वर्गो तथा संगठनों द्वारा बदलते परिवेश में तीव्र गति से गिरते हुये मूल्यों पर गहरी चिंता व्यक्त की गयी है। आज नये युग में आधुनिकता की दौड़ ने हमें मूल्यों से कहीं दूर कर दिया है। समय के साथ–साथ यह चिंता का विषय बनता जा रहा है यह विकसित एवं विकासशील दोनों प्रकार की अवस्थाओं के संदर्भ में लागू होता है। इस समस्या ने नई पीढ़ी के अन्तर्गत कमजोर सामाजिक एवं नैतिक समस्यायें पैदा कर दी हैं। जिसके कारण समाज विभिन्न समस्याओं से ग्रसित हो गया है। इसका असर परम्परागत तथा पाश्चात्य दोनों प्रकार की सभ्यताओं पर देखने को मिलता है। इन मूल्यों के अभाव में

व्यक्ति ज्ञान, जीवन व्यवहार, जीवन महत्व तथा उचित व अनुचित सब भूलता जा रहा है।

मूल्य मनुष्य को समग्र मानवता के साथ एकीकृत जीवन के लिये आधार प्रदान करते हैं। मूल्य जीवन सम्बन्धी सभी आदर्शों तथा स्तरों का प्रचार एवं प्रसार का दायित्व निभाते हैं तथा मनुष्य एवं समाज को एक समग्र एवं समन्वित जीवन हेतु आधार प्रदान करते हैं। आज हम सभी विभिन्न स्तर पर विकास के मार्ग पर अग्रसर हैं तथा मानवता कहीं विकास के संदर्भ में अभूतपूर्व संकट से गुजर रही है। आज विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में विकास ने मानवता को नैतिक एवं मौलिकता के क्षेत्र में पीछे छोड़ दिया है। आज जहां हम विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में अभूतपूर्व विकसित उपलब्धियों के युग में रह रहे हैं और विकास ने पूरी दुनिया को समेट कर एक भूमण्डलीकृत गांव का रूप दे दिया है वही मानवीय मूल्यों, संवेदनाओं, सामाजिक संस्कृति, सरोकार एवं पर्यावरण आदि के संदर्भ में हमने बहुत कुछ खोया भी है। ऐसी विकट स्थिति में सामन्जस्य हेतु केवल मूल्य परक शिक्षा ही हमें उचित राह सुझा सकती है। यह बात शायद किसी से छिपी हो कि इस (मूल्य) समस्या की उत्पत्ति वस्तु परक भोगवादी दृष्टि से ही हुई है और इन सभी का समाधान हमें एक सरल शिक्षा, मूल्य परक जीवनशैली नैतिक मूल्य, साधनों की पवित्रता एवं एकांकी जीवन शैली के बजाय समग्र के साथ जुड़ने एवं शारीरिक श्रम के आहवान से ही मिल सकता है।

मूल्य की विचार धारा का आधारभूत तत्व यह है कि अपने मूल रूप में व्यक्ति और मनुष्य जाति की सभी समस्यायें नैतिक समस्यायें हैं। ऐसी स्थिति में मनुष्य यदि अपने सभी कार्यों की सत्य अर्थात अपने अन्तः करण के अनुसार करें तो समाज एवं विश्व में दुख, संकट या समस्या जैसी कोई स्थिति नहीं रह जायेगी एक स्वस्थ्य समाज के विकास के संदर्भ में उस समाज में निहित व्यक्तियों के प्रत्येक कार्य के पीछे कोई

व्यक्तिक या नैतिक बल या प्रेरणा होनी चाहिये क्योंकि जिस क्षण व्यक्ति अपनी आत्मा की चेतना को स्वार्थ के वशीभूत होकर कुचल देता है। उसी समय उसका पशुत्व प्रबल हो उठता है और सभी मूल्यों एवं समस्याओं के प्रति उसके विचार एवं दृष्टि कोण दूषित हो उठते हैं। ऐसी स्थिति में बुनियादी एवं परम्परागत मूल्य परक शिक्षा का सिद्धान्त हमारा ध्यान आकृष्ट करता है। जो व्यक्ति विशेष के हाथ, मस्तिष्क तथा आत्मा का समन्वित विकास करते हुए व्यक्ति निर्माण और समाज निर्माण की प्रभावी राह दिखाता है।

आज हम उस प्रश्न का उत्तर ढूंढते हैं कि इस समस्या का हल कैसे हों वैसे जो मूल्य के विकास हेतु बहुत से माध्यम है जैसे स्कूल, घर-परिवार, सरकारी संस्थायें, गैर सरकारी संस्थायें एवं व्यक्तिगत प्रयास आदि । परन्तु यदि उपरोक्त माध्यम में चुने तो स्कूल या विद्यालय एक सशक्त माध्यम माना जाता है क्योंकि व्यक्ति का अधिकतर समय विद्यालय या स्कूल में गुजरता है तथा इस माध्यम की पूर्ण जिम्मेदारी अध्यापकों पर होती है।

अध्यापक भी समाज का एक हिस्सा व एक सामाजिक व्यक्ति होता है इसलिये अध्यापक भी इस समस्या से प्रभावित हुये हैं मूल्य के ह्यस का प्रभाव अध्यापक पर भी पड़ रहा है। समाज में घट रही सभी समस्याओं का प्रभाव प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अध्यापक पर भी पड़ा है व अध्यापक सम्बन्धित भी रहता है। वैसे तो यह माना जाता है कि अध्यापक राष्ट्र व समाज का भावी निर्माता है क्योंकि वह समाज व राष्ट्र की इकाई व्यक्ति का निर्माण या विकास करता है। परन्तु आज के मूल्यविहीन समाज में अध्यापक के मूल्यों का ही विकास नहीं होगा तो वह समाज व राष्ट्र के लिये अच्छे व नवीन नागरिकों का निर्माण किस प्रकार से कर पायेगा। अतः यह जानने के लिये कि अध्यापक के मूल्य किस स्तर पर कितने गिर रहे हैं और कितने मूल्य अध्यापक के

अन्तर्गत विद्यमान है उनका स्तर क्या है या फिर क्या कारक या कारण उनके पतन के लिये उत्तरदायी है। उनके क्या परिणाम रहे है या होंगे तथा उनका व्यक्ति या राष्ट्र पर क्या प्रभाव पड़ेगा इस सबकी जानकारी के लिये इस अध्ययन की आवश्यकता अनुभव की गयी है।

अब प्रश्न यह उठता है कि इस अध्ययन हेतु किस स्तर का चयन किया जाये और क्यों प्राथमिक स्तर को ही लिया जाये इस संदर्भ में यह विगत है कि प्राथमिक स्तर शिक्षा का आधारभूत स्तर होता है जो कि पूर्ण शिक्षा हेतु आधार का कार्य करता है। मूल्यों के ह्रास के संदर्भ में प्राथमिक स्तर का अध्ययन काफी सार्थक साबित हो सकता है। क्योंकि इस स्तर पर ही बच्चे की उम्र एवं शिक्षा विकासान्तर्गत होता है। यदि हम कोई परिवर्तन पूर्ण रूप से बच्चे के अन्तर्गत करना चाहते हैं तो यही उम्र एवं स्तर सर्वोत्तम होता है। इस स्तर पर बच्चे की ग्रहण क्षमता अत्यधिक होती है तथा इस समय पर ग्रहण मूल्य स्थायी रूप से विकसित होते हैं। इसलिये इस स्तर पर अध्यापकों का मूल्यवान होना अधिक महत्वपूर्ण होता है। इस स्तर पर ग्रहण मूल्य अमिट तथा अधिक महत्वपूर्ण होते हैं। इस स्तर पर मूल्य जितने तीव्र एवं स्थायी ग्रहण हो जाते हैं अन्य किसी स्तर पर नहीं। इसलिये इस (मूल्य) संदर्भ में अन्वेषिका द्वारा अनुभव की गयी आवश्यकता के लिये अनुसंधान स्तर को प्राथमिक स्तर के रूप में चयनित किया गया।

1.6 शोध अध्ययन के उद्देश्य–

अन्वेषिका द्वारा प्रस्तुत शोध में निम्न उद्देश्यों का निर्धारण किया गया है–

1. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का आयु वर्गों के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का आयु

वर्गों के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का आयु वर्गो के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के विभिन्न मूल्यों का वरिष्ठता एवं कनिष्ठता के संदर्भ में अध्ययन करना।
5. निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का वरिष्ठता एवं कनिष्ठता के संदर्भ में अध्ययन करना।
6. सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत अध्यापकों के मूल्यों का वरिष्ठता एवं कनिष्ठता के संदर्भ में अध्ययन करना।
7. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों तथा निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों का विभिन्न मूल्यों के सन्दर्भ मे तुलनात्मक अध्ययन करना।
8. निजी प्राथमिक विद्यालय तथा सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत अध्यापकों का विभिन्न मूल्यों के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।
9. सरकारी प्राथमिक विद्यालय तथा सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत अध्यापकों का विभिन्न मूल्यों के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन करना।

1.7 शोध अध्ययन की परिकल्पनायें–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्रस्तुत समस्या के समाधान हेतु अन्वेषिका द्वारा निम्न परिकल्पनाओं का निर्माण किया गया है।

1. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों में आयु वर्गो के सन्दर्भ में विभिन्न मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
2. निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत वरिष्ठ एवं कनिष्ठ अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

3. सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
4. सरस्वती शिशु मन्दिर के विद्यालयों में कार्यरत वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
5. निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों का आयु वर्गों के संदर्भ में विभिन्न मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
6. सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत अध्यापकों में आयु वर्गो के सन्दर्भ में विभिन्न मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
7. सरकारी प्राथमिक स्तर और निजी प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
8. निजी प्राथमिक विद्यालयों तथा सरस्वती शिशु मन्दिर विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं होगा।
9. सरस्वती शिशु मन्दिर तथा सरकारी प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों में विभिन्न प्रकार के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं होगा।

1.8 अध्ययन में परीक्षण की वैधता एवं विश्वसनीयता–

(अ) परीक्षण की विश्वसनीयता :

किसी भी परीक्षण में विश्वसनीयता उसके प्राप्तांको के स्थायित्व से होती है। परीक्षण को इस प्रकार से बनाया जाता है कि कोई भी कभी भी किसी भी पैमाने पर सर्वोच्च प्राप्तांक न हो क्योंकि किसी एक पैमाने पर स्कोर बढ़ने पर वह दूसरे पैमाने को प्रभावित करता है। प्राप्तांक केवल तुलनात्मक विवरण प्रदान करते हैं। प्रयुक्त मूल्य सूची की विश्वसनीयता ज्ञात करने हेतु परीक्षण पुर्न परीक्षण विधि का प्रयोग किया गया, शोध अध्ययन में समस्या के समाधान हेतु आंकडे एकत्र करने के दो माह उपरान्त

100 अध्यापकों पर पुनः अध्यापक मूल्य सूची प्रकाशित की गयी इस प्रकार प्राप्त प्राप्तांकों के मध्य सहसम्बन्ध प्रोडेक्ट मूमेन्ट विधि द्वारा ज्ञात किया गया जो कि 0.81 प्राप्त हुआ।

(ब) परीक्षण की वैधता :

किसी भी परीक्षण की वैधता वह डिग्री है जो कि परीक्षण को उद्देश्य गर्भित बनाती है किसी परीक्षण की वैधता– ''वह है कि परीक्षण उसी उद्देश्य की जांच या माप करे जिसके लिये वह बनाया गया है''–मूल्य परीक्षण को मूल्य तथा, अभिवृत्ति परीक्षण को अभिवृत्ति ही मापनी चाहिये अन्य कुछ नहीं, यदि परीक्षण उद्देश्य परक होता है तो परीक्षण वैध माना जाता है अथवा नहीं। किसी भी परीक्षण की वैधता उस वर्ग के प्राप्तांक द्वारा निश्चित होती है जिस पर लागू किया जाता है। प्रयुक्त अध्यापक अनुसूची की वैधता ज्ञात करने हेतु डॉ0 एस0 करीम द्वारा निर्मित अध्यापक मूल्य अनुसूची का प्रयोग किया गया। 25 अध्यापकों पर अध्यापक मूल्य अनुसूची प्रकाशित की गई तथा प्राप्तांकों के मध्य सहसम्बन्ध ज्ञात किया गया।

सारणी–1 : परीक्षण की विश्वसनीयता

क्रम	मूल्य	सह–सम्बन्ध गुणांक
1.	सैद्धान्तिक मूल्य	.74
2.	आर्थिक मूल्य	.81
3.	सौन्दर्यात्मक मूल्य	.87
4.	सामाजिक मूल्य	.79
5.	राजनैतिक मूल्य	.77
6.	धार्मिक मूल्य	.87

सारणी–2 : परीक्षण की वैधता

चयनित परीक्षण की आमुख वैधता को 30 निर्णायकों की राय के आधार पर ज्ञात किया गया।

क्रम	मूल्य	सह सम्बन्ध गुणांक
1.	सैद्धान्तिक मूल्य	.48
2.	आर्थिक मूल्य	.55
3.	सौन्दर्यात्मक मूल्य	.61
4.	सामाजिक मूल्य	.47
5.	राजनैतिक मूल्य	.59
6.	धार्मिक मूल्य	.36

1.9 अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी एवं प्रविधियां–

सांख्यिकी को मनोविज्ञान एवं शिक्षा के अध्ययनों मे अपना एक विशेष स्थान प्राप्त है। इसका प्रयोग विभिन्न जांच के साथ–साथ व्यक्तिक भेदों की माप व व्यवहार की जटिलता को समझने में भी उपयोगी है। अध्ययनों के परिणाम शुद्ध, विश्वसनीय, वैध एवं वस्तुनिष्ठ होने चाहिए जिससे ऐसे परिणामों के आधार पर अध्ययन किये गये व्यवहारों के सम्बन्ध में भविष्यवाणी भी की जा सकती है।

सांख्यिकीय विधियों का चयन आँकड़ों की प्रकृति पर आश्रित होता है। यदि आँकड़े सांकेतिक मापनी क्रम सूचक स्तर पर हो तो वहां पर अप्रचालिक सांख्यिकी का प्रयोग किया जाता है। लेकिन यदि आँकड़े अन्तराल पर हो तथा जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हो तो प्राचलिक विधि का चयन किया जाता है।

सांख्यिकी अनुसन्धान का मूल आधार है। अतः सांख्यिकी की आवश्यकता आँकड़ों के विश्लेषण के संकलन में भी पड़ती है।

अनुसन्धान प्रक्रिया में प्राप्त आंकड़ों को प्रस्तुतीकरण तथा व्यवस्थापन के पश्चात विभिन्न सांख्यिकी मापों की गणना की आवश्यकता पड़ती है।

आंकड़ों से सम्बन्धित आंकड़ों के विश्लेषण हेतु विभिन्न सांख्यिकीय विधियों में से मध्यमान, मानक विचलन तथा 'टी'–परीक्षण प्रविधियां प्रयुक्त की गयीं जिनका विवेचन निम्न प्रकार है :-

मध्यमान– सामान्य गणित में जिसे औसत मान कहते हैं सांख्यिकी में उसे मध्यमान कहा जाता है जिसे चिन्ह "M" द्वारा दर्शित किया जाता है। यह किसी समूह की केन्द्रीय प्रवृत्ति को स्पष्ट करता है तथा समस्त प्राप्तांकों का प्रतिनिधित्व भी करता है।

मानक विचलन – दिये गये प्राप्तांकों के मध्यमान से प्राप्तांकों के विचलनो के वर्ग के औसत वर्गमूल ही मानक विचलन है। जेम्स ड्रेवर (1968) मानक विचलन को प्रतीक चिन्ह 'σ' द्वारा अंकित किया जाता है।

"टी" परीक्षण –"टी" परीक्षण मध्यमान के लिये गये विचलन का अनुपात है और यह प्रतिदर्श सांख्यिकीय वितरण में उस विवरण की मानक त्रुटि का पैमाना है विभिन्न चरों के मध्य सार्थक अन्तर है या नहीं इसे जानने हेतु "टी" परीक्षण का प्रयोग किया जाता है।

जब प्रायोगिक स्थिति में दो स्थिति में दो समूहों की संख्या सामान्यता कम होती है। जब प्रत्यदाता आंकड़ों से ही उनके अध्ययनों के अन्तर की सार्थकता जिस विधि से करते हैं, जांच की इस विधि को ही "टी" परीक्षण कहते हैं। "टी" परीक्षण हेतु सर्वप्रथम स्वतन्त्रता का अंश ज्ञात किया जाता है। इसके पश्चात "टी" परीक्षण निम्न सूत्र का प्रयोग किया गया।

प्राप्त "टी" मूल्य को उच्च सार्थकता 0.05 तथा उच्चतर सार्थकता 0.01 के स्तर पर अर्थापन किया गया।

अध्याय–2

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन एवं पुनरावलोकन

द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन एवं पुनरावलोकन

"जिस प्रकार एक कुशल चिकित्सक के लिये यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्रों, शोध कार्य करने वाले शोधकर्ताओं के लिये भी यह अति आवश्यक है कि वह उस क्षेत्र में सम्बन्धित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित हो।"

गुड, बार तथा स्केट्स

2.1 सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा तथा महत्व :

किसी भी शोध कार्य में सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन एवं उसकी समीक्षा एक आवश्यक सोपान होता है। सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा से अध्ययन में अनेक लाभ होते हैं। इससे शोधकर्ता को उस क्षेत्र में हुए भूतकाल के अध्ययन का पता अध्ययनों के माध्यम से अपने अध्ययन के दिशा संकेत के विषय में उचित ज्ञान होता है तथा विषय–वस्तु में पैठ गहरी होती है। विषयगत विभिन्न दृष्टिकोणों एवं विषय के अनेक आयामों की जानकारी मिलती है।

सम्बन्धित साहित्य व अध्ययनों से शोध प्रणालियों एवं प्रचलित अध्ययन विधियों का भी उचित ज्ञान होता है, जिससे कि शोधकर्ता उचित तरह से अपना अध्ययन सम्पन्न कर सके। सम्बन्धित साहित्य के परिशीलन से एक अन्य लाभ यह भी होता है कि इससे शोधकर्ता अपने अध्ययन के उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से निर्धारित कर लेता है। सम्बन्धित उपकल्पनाओं का निर्माण भी सम्बन्धित साहित्य के परिशीलन से होता है। वस्तुतः सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के अभाव में अनुसंधान सही दिशा में एक कदम भी आगे नहीं बढ़ सकता। शोध समस्या की प्रकृति के विस्तृत वर्णन के

उपरान्त यह आवश्यक है कि सम्बन्धित शोध साहित्य का पुनरावलाकन से तात्पर्य उन सभी प्रकार की पुस्तकें, पत्रिकाओं एवं अप्रकाशित शोध ग्रन्थों तथा अभिलेखों से है जिसके अध्ययन से शोधार्थी को अपनी समस्या के चयन, उद्देश्यों के निर्धारण, परिकल्पनाओं के निर्माण तथा अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने व आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। किसी भी क्षेत्र में नवीन खोज करने से पूर्व आवश्यक होता है कि शोधकर्ता इस क्षेत्र से सम्बन्धित ज्ञान में भली-भाँति परिचित हो, शोधार्थी के लिए किसी भी समस्या पर कार्य करने से पूर्व उस क्षेत्र विशेष से सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन करना अनिवार्य होता है, जिससे यह ज्ञात होता है कि शोधार्थी का समस्या के परिप्रेक्ष्य में ज्ञान कहां तक विकसित है।

डब्ल्यू०आर० बोर्ग के अनुसार "किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान है जिस पर सारा भावी कार्य आधारित होता है, जब तक कि सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तब तक हमारे कार्य में प्रभावहीनता एवं महत्वहीनता होने की सम्भावना रहती है अथवा इसमें पुनरावृत्ति होने की आशंका होने की शंका का निवारण करने हेतु सम्बन्धित शोध साहित्य को दो कोटियों में विभक्त किया गया है। प्रथम कोटि में वे अध्ययन हैं जो विदेशों में किये गये हैं तथा द्वितीय कोटि में उन अध्ययनों का सर्वेक्षण किया गया है जो भारत में किये गये हैं तथा तृतीय कोटि के उन अध्ययनों का सर्वेक्षण किया गया है जो केवल उत्तर प्रदेश में सम्पन्न किये गये हैं।

1. सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण (भारत)
2. सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण (विदेश)

2.2 सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन :-

●शोध एवं लेख भारत में-

चौ0 डा0 राय, के0 (1958-59) अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी में अपने पर्यवेक्षण में अत्यधिक कार्य कराया। डा0 के0 राय भारत सरकार के उच्च पद पर कार्यरत इस वर्ष शिक्षण निष्णांत की उपाधि हेतु मूल्यों पर अनेक लघु शोध लिखे गये। ये सभी लघु शोध आलपोर्ट बर्नन की मूल्य वर्तनी पर आधारित थे। इन सभी के अन्तर्गत मुस्लिम, गैर-मुस्लिम, ग्रामीण तथा शहरी उत्तर प्रदेश तथा बाहर के प्रदेशों के निवासियों में मूल्य विभिन्नता देखी गयी।

गोवन (1966) ने एक अध्ययन के निष्कर्ष स्वरूप पाया कि गिफ्टिड बालकों के अन्तर्गत अन्य बालकों की अपेक्षा राजनैतिक एवं सैद्धान्तिक मूल्य अधिक तथा धार्मिक एवं आर्थिक मूल्य कम पाये जाते हैं।

वर्मा, एस. एस. (1968) ने छात्राध्यापकों के मूल्यों, समायोजन, अभिवृत्तियों तथा व्यक्तिगत समस्याओं पर अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रभाव का अध्ययन किया। मूल्यों के मापन के लिए आलपोर्ट बर्नन व लिण्डेन की मूल्य मापनी का प्रयोग करते हुये उन्होंने निम्न निष्कर्ष प्राप्त किये -

1. प्रशिक्षण के परिणाम स्वरूप सैद्धान्तिक व आर्थिक मूल्यों का ह्रास होता है परन्तु सौन्दर्यात्मक मूल्यों में वृद्धि होती है।
2. प्रशिक्षण के समय सामाजिक व राजनैतिक मूल्य अप्रभावित रहते हैं।
3. प्रशिक्षण के समय अध्यात्मिक मूल्यों में जोने वाली वृद्धि सार्थक नहीं होती है।

पांडे (1970) ने सामान्य और अधिक सामान्य किशोर अवस्था के बालकों का मूल्यों के सन्दर्भ में अध्ययन किया तथा पाया कि सामान्य तथा अति सामान्य बच्चों

में सौन्दर्यात्मक तथा धार्मिक मूल्यों पर कोई अन्तर नहीं पाया गया। राजनैतिक, आर्थिक एवं सैद्धान्तिक मूल्य अति सामान्य वर्ग के बच्चों में तथा सामाजिक मूल्य सामान्य वर्ग के बच्चों में अधिक पाये गये।

कुलश्रेष्ठ (1970) ने पिछड़े एवं सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों का मूल्य के सन्दर्भ में अध्ययन किया। निष्कर्ष स्वरूप पाया कि धार्मिक एवं सैद्धान्तिक मूल्यों के अलावा दोनों वर्ग के विद्यार्थियों के मूल्यों में कोई अन्तर नहीं है। सामान्य वर्ग के विद्यार्थियों में सैद्धान्तिक तथा पिछड़े वर्ग के विद्यार्थियों में धार्मिक मूल्य अधिक पाये गये।

वर्मा, डी.के (1972) ने माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों व छात्रों में अन्तर पारस्परिक सम्बन्ध में मूल्यों का अध्ययन किया, जिससे उन्हें निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

1. अध्यापक व छात्रों के मूल्यों में काफी विभिन्नता पायी गयी।
2. दो अध्यापकों के मूल्यों में ज्यादा अन्तर नहीं पाया गया।
3. अध्यापक व छात्रों के तुलनात्मक अध्ययन में मूल्यों में काफी विभिन्नता पायी गयी।
4. अध्यापकों ने पारिवारिक प्रतिष्ठा तथा धार्मिक सौन्दर्यात्मक मूल्यों को अधिक महत्व दिया।
5. छात्रों ने सामाजिक, धार्मिक और ज्ञानात्मक मूल्यों को अधिक महत्व दिया।

मखीजा (1973) ने अध्ययन के क्षेत्र में विद्यार्थियों की उपलब्धि पर मूल्यों, रूचि, बुद्धि के प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन की मुख्य उपलब्धियां निम्न प्रकार से रहीं :-

1. बुद्धि विद्यार्थी की उपलब्धि को हमेशा मुख्य रूप से प्रभावित करती है।

2. विद्यार्थी जो कि ओरियन्टैड नहीं किये गये उपलब्धि में कमजोर रहे।
3. ऐसे विद्यार्थियों में व्यवसायिक रूचि अधिक उत्पन्न हुई जिन्होंने सौन्दर्यात्मक अनुशासन को जीवन में प्राथमिकता दी।
4. विद्यार्थी जिन्होंने प्रयोगात्मक तथा उपयोगात्मक दृष्टिकोण अपनाया उनकी बौद्धिक क्षम्‍ता का विकास हुआ।
5. ऐसे विद्यार्थी जो शक्ति, प्रतिस्पर्धा आदि को महत्व देते हैं वे ही मानसिक क्षमता का पूर्ण रूप से उपयोग कर पाये।
6. ऐसे विद्यार्थी जो बुद्धिमान हैं वे या तो विज्ञान या मेडिकल में रूचि रखते हैं तथा धार्मिक मूल्य उनकी उपलब्धि में सहायक पाये गये।

कौल (1974) ने कुछ अध्यापक वर्गो के दृष्टिकोंण तथा मूल्यों का सामाजिक परिप्रेक्ष्य के सन्दर्भ में अध्ययन किया, इस अध्ययन की मुख्य विशेषताएं निम्न प्रकार से हैं :-

1. दोनों वर्गों में वयस्कों में अधिकारिक दृष्टिकोण की प्रबलता देखने को मिली।
2. अध्यापकों द्वारा दृष्टिकोण की अपेक्षा सैद्धान्तिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों को महत्व दिया गया।
3. इन अध्यापक वर्गों में अध्यापन तथा सौन्दर्यात्मक मूल्यों में कोई विशेष अन्तर नहीं पाया गया।
4. गैर भारतीय अध्यापकों की तुलना में भारतीय अध्यापकों ने धार्मिक मूल्यों पर अधिक बल दिया।

कौल (1974) ने कुछ अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का कारक अध्ययन किया। इस अध्ययन में कुछ विख्यात तथा अविख्यात अध्यापकों में मुख्य रूप से छः मूल्यों सैद्धान्तिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, सौन्दर्यात्मक तथा आर्थिक मूल्यों के

आधार पर एक सामान्य कारक को उद्देशित करना था इस अध्ययन के मुख्य बिन्दु इस प्रकार से हैं –

1. अन्तःकरण विश्लेषण के आधार पर चार मुख्य कारकों का निर्धारण किया गया।
2. पहला कारक सैद्धान्तिक मूल्यों के मूल्यांकन में उच्च समर्थक हैं तथा सौन्दर्यात्मक मूल्य के मूल्यांकन में समर्थक नहीं हैं।
3. दूसरा कारक सौन्दर्यात्मक मूल्यों के मूल्यांकन में उच्च समर्थक हैं तथा यही कारक आर्थिक मूल्यों के मूल्यांकन में उच्च समर्थक नहीं है। इसे सौन्दर्तातमक कारक के नाम से भी जाना जाता है।
4. तीसरा कारक राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्यों के मूल्यांकन में उच्च समर्थक हैं। इस कारक को ऐथिमल कारक के नाम से भी जाना जाता है।
5. चौथा कारक आर्थिक मूल्यों के मूल्यांकन में उच्च समर्थक हैं जबकि यही कारक सौन्दर्यात्मक मूल्य के मूल्यांकन में उच्च समर्थक नहीं है इसे आर्थिक कारक के नाम से जाना जाता है।
6. विख्यात अध्यापकों ने आर्थिक तथा सौन्दर्यात्मक मूल्यों में अविख्यात अध्यापकों की अपेक्षा निम्न स्कोर किया जबकि सैद्धान्तिक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक मूल्यों में अविख्यात की अपेक्षा उच्च स्कोर किया।

पटेल (1974) ने दक्षिण गुजरात में एक सैकेण्ड्री स्कूल के अध्यापकों में मूल्यों के विकास का अध्ययन किया। इस अध्ययन के मुख्य परिणाम इस प्रकार से हैंः–

1. सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक तथा धार्मिक मूल्यों को प्रौढ़ अध्यापकों ने वयस्क अध्यापकों की तुलना में अत्यधिक महत्व दिया।

2. वयस्क अध्यापकों ने सौन्दर्यात्मक तथा प्रजातांत्रिक मूल्यों को प्रौढ़ अध्यापकों की तुलना में अधिक महत्व दिया।

3. पुरुष अध्यापकों की तुलना में महिला अध्यापकों ने सैद्धान्तिक, आचारिक, दार्शनिक तथा वैज्ञानिक मूल्यों को अत्यधिक महत्व दिया।

4. राजनैतिक मूल्यों को महिला अध्यापकों की अपेक्षा, पुरुष अध्यापकों ने अधिक महत्व दिया।

5. शहरी क्षेत्र के अध्यापकों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापकों ने सामाजिक, राजनैतिक तथा आर्थिक मूल्यों को अधिक महत्व दिया।

6. ग्रामीण क्षेत्र के अध्यापकों की तुलना में शहरी अध्यापकों ने सौन्दर्यात्मक मूल्य को अधिक महत्व दिया।

सिंह, बी.एल. (1974) ने अभिवृत्ति के संदर्भ में मूल्य का मापन कर सर्वेक्षण किया और निष्कर्ष प्राप्त किया कि "अध्यापकों ने सामाजिक तथा व्यावहारिक मूल्यों को सर्वाधिक महत्व दिया और आर्थिक, राजनैतिक मूल्यों को सबसे कम महत्व दिया।"

कुमारी (1975) ने अध्ययन स्वरूप पाया कि सृजनता तथा मूल्यों में कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं पाया जाता। आर्थिक एवं धार्मिक मूल्यों का समायोजन से अत्यधिक महत्वूर्ण सम्बन्ध पाया गया। जबकि सामाजिक एवं सौन्दर्यात्मक मूल्यों का सम्बन्ध समायोजन के स्तर से पाया गया। बुद्धि का किशोरावस्था में मूल्यों से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं पाया गया जबकि किशोरावस्था में वृद्धि की दर मूल्यों को प्रभावित करती है।

शर्मा, डी0डी0 (1977) ने अध्यापकों तथा विद्यार्थियों की मूल्य विभिन्नता पर अध्ययन करने की कोशिश की जिसके मुख्य निष्कर्ष निम्न प्रकार से हैं –

1. कक्षा–10 के स्तर पर पुरुष तथा महिला विद्यार्थियों में सैद्धान्तिक मूल्यों के संदर्भ में अन्तर पाया गया।
2. पुरुष अध्यापकों ने अपने विद्यार्थियों के धार्मिक मूल्यों की अपेक्षा सामाजिक तथा आर्थिक मूल्यों को अधिक महत्व दिया।
3. पुरुष अध्यापकों में अपने महिला विद्यार्थियों की अपेक्षा राजनैतिक मूल्य अधिक पाये गये।
4. विश्वविद्यालय के महिला विद्यार्थियों में सैद्धान्तिक व राजनैतिक मूल्य पुरुष विद्यार्थियों की अपेक्षा कम पाये गये।
5. विश्वविद्यालय के पुरुष अध्यापकों की तुलना में सौन्दर्यात्मक तथा आर्थिक मूल्य अधिक पाये गये।

चन्द्र, डी0 (1977) ने अध्यापक कार्य में कार्यरत तथा अन्य कार्यों में कार्यरत व्यक्तियों के मूल्यों का अध्ययन किया। 280 व्यक्तियों को अध्ययन हेतु चयन किया। निष्कर्ष इस प्रकार प्राप्त किये –

1. अध्यापकों के नैतिक मूल्य इंजीनियर तथा वकीलों से सर्वाधिक पाये गये।
2. अध्यापक अपने कार्य को मूल्यों के अनुरूप करते थे जबकि वकील कार्य की पूर्ति के लिये मूल्यों को कम महत्व देते थे।

भूषण, ए0 (1979) ने सैक्स तथा पारिवारिक व्यवसाय के संदर्भ में मूल्यों का अध्ययन किया। अध्ययन उपरान्त पाया कि पुरुष तथा महिला अध्यापक मूल्यों को सभ्यता का एक भाग मानते हैं। महिला अध्यापकों द्वारा पारिवारिक व्यवसायों की

अपेक्षा सहयोग और सौहार्द को अधिक महत्व दिया गया। अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष निम्न प्रकार से हैं –

1. पुरूष तथा महिला दोनों प्रकार के अध्यापकों के द्वारा ही आत्मसयंम, ईमानदारी तथा कृतज्ञता को महत्व दिया गया।
2. महिला अध्यापकों के द्वारा माफी, उदारता, महत्वाकांक्षा तथा सहयोग को अधिक महत्व प्रदान किया गया।
3. महिला अध्यापकों के द्वारा तर्क की अपेक्षा ईमानदारी तथा आत्मसंयम को प्रबल महत्व प्रदान किया गया तथा इसके द्वारा किसी भी पारिवारिक व्यवसाय को प्रभावित न होने पर बल दिया।
4. पुरूष अध्यापकों द्वारा पारिवारिक पृष्ठभूमि में कृतज्ञता तथा महिला अध्यापकों द्वारा खुलेपन की सोच को अधिक महत्व दिया गया।
5. महिला तथा पुरूष दोनों प्रकार के अध्यापकों के द्वारा उदारता के मूल्यों का एक भाग माना।
6. महिला अध्यापकों समूह द्वारा सहयोग तथा सौन्दर्य को अधिक महत्व दिया गया।
7. पुरूष वर्ग में पारिवारिक व्यावसायिक विभिन्नता के सन्दर्भ में तर्क स्वतन्त्रता, स्वच्छंदता, बुद्धिमत्ता, साहस, क्षमा, उमंगता, महत्त्वाकांक्षा, कृतज्ञता तथा कल्पना की, जबकि महिला वर्ग के अनुसार आत्म संयमता, कल्पना, कृतज्ञता तथा महत्वाकांक्षा पर विभिन्नता पायी गयी।

राय (1980) ने अपने अध्ययन में मूल्यों के विकास का अध्ययन किया। उनके अध्ययन "मूल्यों के विकास के प्राविधियों, विधियों और कारकों का प्रभाव" की मुख्य विशेषततायें निम्न प्रकार से हैं–

1. मूल्यों के विकास में आयु के विकास का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है।
2. मूल्यों के विकास तंत्र पर सामाजीकरण की विधियों प्रविधियों का सीधा प्रभाव पड़ता है।
3. लड़के व लड़कियाँ मूल्यों के आधार पर विभिन्नता रखते हैं परन्तु उनमें सामाजीकरण की विधि एवं प्रविधि समान पायी जाती है।
4. सामाजिक बुद्धि का सीधा सम्बन्ध समर्पण से होता है।
5. किशोरावस्था में विद्यार्थियों के मूल्य तन्त्र का सीधा सम्बन्ध उनके मानसिक स्वास्थ्य से होता है।
6. मूल्यों के विकास की गति को माता-पिता, अध्यापक, दोस्त, वरिष्ठ एवं कनिष्ठ साथी निर्धारित करते हैं।
7. मूल्यों के विकास में जागरूकता उम्र एवं वर्ग के साथ बढ़ती है।

कालिया (1981) ने विभिन्न वातावरण में रहने वाले विभिन्न वयस्कों केसन्दर्भ में विभिन्न प्रकार के मूल्यों एवं विचारों का अध्ययन किया। इस अध्ययन के मुख्य निष्कर्ष निम्न प्रकार से हैं :-

1. अनाथ वयस्क पुरूषों की अपेक्षा माता-पिता के साथ रहने वाले वयस्कों ने सैद्धान्तिक तथा राजनैतिक मूल्यों को अधिक महत्व दिया।
2. अनाथ वयस्कों ने शैक्षिक, शारीरिक एवं आर्थिक मूल्यों को अधिक महत्व दिया।
3. पिता के साथ रहने वाले वयस्क पुरूषों ने अनाथ वयस्कों की अपेक्षा सैद्धान्तिक, राजनैतिक मूल्यों पर अधिक महत्व दिया ज़बकि बेघर व अनाथ बच्चों ने आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक तथा खेलकूद मूल्यों को अधिक महत्व दिया।

4. राजनैतिक मूल्य जिसमें शुरू से ही उच्च अन्तर पाया गया था इसके अतिरिक्त पुरूष तथा महिला माता-पिता में कोई विशेष अन्तर नहीं पाया गया।
5. अनाथ और माता पिता वाले बालकों ने माता-पिता वाली बालिकाओं की अपेक्षा धार्मिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों पर अत्यधिक महत्व दिया तथा अनाथ बालिकाओं ने सामाजिक तथा सौन्दर्यात्मक मूल्यों पर अधिक महत्व दिया।
6. इन सभी वर्गो ने सैक्स तथा समायोजन की विभिन्नता पर अत्यधिक जोर दिया।

राज (1981) ने अध्यापकों के दृष्टिकोण तथा मूल्यों का सामाजिक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य के सन्दर्भ में अध्ययन किया। इस अध्ययन की मुख्य विशेषतायें निम्न प्रकार से हैं :-

1. दोनों वर्गो के वयस्कों में अधिकाधिक दृष्टिकोण की प्रबलता देखने को मिली।
2. इथोपियन अध्यापकों द्वारा सैद्धान्तिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक मूल्यों को महत्व दिया गया।
3. इन अध्यापक वर्गो में अध्यापन तथा सौन्दर्यात्मक मूल्यों में कोई विशेष अन्तर नहीं पाया गया।
4. इथोपियन अध्यापकों की तुलना में भारतीय अध्यापकों ने धार्मिक मूल्यों पर अत्यधिक बल दिया।

करीम, अब्दुल एवं विजय (1981) ने कालेज विद्यार्थियों के मूल्य परिचयों का उनके सामाजिक-आर्थिक स्तरीकरण के सन्दर्भ में अध्ययन किया। निष्कर्ष स्वरूप पाया कि उच्च आर्थिक स्तरीय विद्यार्थियों के अन्तर्गत आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा आर्थिक मूल्य अधिक तथा सैद्धान्तिक एवं सौन्दर्यात्मक मूल्य कम पाये गये।

जैन (1982) ने मूल्यों का निम्न शीर्षक के अन्तर्गत अध्ययन किया। "व्यावसायिक दृष्टिकोण के सन्दर्भ में अध्यापक के कक्षा व्यवहार तरीकों का अध्ययन" इस अध्ययन की निम्न विशेषतायें हैं :-

1. महिला अध्यापकों की तुलना में पुरूष अध्यापक प्रश्न पूछने में अत्यधिक समय समर्पित करते हैं।
2. विद्यार्थी, शादीशुदा व बिना शादी वाले अध्यापकों की कक्षाओं में अलग-अलग रूचि रखते हैं।
3. सैद्धान्तिक एवं सौन्दर्यात्मक मूल्यों का अध्यापक के क्रियात्मक व्यवहार पर कोई सीधा प्रभाव नहीं होता।
4. धार्मिक मूल्यों एवं अध्यापकों की आयु में सीधा सम्बन्ध पाया जाता है।
5. विद्यार्थी एवं शिक्षक के सन्दर्भ में शिक्षक के दृष्टिकोण का शिक्षण सन्तुष्टि में विपरीत सम्बन्ध पाया जाता है।
6. अत्यधिक सौन्दर्यात्मक मूल्यों वाले अध्यापकों में शिक्षण व्यवसाय एवं शिक्षकों के प्रति कोई सीधा दृष्टिकोण नहीं पाया जाता है।
7. अत्यधिक धार्मिक मूल्यों वाले अध्यापकों में शिक्षण, शिक्षण प्रक्रिया, शिष्य अथवा अध्यापकों के प्रति अत्याधिक महत्व दिखाई दिया।

कटियार (1982) ने जाति वर्ग के अन्तर्गत विद्यार्थियों के मूल्यों के अध्ययन स्वरूप पाया कि उच्च जाति वर्ग के विद्यार्थियों में सौन्दर्यात्मक, सैद्धान्तिक एवं सामाजिक मूल्य उच्च तथा निम्न जाति वर्ग के विद्यार्थियों में धार्मिक मूल्य उच्च पाये गये।

कुमारी सुमन (1982) ने मूल्यों के तन्त्र का प्रोलोग्ड डिप्रीव्ड के संदर्भ में अध्ययन किया। परिणामतः पाया कि निम्न डिप्रीव्ड वर्ग उच्च वर्ग की अपेक्षा सौन्दर्यात्मक

एवं सामाजिक मूल्यों पर अधिक महत्व देता है। निम्न वर्ग उच्च डिप्रीव्ड वर्ग की अपेक्षा सैद्धान्तिक एवं आर्थिक मूल्यों पर अधिक महत्व देता है।

श्री स्थाला ऐने लिबो (1983) ने "सिद्धान्तों में मूल्यों के स्पष्टीकरण का इन्स्टीट्यूट की क्षमता के" संदर्भ में अध्ययन किया। इस अध्ययन की मुख्य उपलब्धियाँ निम्न प्रकार से हैं :-

1. विश्वास, अच्छाई और प्रतियोगिक मूल्य ही अत्यधिक तर्क संगत पाये गये।
2. प्राचार्य के अपने समकक्ष या स्टाफ से कार्य सामंजस्य के लिए तथा विद्यार्थियों को बेहतर शिक्षा प्रदान करने हेतु अत्यधिक नैतिकता पर आधारित होना चाहिए।
3. अध्यात्मिक दृष्टिकोण सभी विद्यालयों में समान रूप से पाया गया।

गोस्वामी (1983) ने गुजरात के "उच्च प्राथमिक विद्यालय में मूल्य के ओरिएन्टेशन" का अध्ययन किया। इस अध्ययन की मुख्य उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं:

1. सैद्धान्तिक, धार्मिक एवं सामाजिक मूल्यों पर उच्च प्राथमिक विद्यालय और प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों में अत्यधिक अन्तर पाया गया।
2. सौन्दर्यात्मक, आर्थिक एवं राजनैतिक मूल्यों पर उच्च प्राथमिक विद्यालय तथा प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों में अत्यधिक अन्तर पाया गया तथा यह प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के पक्ष में था।
3. आर्थिक एवं सौन्दर्यात्मक मूल्य उच्च प्राथमिक विद्यालय की लड़कियों में प्राथमिक विद्यालय की तुलना में कम पाये गये।

गोस्वामी एस. एस. (1983) ने उच्च माध्यमिक स्तर पर स्कूल के वातावरण में अध्यापकों के मूल्य का अध्ययन किया। अध्ययन हेतु 1100 छात्रों तथा 250

अध्यापकों का चयन यादृच्छिकृत विधि द्वारा किया। उन्होंने आलपोर्ट और लिण्डजे की मूल्य मापनी और एस.पी. कुलश्रेष्ठ की मूल्य मापनी का प्रयोग किया और निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये –

1. अशासकीय स्कूल के अध्यापकों के मध्यमान से पोस्ट बेसिक स्कूलों के अध्यापकों के मध्यमान सैद्धान्तिक, सामाजिक तथा धार्मिक मूल्यों में उच्च पाये गये।
2. शासकीय विद्यालयों के अध्यापकों के सैद्धान्तिक, सामाजिक, धार्मिक मूल्यों का माध्य अशासकीय उच्च विद्यालयों के अध्यापकों के मूल्य के माध्य से अधिक था।
3. शासकीय अध्यापकों के राजनैतिक, आर्थिक और सौन्दर्यात्मक मूल्य का माध्य अशासकीय अध्यापकों में अधिक पाया गया।

शेरीक्यू (1984) ने माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के शिक्षण दृष्टिकोण का मूल्य दृष्टिकोण व राजनैतिक प्राथमिकताओं के संदर्भ में अध्ययन किया जिसकी मुख्य उपलब्धियाँ निम्न प्रकार हैं –

1. माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में उद्देश्य, तरीके, तरक्की, योजना, शिष्य नियन्त्रण और शिक्षा की आवश्यकताओं के संदर्भ में प्रगतिवादी दृष्टिकोण रखते हैं।
2. माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के शिक्षण दृष्टिकोण का उनके राजनैतिक, सौन्दर्यात्मक एवं आर्थिक मूल्यों से कोई सम्बन्ध नहीं पाया गया।
3. अध्यापकों के शिक्षण दृष्टिकोण का कार्य गतिविधियों के संदर्भ में उनके दृष्टिकोण का कोई सीधा सम्बन्ध नहीं पाया गया तथा मुख्य कार्य सिद्धान्त के संदर्भ में भी सम्बन्ध नहीं पाया गया।

4. कला अध्यापकों की तुलना में विज्ञान अध्यापकों में तरक्की एवं सेवाकाल शिक्षा के संदर्भ में प्रगतिवादी दृष्टिकोण अधिक पाया गया लेकिन अन्य क्षेत्रों में उनके विचार एक दूसरे से मिलते जुलते पाये गये।

भटनागर (1984) ने मूल्यों के एक अध्ययन स्वरूप पाया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के मूल्यों को परिवार का आकार सीधा प्रभावित करता है। छोटे परिवार से सम्बन्धित विद्यार्थियों में शैक्षिक, व्यक्तिगत एवं भौतिक मूल्य उच्च पाये जाते हैं। धार्मिक, सामाजिक एवं मानवता मूल्यों का परिवार के आकार से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं पाया गया। व्यक्तिगत, शैक्षिक, सामाजिक मूल्यों का जन्म दर क्रम से सीधा सम्बन्ध होता है। जबकि धार्मिक एवं मानवता मूल्यों का सीधा सम्बन्ध नहीं पाया गया। पारिवारिक अखण्डता का सीधा सम्बन्ध शैक्षिक एवं सामाजिक मूल्यों से तथा पारिवारिक खण्डता का सीधा सम्बन्ध व्यक्तिगत तथा भौतिक मूल्यों से पाया गया।

शैने (1984) ने मूल्य तंत्र का भारतीय प्रान्तीय युवाओं के संदर्भ में अध्ययन किया। निष्कर्ष स्वरूप पाया कि लड़कियों ने लड़कों की अपेक्षा सामाजिक एवं सौन्दर्यात्मक मूल्यों पर अधिक बल दिया। सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक मूल्यों के संदर्भ में कम बुद्धि वाले लड़कों की अपेक्षा कम बुद्धि वाली लड़कियों ने अधिक महत्व दिया। उच्च बुद्धि वाली लड़कियों ने उच्च बुद्धि वाले लड़कों की अपेक्षा सामाजिक, नैतिक, ज्ञान एवं सौन्दर्यात्मक मूल्यों को अधिक महत्व दिया।

पाल (1984) ने कालिज स्तर पर विद्यार्थियों का अध्ययन किया एवं पाया कि निम्न आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों का परम्परागत मूल्यों से सीधा सम्बन्ध होता है जबकि उच्च आर्थिक स्तर के विद्यार्थी अधिक भौतिकवादी मूल्यों पर विश्वास करते हैं।

शरीक, ए. एस. (1984) के माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों को शैक्षिक मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण और राजनैतिक मूल्यों की वरीयता का अध्ययन किया। अध्ययन हेतु 251 पुरुष तथा 79 महिला अध्यापकों का चयन किया। निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये।

1. शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में जैसे उद्देश्य विधि छात्र नियन्त्रण प्रगति की नीति, नौकरी की आवश्यकता के प्रति अध्यापकों का दृष्टिकोण अधिक मिला।
2. विधि में महिला तथा पुरुष शिक्षकों में कोई अन्तर नहीं था।
3. विज्ञान वर्ग के शिक्षकों का दृष्टिकोण अन्य वर्ग के अध्यापकों से शैक्षिक नौकरी और प्रगति की नीति में अधिक पाया गया।
4. परम्परागत अध्यापकों का दृष्टिकोण राजनैतिक, सौन्दर्यात्मक, आर्थिक मूल्यों पर अधिक पाया गया तथा प्रगतिशील शिक्षकों में सैद्धान्तिक व सामाजिक मूल्य अधिक पाया गया।
5. अध्यापकों का मूल्यों के विकास में दृष्टिकोण पाया गया।
6. परम्परागत और प्रगतिशील अध्यापकों में राजनैतिक मूल्य समान पाये गये।

कालिया एवं माथुर (1985) ने विभिन्न सामाजिक-आर्थिक परिवेश वाले विद्यार्थियों का मूल्यों के संदर्भ में अध्ययन किया। परिणामस्वरूप पाया कि विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थी सैद्धान्तिक, आर्थिक और सामाजिक मूल्यों पर भिन्नता रखते हैं। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले विद्यालयों के विद्यार्थियों ने सामान्य एवं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा सैद्धान्तिक मूल्यों पर अधिक जोर दिया।

उच्च एवं सामान्य सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले विद्यालयों के विद्यार्थियों ने सौन्दर्यात्मक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्यों को अधिक महत्व दिया।

सिंह (1986) ने एक अध्ययन के परिणाम स्वरूप पाया कि हरिजन जाति के विद्यार्थी नान हरिजन जाति के विद्यार्थियों की अपेक्षा आर्थिक, धार्मिक मूल्यों पर उच्च तथा सामाजिक, राजनैतिक, सैद्धान्तिक, नैतिक एवं सौन्दर्यात्मक मूल्यों पर निम्न पाये गये।

शर्मा (1986) ने विभिन्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों का मूल्यों के संदर्भ में अध्ययन किया और पाया कि उच्च सामाजिक आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थी सामान्य एवं निम्न सामाजिक एवं आर्थिक स्तर वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा आर्थिक, सौन्दर्यात्मक मूल्यों को अधिक महत्व देते हैं।

कुमारी प्रभावती (1987) ने उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों का व्यक्तित्व, आवश्यकता, नैतिकता एवं निर्णय क्षमता के संदर्भ में अध्ययन किया। इस अध्ययन की मुख्य उपलब्धियाँ निम्न प्रकार हैं :-

1. पुरुष अध्यापकों ने परस्पर सम्बद्धता को अत्यधिक महत्व दिया, जबकि महिला अध्यापकों ने किसी तन्त्र को उचित बनाये रखने पर जोर दिया।
2. पुरुष अध्यापकों ने महिला अध्यापकों की तुलना में सौन्दर्यात्मक सैद्धान्तिक एवं सामाजिक मूल्यों को अत्यधिक महत्व दिया।
3. शहरी क्षेत्र के पुरुष अध्यापकों ने ग्रामीण क्षेत्र के पुरुष अध्यापकों की तुलना में सौन्दर्यात्मक, सैद्धान्तिक एवं सामाजिक मूल्यों को अत्यधिक बल दिया।
4. शहरी महिला अध्यापकों ने आर्थिक एवं सामाजिक मूल्यों पर तथा ग्रामीण महिला अध्यापकों ने सौन्दर्यात्मक एवं धार्मिक मूल्यों पर अत्यधिक बल दिया।

अग्रवाल, नम्रता (1987) ने माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन में शोधकर्ता ने एल0टी0 व सी0टी0 ग्रेड के अध्यापकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन हेतु यादृच्छिकृत

विधि से 180 अध्यापकों का चयन किया। 60 सी टी ग्रेड, 60 एल टी ग्रेड व 60 लैक्चर ग्रेड के शिक्षकों का चयन किया गया। यह सभी शिक्षक जनपद बरेली के विद्यालयों में कार्यरत थे। अध्ययन हेतु डा0 वीना शाह द्वारा निर्मित मूल्य मापनी का प्रयोग किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण से निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त हुआ।

1. सी.टी. व एल.टी. ग्रेड के अध्यापक आर्थिक, धार्मिक तथा रचनात्मक मूल्यों में अन्तर रखते हैं। यह अन्तर महिला तथा पुरुष अध्यापकों के मध्य भी पाया गया।
2. लेक्चरर ग्रेड के पुरुष तथा महिला शिक्षकों में भी सामाजिक मूल्य के प्रति अन्तर पाया गया। पुरुष अध्यापक सामाजिक मूल्य पर महिला अध्यापकों से अधिक सामाजिक पाये गये।

श्रीमती भ्रामरी, ए0 (1988) ने प्राथमिक स्तर के अध्यापकों के मूल्यों पर आधुनिकता के प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन हेतु मध्य प्रदेश जनपद क 400 विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों का चयन किया। उन्होंने एस.पी. आहलूवालिया के द्वारा निर्मित मूल्य मापनी का प्रयोग किया तथा निम्नलिखित निष्कर्ष किये।

1. प्राइमरी विद्यालयों के अध्यापकों में आधुनिकता के आधार पर आर्थिक, सामाजिक और धार्मिक मूल्य अन्य अध्यापकों की अपेक्षा कम पाये गये तथा कम आधुनिक अध्यापकों में आर्थिक मूल्य अधिक पाये गये।
2. ज्यादा आधुनिक तथा औसत आधुनिक अध्यापकों में सैद्धान्तिक, सामाजिक, राजनैतिक और धार्मिक मूल्य समान पाये गये।

अमीरजन एवं थीमाप्पा (1990) के एक अध्ययन के अन्तर्गत अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन किया। परिणामस्वरूप पाया कि अनुसूचित जाति के विद्यार्थी जनजाति की अपेक्षा अधिक

मूल्यवान पाये गये, धार्मिक मूल्य अनुसूचित जाति की अपेक्षा अनुसूचित जनजाति में अधिक पाये गये।

सिंह, रघुराज (1990) ने आधुनिकता पर मूल्य के प्रभाव का अध्ययन किया। अध्ययन हेतु गोरखपुर, लखनऊ, कुमाँऊ और सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयों में अध्ययनरत कुल 300 शिक्षक प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया। आर0 एस0 पाण्डेय द्वारा निर्मित मापनी आधुनिकता के प्रति अभिवृत्ति का प्रयोग तथा मूल्य का मापन करने के लिये एस.पी. कुलश्रेष्ठ द्वारा हिन्दी में निर्मित मूल्य मापनी का प्रयोग किया तथा निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये।

1. आर्थिक व सौन्दर्यात्मक मूल्यों के बढ़ने व घटने से आधुनिकता धनात्मक रूप से प्रभावित होती है।
2. आर्थिक मूल्य के बढ़ने से सौन्दर्यात्मक मूल्य बढ़ता है।
3. आधुनिकता धार्मिक मूल्य से ऋणात्मक रूप से सम्बन्धित है।
4. अधिक धार्मिक लोगों में आधुनिकता कम पाई जाती है।
5. सैद्धान्तिक मूल्य का सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक मूल्यों के साथ विपरीत सह–सम्बन्ध दिखाई दिया।
6. सामाजिक मूल्य का राजनैतिक मूल्य आर्थिक मूल्य के साथ भी विपरीत सह सम्बन्ध स्पष्ट रूप से परिलक्षित पाया गया।

सिंह (1991) ने आधुनिकीकरण का प्राइमरी स्कूल व अध्यापकों के मूल्यों पर प्रभाविकता पर अध्ययन किया। यह अध्ययन 400 प्राइमरी स्कूलों के अध्यापकों पर किया गया। इसके लिये आहलूवालिया द्वारा निर्मित मूल्य मापनी का प्रयोग किया। इस अध्ययन के परिणामस्वरूप निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुये।

1. उच्च तथा औसत आधुनिकीकरण स्तर के अध्यापकों को निम्न आधुनिकीकरण के अध्यापकों की तुलना में सामाजिक तथा धार्मिक मूल्यों के अधिक महत्व दिया।

2. औसत आधुनिकीकरण स्तर के अध्यापकों ने उच्च औसत आधुनिकीकरण स्तर के अध्यापकों की तुलना में अधिक महत्व दिया।

3. आधुनिकीकरण के स्तर के अध्यापकों के सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक तथा राजनैतिक मूल्यों पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं देखा गया।

डा0 द्विवेदी सी0वी0 (1991) ने सांस्कृतिक मूल्य और शहरीकरण पर अध्ययन किया उन्होंने अध्ययन हेतु 754 विद्यार्थियों तथा अभिभावकों का चयन किया। तथा निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किये।

1. रूढ़िवादी व्यक्तियों ने सांस्कृतिक परम्परागत मूल्यों का समर्थन किया।
2. द्वन्द में रहने वाले व्यक्ति द्वन्द्वात्मक मूल्यों को अधिक समर्थन देते हैं।

कुमारी (1991) ने आन्ध्रप्रदेश के विभिन्न सामाजिक, आर्थिक माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का मूल्यों के सन्दर्भ में अध्ययन किया। निष्कर्षतः पाया कि मानव मूल्यों एवं सामाजिक आर्थिक स्तर में अवरोही क्रम में सीधा सम्बन्ध पाया गया। मानव मूल्यों एवं जन–संचार एक्सपोजर में सीधा धनात्मक सम्बन्ध पाया जाता है। विशेष परिस्थितियों में बढ़ते उच्च आर्थिक स्तर के साथ मूल्यों के घटने की प्रवृत्ति पायी जाती है।

वर्ग विश्लेषण यह दर्शाता है कि चार आधारभूत मूल्यों (मनुष्य मे विश्वास, निर्भरता, सौन्दर्यात्मक, ज्ञान एवं सम्मान) के अलावा सभी मूल्य दो मुख्य वर्ग में विभाजित होते हैं– 1. व्यक्तिगत, एवं 2. दूसरों के सन्दर्भ में।

कौल (1992) ने मथुरा जिले के माध्यमिक विद्यालय के महिला अध्यापकों का व्यक्तित्व कारक अत्यधिक स्वीकार्य एवं कम स्वीकार्य के सन्दर्भ में अध्ययन किया। इस अध्ययन की मुख्य उपलब्धियां निम्न प्रकार से हैं–

1. अत्यधिक स्वीकार्य अध्यापक कम स्वीकारीय अध्यापकों की तुलना में सैद्धान्तिक मूल्यों पर अत्यधिक अलग थे।
2. महिला अध्यापकों में मूल्य जैसे, आर्थिक, सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक, राजनैतिक के सन्दर्भ में अत्यधिक स्वीकारीय पर अलग नहीं थे।

राठौर (1992) ने उच्च माध्यमिक विद्यालयों तथा स्नातक विद्यालय के अध्यापकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया। उन्होंने लगभग 8 मूल्यों का अध्ययन किया तथा बीना शाह द्वारा निर्मित मूल्य वर्तनी का प्रयोग किया जिसके आधार पर उच्च माध्यमिक तथा डिग्री कालेज के अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का अध्ययन किया। इस अध्ययन की मुख्य उपलब्धियां निम्न प्रकार से हैं–

1. महिला अध्यापक जो दोनों शिक्षण स्तर से सम्बन्ध रखती है उन्होंने ज्ञान, सौन्दर्यात्मक तथा राजनैतिक मूल्यों पर जोर दिया।
2. डिग्री कालेज के अध्यापकों ने ज्ञान और सौन्दर्यात्मक मूल्यों पर अत्यधिक महत्व दिया, जबकि उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों ने राजनैतिक मूल्यों पर महत्व दिया।

वर्मा (1993) ने सामाजिक लाभान्वित एवं सामाजिक अलाभान्वित विद्यार्थियों का मूल्यों के सन्दर्भ में अध्ययन किया। निष्कर्ष स्वरूप पाया कि लाभान्वित वर्ग अलाभान्वित वर्ग की अपेक्षा सामाजिक एवं राजनैतिक मूल्यों को अधिक महत्व देता है जबकि सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक एवं राजनैतिक मूल्यों पर उक्त दोनों वर्गो के विद्यार्थियों में कोई सीधा अन्तर नहीं पाया गया।

2.2 सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन :–

- **शोध एवं लेख विदेश में–**

वेटर ने (1930–1931) में विश्वविद्यालय के 1200 छात्रों पर विभिन्न परीक्षणों जैसे वेटर सोशियो पॉलिटीकल एट्टीट्यूड, बुडवर्थ पी.डी. शीट, थार्नडाईक इन्टेलीजेन्स एग्जामिनेशन, वोटिस एडवान्सड एग्जामिनेशन, आलपोर्ट ए.एस. टेस्ट, लायर्ड सी. टेस्ट, कैन्ट रोजन ऑफ टेस्ट और सब्जेक्टिविटी टेस्ट के द्वारा सामाजिक आर्थिक मूल्यों और व्यक्तित्व के विभिन्न गुणों के सम्बन्धों का अध्ययन किया। परीक्षणों के परिणामस्वरूप रूढ़िवादियों की तुलना में प्रगतिशील ज्यादा बुद्धिमान, ज्यादा अन्तर्मुखी और ज्यादा व्यक्तिनिष्ठता रखने वाले पाए गए। रूढ़िवादी महिलाओं की तुलना में प्रगतिशील महिलाएं ज्यादा प्रभावोत्कर्ष पायी गयी हैं।

एडोर्ने और साथियों द्वारा (1950) में इस क्षेत्र में एक अग्रणी कार्य किया गया। इनके शोध मुख्यतः इस परिकल्पना के द्वारा निर्देशित थे कि अगर किसी व्यक्ति के राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक मूल्यों को एक माला में बांधा जाए तो यह माला उसके व्यक्तित्व की अर्न्तनिहित प्रवृत्ति की उक्ति होगी।

अधिकार वादिता का मापन करने के लिये एक स्केल की रचना की गयी जिसमें अनेक चरों को शामिल किया गया जैसे रूढ़िवादिता, अधिकारवाद, स्वतः उत्पन्न आक्रमणशीलता, संदेहात्मकता, रूढ़िबद्ध, धारणशक्ति तथा दृढ़ता, विनाशिता, दोषदर्शिता प्रवृत्ति माना गया जो कि किसी प्रगतिशील क्रम की एकरूपता में स्वयं को लोकनीति तथा उसके साथ–साथ विस्तृत रूप से मनोवैज्ञानिक ढंग से सम्बद्ध विचारों तथा दृष्टिकोणों की सतह पर व्यक्ति करता है।

इन चरों के विषय में यह माना गया है कि यह तो एकमात्र लक्षण समष्टि की रचना करते हैं, जो कि उसे अप्रजातान्त्रिक प्रचार व्यवस्था को ग्राह्म बनाने के लिये अनुवादित करते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि यह स्केल क्रियाशील या सक्रिय अप्रजातान्त्रिक व्यक्तित्व का मापन करने का प्रयास करता है। अंधविश्वास और रूढ़िवादी मूल्यों के मध्य सहसम्बन्ध धनात्मक पाया गया तथा मानव वंश वादिता पैमाना दिया गया और एफ0 पर गणनाऐं .075 का सहसम्बन्ध दर्शाती है जो अन्य पैमाने की तुलना में अधिक सही मानी जाती है।

विभिन्न साक्षात्कारों के परिणामों से स्पष्ट होता है कि बहुत अधिक अंधविश्वासी व्यक्ति बहुत कम अंधविश्वासी व्यक्तियों की तुलना में व्यक्तित्व के अनेक मूल्यों में भिन्नता प्रदर्शित करते हैं।

सौनई एम0 (1952) ने सामाजिक मूल्यों के विभिन्न व्यक्तित्व सहसम्बन्धों के क्षेत्र में कार्य करते हुए 1952 में विश्वविद्यालय की विस्तार पाठ्यक्रम कक्षाओं के 250 छात्र तथा छात्राओं पर निम्नलिखित परीक्षण किये।

(अ) वर्ट एन0आई0पी0 ग्रुप 33 इन्टेलीजेन्स टेस्ट (ब) शॉर्ट फॉर्म ऑफ थर्मटन न्यूरोटिक इन्वेंटरी (स) नेमन कॉलिस्टिड टेस्ट ऑफ इन्ट्रोवर्जन तथा एकस्ट्रोवर्जन (द) आलपोर्ट ली एसेडेन्स सबमिशन रिएक्शन स्टडी (य) आलपोर्ट बर्मन्स टेस्ट एटीट्यूड्स और रेटिंग्स आवेन्ड ऑन सेवन मूल्य टेस्ट बुद्धिमत्ता और प्रगतिवादिता के बीच सहसम्बन्ध 154 को अमहत्वपूर्ण पाया गया और ये पहले से प्राप्त निष्कर्षों को समर्थन नहीं कर सका। अरोहणीय आत्मसर्मपण, भावानात्मक समायोजन और अर्न्तमुखिता जिन्हें कि व्यक्तित्व परीक्षणों द्वारा आंका गया, प्रगतिवादिता के साथ कोई महत्वपूर्ण सहसम्बन्ध दर्शाने में असफल रहे। प्रगतिवादिता और धार्मिक मूल्यों के मध्य एक उच्च सहसम्बन्ध जो कि 513 से 566 के बीच था पाया गया। प्रगतिवादिता और भावात्मकता

निर्धारण के मध्य एक उच्च सहसम्बन्ध जो 289 था पाया गया तथा प्रगतिवादिता तथा अन्तमुखिता के मध्य भी उच्च सहसम्बन्ध जो कि 257 था पाया गया। अन्य प्रभावों के साथ अध्ययन में यह भी पाया गया कि धार्मिक रूढ़िवादिता, राजनैतिक और सामाजिक रूढ़िवादिता के साथ–साथ चलती है।

रूविन, ग्रेस व रैबसन (1954) ने मूल्यों के विभिन्न सहसम्बन्धों का अध्ययन करते हुए 69 वयस्कों पर हटर्स टेस्ट ऑफ सोशनल वेल्यू ओटिस एस0ए0 टेस्ट ऑफ रिलिजियस वेल्यू एवं ढोलीवेबवासलर एडल्ट वेल्यू का प्रतिपादन किया। उदार दृष्टिकोण तथा बुद्धिकोण तथा बुद्धिमता कें मध्य महत्वपूर्ण धनात्मक निर्भरता पायी गयी। लेकिन व्यक्तिगत के दूसरे गुणों और उदारता के मध्य जिस धनात्मक सम्बन्ध का अनुमान किया गया था वह नहीं पाया गया।

न्यूकॉम ने (1961) में इस क्षेत्र में उपयोगी कार्य किया है। उन्होंने प्रश्न उठाया कि विद्यार्थी समुदाय के वो कौन से व्यक्तिगत लक्षण हैं, जो उन सामाजिक रिश्तों का निर्धारण करते हैं जो कि अन्त में सामाजिक परिवर्तन की तरफ मुड़ते हैं उन्होंने अपने अध्ययन के आधार का निर्धारण तीन तरह से प्राप्त आंकड़ों के आधार पर किया।

1. किसी व्यक्ति विशेष के बारे में उपलब्ध लिखित आंकड़ों से।
2. महाविद्यालयों और कार्यालयों में प्रविष्ट विद्यार्थियों से।
3. व्यक्तिगत साक्षात्कार से।

इस अध्ययन के द्वारा पता चलता है कि वे व्यक्ति जो राजनीति और आर्थिक आधार पर सबसे नीचे हैं, सैद्धान्तिक और सामाजिक मूल्यों में कुछ ऊपर है और सामाजिक और आर्थिक मूल्यों में उनसे नीचे है जो कि पी0ई0पी0 स्केल पर सबसे ऊपर है। संकायों और दूसरे विद्यार्थियों के निर्णयों के आधार पर ये वार्तालाप मुख्य रूप से अस्वीकृत है।

पेराइन (1966) ने सांसारिक मूल्य विस्तार को मापने के लिये महाविद्यालय की 107 छात्राओं पर सामाजिक मूल्य पैमाने का प्रतिपादन किया। प्राप्त हुई गणनाओं को व्यक्तित्व के 26 गुणों के साथ सम्बद्ध किया गया। पेराइन अपने अध्ययन के परिणामस्वरूप यह इंगित करते हैं कि प्रत्येक सांसारिक बुद्धिमान व्यक्ति ज्यादा अनुकूलित, बर्हिमुखी, दूसरों पर र्निभर तथा अन्तः व्यक्तिगत सम्बन्धों को अधिक मूल्य देने वाले होते हैं। वास्तविकता विरोधी के रूप में तथा प्रत्यक्ष वस्तु सम्बन्धी व गैर सांसारिक बुद्धिमता रखने वाले व्यक्ति और स्व-केन्द्रित वास्तविक पारितोषिक चाहने वाले, दृढ़ तथा दूसरे व्यक्तियों के साथ अनुकूलित व्यवहार न करने वाले अधिक रूढ़िवादी पाए गये। प्रति सांसारिक बुद्धिमान व्यक्ति उस पैमाने से जो कि सामाजिकता, मौलिक वैचारिकता, परोपकारिता तथा सौन्दर्यात्मिक मूल्य दिखाते हैं धनात्मक रूप से सम्बन्धित पाये गये। प्रति सांसारिक बुद्धिमत्ता दृष्टिकोण उन पैमानों से जो कि जिम्मेदारी, आर्थिक मूल्य, प्रभाविकता, दृढ़ विश्वास, पहचान, व्यक्तिगत सम्बन्ध तथा सचेतता दिखाते हैं विपरीत रूप से सम्बन्धित पाए गए।

स्मिथ ने (1967) में असमविन्यास के कुछ तथ्यों की छानबीन करने के लिए 28 मल्टीनेशनल वेल्यू स्केल का निर्माण किया। इसमें दो समूह अनुकूलन करने वाले तथा स्वतन्त्र विद्रोही रखे गये। जिसमें युगकालीन 162 स्नातक पुरूष स्कूली विद्यार्थी लिये गये। अनुकूलन करने वाले व विद्रोही सामाजिक नार्म को समझने का पक्ष करने वाले। जो कुछ का पक्ष रख रहे थे तथा कुछ का विरोध कर रहे थे क्योंकि वे थोड़ा या बहुत एक्सपालिसाइट व इम्लीसाइड स्तर पर प्रमाणित थे। इसके सामाजीकरण उपलब्धि ज्ञाता, जो तीन समूहों में बंटे हैं तीनों ही स्केल में स्वतंत्र ऊंचा स्तर रखते हैं तथा ज्ञातता मध्य तथा विद्रोही निम्न अंक पाये गये।

बलमुची, जे.पी. (1970) ने प्रशिक्षण कार्यक्रम के विकास के सन्दर्भ में मूल्यों के महत्व का अध्ययन किया। अध्ययन के अन्तर्गत दूसरे पक्ष के मूल्यों का परफोरमेन्स

के सन्दर्भ में प्रिडिक्सन था। परिणामतः पाया कि कोई भी मूल्य प्रशिक्षण प्राप्तांक से सीधा सम्बन्ध नहीं रखता है।

वाल्कर, पी.जी. (1970) ने पारम्परिक मूल्यों का धार्मिक गतिविधियों, सामाजिक–आर्थिक स्तर, कैरियर के चुनाव, दसवीं कक्षा के पाठ्यक्रम की सामाजिक उपलब्धि एवं अन्य विशिष्ट व्यवहारों के सन्दर्भ में अध्ययन किया परिणाम निम्न प्रकार से हैं–

1. निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर पर भी सभी विद्यालयों के वरिष्ठ छात्रों ने उच्च आर्थिक स्तर के वरिष्ठ छात्रों की अपेक्षा पारम्परिक मूल्यों का अधिक महत्व दिया।
2. उच्च कैरियर का चुनाव करने वाले विद्यार्थियों ने निम्न कैरियर चुनाव करने वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा पारम्परिक मूल्यों को अधिक महत्व दिया।
3. उच्च शैक्षिक उपलब्धता वाले विद्यार्थियों ने कम शैक्षिक उपलब्धता वाले विद्यार्थियों की अपेक्षा पारम्परिक मूल्यों को अधिक महत्व दिया।
4. पुरूष एवं महिला वर्ग के विद्यार्थियों में मूल्यों पर सम्बन्धित अन्तर नहीं पाया गया।

मेंहरयार (1970) में मूल्यों और स्पर्श बुद्धिमत्ता के मध्य सम्बन्धों की परिकल्पना को अप्रमाणिक बनाने के लिये एक प्रयास किया। दक्षिणी ईरान के एक विश्वविद्यालय के तृतीय वर्ष के 450 छात्रों में से 69 छात्र तथा छात्रांए अनियत प्रतिदर्श के द्वारा चुने गये। परीक्षण के परिणाम आइजनेक की मुख्य परिकल्पना टी तथा 7 के मध्य सम्बन्ध का समर्थन करने में असफल रहे। परिचर बुद्धिमत्ता को आर्थिक तथा सामाजिक मूल्यों के साथ सह–सम्बन्धित किया गया। प्रगतिवादिता सौन्दर्यात्मक मूल्यों के साथ महत्वपूर्ण

सम्बन्ध रखती है तथा बहिर्मुखता राजनैतिक मूल्यों के साथ महत्वपूर्ण सम्बन्ध रखती है।

डेविडसन, आर.ए. (1970) ने खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ियों के व्यक्तिगत गुणों का मूल्यों के सन्दर्भ में अध्ययन किया। परिणामस्वरूप पाया कि मूल्यों के वर्गीकरण के सन्दर्भ में खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी विद्यार्थियों के मध्य कोई अन्तर नहीं पाया गया।

नेलसन, अनिता (1971) ने यू0एस0ए0 में शारीरिक शिक्षा शिक्षकों का मूल्यों के सन्दर्भ में अध्ययन किया तथा पाया कि महिला तथा पुरूष शिक्षकों में छः मूल्यों में चार मूल्यों का अन्तर पाया गया। पुरूष शिक्षकों ने सैद्धान्तिक, आर्थिक एवं राजनैतिक मूल्यों को महत्व दिया जबकि महिला शिक्षकों ने सौन्दर्यात्मक मूल्य पर अत्यधिक महत्व दिया।

एस0एच0, जैकब (1972) ने शिक्षा के विपरीत वर्गो के अन्तर्गत मूल्यों के तंत्र के सम्बन्ध में दो वर्गो का अध्ययन किया (1) उच्च अंग्रेजी तथा निम्न गणित (2) उच्च गणित तथा निम्न अंग्रेजी में सैद्धान्तिक मूल्य पर अन्तर पाया गया जबकि अन्य किसी भी प्रकार के मूल्य पर दोनों वर्ग सामान्य सन्तुष्टि स्तर पर पाये गये।

आइजनेक तथा **काउटर (1972)** में ब्रिटिश कम्यूनिस्ट फासिस्ट एवं सामान्य विचार धारा के व्यक्तियों, सामाजिक परिवर्तन के दृष्टिकोण की सूचियों तथा व्यक्तित्व मूल्यों की सूचियों पर एक अध्ययन का निष्कर्ष निकाला। कम्यूनिस्ट फासिस्ट नियन्त्रण की तुलना में अधिक स्पर्श बुद्धिमानी, प्रामाणिक दृढ़ तथा अधिक महत्वपूर्ण पाये गए। कम्युनिस्ट नियन्त्रण की तुलना में अधिक प्रगतिशील थे तथा फासिस्ट अधिक रूढ़िवादी थे। ये निष्कर्ष निकाला गया कि सामाजिक परिवर्तन के दृष्टिकोण व्यक्तित्व की सम्पूर्ण संरचना में अत्यधिक रूप से सम्बन्धित होता है न कि रिक्त पाया जाता है।

ब्रुवोल्ड (1973) ने मूल्यों और व्यवहार का दृष्टिकोण युग्म सम्बन्ध खोजा। दोनों विश्वास तथा व्यवहार दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण रूप से सहसम्बन्धित पाए गए।

मिलर, एच0 (1975) ने प्रक्रिया प्रदत्त तथा उत्पादन प्रदत्त अध्यापकों का उनके व्यक्तित्व एवं मूल्यों के सन्दर्भ में अध्ययन किया और पाया कि प्रक्रिया प्रदत्त अध्यापक व्यक्तित्व मूल्यों पर उच्चता रखते हैं तथा उत्पादन प्रदत्त अध्यापकों नें एस0पी0वी0 को अधिक महत्व दिया। गार्डन के इन्टर पर्सनल वेल्यू पर दोनों वर्गो की तुलना करने पर प्रक्रिया प्रदत्त एस0आई0वी0 पर उच्च तथा उत्पादन प्रदत्त अध्यापक एस0आई0वी0 कन्फरमेटी पर उच्च पाये गये।

सालुजा (1976) ने विभिन्न पाठ्यक्रम वाले विद्यार्थियों के सन्दर्भ में मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया परिणामस्वरूप यह पाया कि वाणिज्य और नानवाणिज्य वर्ग के विद्यार्थियों में क्रमशः व्यवहारिक एवं नैतिक मूल्य अधिक पाये गये। एक ही पाठ्यक्रम के महिला एवं पुरूष विद्यार्थियों में मूलभूत मूल्यों में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

वाल्टर, डिगवैल (1976) ने शिक्षा के तीन स्तर प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक स्तर के अध्यापकों का शिक्षण प्रक्रिया तथा मूल्यों के सन्दर्भ मे अध्ययन किया और पाया कि शिक्षण के विभिन्न स्तरों पर शिक्षण की प्रक्रिया एवं मूल्यों में घनिष्ठ सम्बन्ध है। अध्यापक निर्देशन, शैक्षिक अव्यवस्थापन, विद्यार्थी स्वीकारोक्ति, व्यक्तिगत समायोजन, और आदर्श विचारधारा में विभिन्न शैक्षिक स्तर पर प्रक्रिया एवं मूल्यों में अन्तर पाया गया।

ह्लेनसन (1976) ने मूल्य और दृष्टिकोण चरमपंथिता के मध्य एक सम्बन्ध दिया। कुछ अध्ययनों के द्वारा यह बताया गया कि उग्रवादियों या चरमपंथियों में एक

समान स्तर के मूल्य भी पाये गये लेकिन अमेरिका के महाविद्यालयों के छात्रों पर किये गये कुछ परीक्षणों ने विरोधाभासी परिणाम दिए।

सनी, महाविद्यालय के समाजशास्त्र तथा शिक्षा मनोविज्ञान के क्रमशः 21 तथा 48 छात्रों के प्रतिदर्श से आँकड़े एकत्रित किए गए। इन आँकड़ों की व्याख्या करने पर ये शोध के इस तर्क को गलत साबित करते हुए पाए गए कि मूल्य वैचारिकता, स्थान, व्यक्ति की तुलना में स्थान की चरमपंथिता से सम्बन्धित है।

मोरे और चैने ने एक परिकल्पना दी कि हांगकांग के 1123 युवाओं जिनकी आयु 15 से 26 वर्ष के मध्य है के विभिन्न शैक्षिक अनुभव कथन की अनुक्रिया के प्रकारों जो कि आधुनिक और परम्परागत मूल्यों को प्रदर्शित करते हैं से सम्बन्ध होंगे। यह पाया गया कि उच्च शिक्षित युवा कम शिक्षित युवाओं की तुलना में ज्यादा आधुनिक थे।

जे0ए0 गोल्ड और एम0ए0 रोबिनसन (1976) ने दृष्टिकोण और मूल्यों के पद सोपान एकत्रित प्रतिरूप ह्यारकिकल स्ट्रेज मॉडल की पुष्टि की। विश्वविद्यालय के 24 महिला और पुरूष छात्रों में 8 वॉइस रिएक्शन टर्म नमूने के प्रयोग के साथ अनुक्रिया की।

धनात्मक मूल्य, ऋणात्मक मूल्य की तुलना में अधिक तेजी से अनुक्रित पाए गए। प्रतिक्रिया के समय आ0टी0 के मूल्य आगे आने वाले दृष्टिकोण कार्यक्रमों के साथ उनके सम्बन्ध में अनुपात में परिवर्तित नहीं होते। कोई प्रतिक्रिया समय प्रभाव, दृष्टिकोण कार्यक्रम युग्म के अनुरूप या प्रतिरूप नहीं पायी गयी।

जेम्स, ऐलन (1977) ने समुदाय विद्यार्थियों एवं रेजिडेंट विद्यालयों का मूल्य के सन्दर्भ में अध्ययन किया। निष्कर्षतः पाया कि रेजिडेन्शियल विद्यार्थी किसी अन्य

वर्ग की अपेक्षा सामाजिक मूल्य पर उच्च पाये गये कोम्युनिटी विद्यार्थी सैद्धान्तिक एवं आर्थिक मूल्यों पर तथा दोनों वर्ग के विद्यार्थी सौन्दर्यात्मक मूल्य पर उच्च पाये गये। जबकि लड़कों और लड़कियों में सभी मूल्यों पर तथा लड़कियों में भी सभी मूल्यों पर अन्तर पाया गया। लड़कों ने सैद्धान्तिक, आर्थिक एवं राजनैतिक मूल्यों पर तथा लड़कियों से सौन्दर्यात्मक, सामाजिक तथा धार्मिक मूल्यों को महत्व दिया।

रोसालयन्डे, के० सोबल (1977) ने कालिज के विद्यार्थियों में मूल्य बदलाव का अध्यापकों के मूल्य स्थायित्व के सन्दर्भ में अध्ययन किया। परिणामस्वरूप पाया गया कि विद्यार्थियों में सभी मूल्यों पर बहुत कम समय में बदलने की प्रवृत्ति होती है आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक मूल्यों पर विशेष रूप से लेकिन अध्यापकों के सन्दर्भ में सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक एवं सामाजिक मूल्यों पर विद्यार्थियों में अधिक स्थायित्व पाया गया।

ईगन (मई 1977) ने व्यस्क विद्यार्थियों के सन्दर्भ में मूल्यों का अध्ययन किया तथा पाया कि कालिज वातावरण व्यस्कों के मूल्यों पर प्रभाव डालता है। लेकिन कुछ मूल्य समय के अनुसार ही बदलते हैं। 31-40 वर्ष की आयु के विद्यार्थियों के आर्थिक एवं राजनैतिक मूल्य धार्मिक मूल्य की अपेक्षा उच्च पाये गये। महिला विद्यार्थियों ने सामाजिक एवं राजनैतिक मूल्य की अपेक्षा सैद्धान्तिक मूल्यों को अधिक महत्व दिया।

पोटिरि फ्लेमी, जेम्स (1977) ने भारतीय माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 10 के भारतीय विद्यार्थियों एवं विदेशी अध्यापकों का मूल्य के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया। परिणामस्वरूप पाया कि सैद्धान्तिक, आर्थिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक तथा राजनैतिक मूल्यों पर विद्यार्थियों एवं अध्यापकों में कोई अन्तर नहीं है। परन्तु .05 स्तर पर धार्मिक मूल्यों में अन्तर पाया गया।

जोसेफ डेनियल, कर्जन (1978) ने एक अध्ययन स्वरूप पाया कि सामुदायिक कालिज के विद्यार्थियों, वरिष्ठ नागरिक एवं व्यवस्थापकों मे मूल्य उच्च पाये गये जबकि विद्यार्थी अधिष्ठाता, काउन्सलर तथा निर्देशक आदि मूल्यों पर उदार पाये गये।

जान, विस्को (1978) ने एक अध्ययन के पश्चात पाया कि विभिन्न कोर्स में सफलता प्राप्त विद्यार्थी विभिन्न मूल्यों से सम्बन्धित होते हैं। तथा एक ही कोर्स के असफल तथा सफल विद्यार्थी भी सभी मूल्यों पर समानता रखते हैं।

बरनार्ड, कालर (1978) ने विभिन्न समुदाय से सम्बन्धित विद्यार्थियों का मूल्य के सम्बन्ध में अध्ययन किया और पाया कि दसवी कक्षा के विद्यार्थी जो कि विभिन्न सन्दर्भों में एक दूसरे पर आश्रित समुदायों से सम्बन्धित है वे मूल्यों पर विभिन्नता रखते हैं। जब विद्यार्थियों को पुरूष तथा महिला छोटे वर्गो में बांटा गया तो अलग अलग वरीयता पायी गयी जब विद्यार्थियों को माता-पिता को शिक्षा के स्तर पर वर्ग बनाकर देखा गया तो मूल्यों में अन्तर पाया गया। विद्यार्थियों में व्यवसायिक शिक्षा के सन्दर्भ मे भी मूल्य अन्तर पाया गया।

गारबर, डाबसन (1978) ने प्रौढ़ शिक्षा के शिक्षक, व्यवस्थापक, विद्यार्थी एवं समुदाय के सदस्यों का मूल्यों के सन्दर्भ में अध्ययन किया और पाया कि महिला एवं पुरूष, मूल्यों और समानता पर बहुत समानता रखते हैं। वह मूल्य जो कि पारिवेशिक विभिन्नता पैदा करते हैं उनको श्वेतों की अपेक्षा अन्य वर्गो द्वारा प्राथमिकता दी गयी है।

ऐलिजाबेथ, स्वीटी (1979) ने विभिन्न संस्कृतियों के विद्यार्थियों का मूल्य के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया तथा पाया कि व्यवहार निर्धारण में संस्कृति और सामाजीकरण का प्रबल महत्व है। प्रमुख छः मूल्यो पर श्वेत एवं अश्वेत विद्यार्थियों में

अन्तर पाया गया। पुरूष तथा महिला विद्यार्थी भी संस्कृति के सन्दर्भ में विभिन्न मूल्यों पर अलग-अलग पाये गये।

रहिनोल्टस (1979) ने प्रशिक्षित शिक्षक एवं विभिन्न संस्थाओं में कार्यरत शिक्षकों का मूल्य के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया एवं पाया कि प्रशिक्षित शिक्षक कार्यरत शिक्षकों की अपेक्षा आर्थिक मूल्य को अत्यधिक महत्व देते हैं। कार्यरत शिक्षक, प्रशिक्षित शिक्षकों की अपेक्षा सामाजिक एवं धार्मिक मूल्यों पर उच्च पाये गये।

हेनरी, इवन्स (1979) ने अमेरिका में अमेरिकन भारतीय कालिज के विद्यार्थियों का मूल्यों के ओरिएन्टेशन के सन्दर्भ में अध्ययन किया और पाया कि भारतीय तथा अमरीकी भारतीय विद्यार्थी मूल्य ओरियेन्टेशन के सन्दर्भ मे विभिन्नता रखते हैं।

ऐलिस (1979) ने अन्तःसेवा कार्यक्रम तथा प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बदलाव के सन्दर्भ में एक सम्बन्धात्मक अध्ययन किया। उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि अन्तःसेवा कार्यक्रम में बदलाव हेतु अध्यापकों को उच्च मूल्य तत्काल रखना चाहिए जिसमें कि आर्थिक एवं सामाजिक मूल्य अधिक महत्वपूर्ण पाये गये। उन्होंने यह भी पाया कि सैद्धान्तिक, आर्थिक एवं राजनैतिक मूल्यों पर महिला एवं पुरूष भिन्नता रखते हैं।

डेविड, वांग (1979) ने एक ही वर्ग के अध्यापकों का मूल्यों एवं नेतृत्व के सन्दर्भ के अध्ययन किया और निष्कर्ष स्वरूप पाया कि बाईबल, ह्यूमिनीटीज, साईन्स तथा वोकेशनल अध्यापक मूल्यों पर विभिन्नता रखते हैं।

महिला वर्ग के अध्यापक सौन्दर्यात्मक एवं सामाजिक मूल्यों पर उच्च तथा सैद्धान्तिक एवं राजनैतिक मूल्यों पर निम्न पाये गये।

जान, रास (1980) ने खिलाड़ी एवं गैर खिलाड़ी व्यक्तियों का मूल्यों के सन्दर्भ में तुलनात्मक अध्ययन किया। निष्कर्ष मे पाया कि खिलाड़ी वर्ग ने राष्ट्र सुरक्षा, जीवन आनन्दित, जीवन प्रबलता तथा भौतिक उद्देश्यो से सन्दर्भित मूल्यों को उच्च्व स्थान दिया। इसके साथ उन्होंने परिवार सुरक्षा, महत्वाकांक्षा, आज्ञाकारी एवं आत्म संयम पर भी जोर दिया जबकि गैर खिलाड़ी वर्ग ने अर्न्तसौहार्द, सत्यनिष्ठता, माफी एवं शैक्षिक उपलब्धियों को सर्वोच्च्व स्थान दिया।

2.2 सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन :–

● शोध एवं लेख उत्तर प्रदेश में –

शोद्यार्थी के संज्ञान में उ.प्र. में प्रस्तुत शोध विषय पर कोई कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है।

प्रस्तुत शोध से तुलना एवं सामान्यीकरण –

प्रस्तुत शोध में जो शोध उद्देश्य तथा विधि का अनुसरण किया गया है और जो शोध प्रबन्ध साहित्य के पुनरावलोकन हेतु सन्दर्भित किये गये हैं। उनमें कुछ में सामान्यता है और कुछ शोधों में इन आयामों पर विभिन्नता पायी गयी है। प्रयुक्त सांख्यिकी के आधार पर जो परिणाम ज्ञात किये गये हैं वह भी परस्पर भिन्नता रखते हैं, अतएवं यह नि:संदेह कहा जा सकता है कि इस विषय पर कहीं भी कोई कार्य सम्पन्न नहीं हुआ है।

अध्याय–3

अध्ययन की रूपरेखा

तृतीय अध्याय

अध्ययन की रूपरेखा

शोध समस्या के चयन उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं को निश्चित करने के पश्चात शोध कार्य की अन्तिम परिणति हेतु शोध प्रणालियों, प्रविधियों एवं उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों के चुनाव की आवश्यकता पड़ती है। प्रत्येक प्रकार का अनुसंधान एवं विशेष प्रकृति की समस्या का वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करता है। अनुसंधान की रूपरेखा एक क्रमवद्ध एवं पूर्ण नियोजित योजना होती है जो कि अनुसंधान कार्य में प्रयुक्त सम्पूर्ण विधाओं की विधि एवं कार्यों की प्रक्रियाओं को स्पष्ट एवं सरल रूप में प्रस्तुत करती है तथा निर्धारित प्रक्रिया के निश्चित दिशा में गतिशील होने में सहायता तथा निर्देशन प्रदान करती है । प्रस्तुत अध्याय में जनसंख्या, न्यादर्श, परिसीमन, उपकरण तथा आंकड़ों के संकलन का उल्लेख किया गया है जो कि अध्याय की प्रकृति तथा रूपरेखा का उल्लेख करता है।

3.1 कार्यविधि :

शोध विधि का निश्चय, शोध अध्ययन के उद्देश्य प्रकृति तथा संसाधनों पर निर्भर करता है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर वर्तमान अध्ययन हेतु शोध की सर्वेक्षण विधि का चुनाव किया गया है। प्रस्तुत शोध में शोध की सर्वेक्षण विधि को आधार मानकर कार्य किया गया है, अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का मनोवैज्ञानिक, सामाजिक अन्र्तसम्बन्धों का मूल्यों के सन्दर्भ में अध्ययन करना है। सर्वेक्षण शोध द्वारा शोधकर्ता ने चरों के विभिन्न मूल्य सम्बन्धों उनके विस्तारण एवं प्रसार का अध्ययन प्रायोगिक स्थिति में किया।

3.1 (अ) जनसंख्या : प्रस्तुत शोध अध्ययन में उत्तर प्रदेश के चित्रकूट–धाम मण्डल के अन्तर्गत, बाँदा एवं चित्रकूट (कर्वी) जिलों के प्राथमिक स्तर के विभिन्न विद्यालयों के अध्यापकों को सम्मिलित किया गया है। अन्वेषिका द्वारा प्राथमिक स्तर पर विभिन्न प्रकार के विद्यालयों सरकारी, गैर सरकारी तथा सरस्वती शिशु मंदिर के लगभग 300 अध्यापकों का चयन प्रस्तुत अध्ययन हेतु किया गया।

3.1 (ब) शोध न्यादर्श : न्यादर्श किसी जनसंख्या का वह भाग है जो कि अध्ययन हेतु चयनित किया जाता है तथा वह अपनी प्रकृति, स्वभाव एवं गुणों में जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करता है। प्रस्तुत शोध में अन्वेषिका द्वारा यादृच्छिकृत स्तरीकृत विधि का न्यादर्श के चयन हेतु प्रयोग किया गया जिसके अन्तर्गत जनसंख्या को विभिन्न स्तर पर विशेषताओं के आधार पर वर्गो मे विभाजित करते हुए विभिन्न वर्गो से न्यादर्श का चयन यादृच्छिकृत विधि द्वारा किया गया। शोध अध्ययन हेतु जनसंख्या (300 अध्यापकों) को विभिन्न वर्गो में विभाजित किया गया (सरकारी, गैर सरकारी एवं सरस्वती शिशु मंदिर) प्रत्येक में से 100 अध्यापकों का चयन यादृच्छिकृत विधि द्वारा किया गया।

बाँदा जनपद से चयनित सरकारी प्राथमिक विद्यालयः–

तालिका संख्या–1 आयु वर्ग के आधार पर

क्र.सं.	विद्यालय	40 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षक	40 वर्षसे अधिक आयु वाले शिक्षक	कुल योग
1.	प्राथमिक विद्यालय अतर्रा प्राचीन (बाँदा)	2	1	3
2.	प्राथमिक विद्यालय अवस्थी आश्रम अतर्रा (बाँदा)	2	2	4
3.	प्राथमिक विद्यालय नगर क्षेत्र अतर्रा (बाँदा)	1	1	2
4.	प्राथमिक विद्यालय लाल थोक अतर्रा (बाँदा)	2	1	3
5.	प्राथमिक विद्यालय सुलक थोक अतर्रा (बाँदा)	2	1	2
6.	प्राथमिक विद्यालय शंकर पुरवा अतर्रा (बाँदा)	2	3	5
7.	प्राथमिक विद्यालय सतउवा पुरवा अतर्रा(बाँदा)	2	2	4
	कुल योग			**24**

तालिका संख्या–2 वरिष्ठतम एवं कनिष्ठता के आधार पर

क्र.सं.	विद्यालय	वरिष्ठ शिक्षक	कनिष्ठ शिक्षक	कुल योग
1.	प्राथमिक विद्यालय महोतरा (बाँदा)	2	2	4
2.	प्राथमिक विद्यालय इटरी रूरल, (बाँदा)	3	3	6
3.	प्राथमिक विद्यालय गरगना पुरवा (बाँदा)	2	2	4
4.	प्राथमिक विद्यालय राजाराम चौरिहा का पुरवा (बाँदा)	2	2	4
5.	प्राथमिक विद्यालय पचोखर–। (बाँदा)	2	2	4
6.	प्राथमिक विद्यालय मुरलिया का पुरवा (बाँदा)	1	3	4
	कुल योग			24

बाँदा जनपद से चयनित निजी प्राथमिक विद्यालयः–

तालिका संख्या–3 आयु वर्ग के आधार पर

क्र.सं.	विद्यालय	40 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षक	40 वर्षसे अधिक आयु वाले शिक्षक	कुल योग
1.	सरस्वती शिशु मन्दिर अतर्रा (बाँदा)	2	3	5
2.	सरस्वती विद्या मन्दिर अतर्रा (बाँदा)	2	2	4
3.	नेहरू कान्वेन्ट अतर्रा (बाँदा)	3	3	6
4.	ज्ञानान्जली विद्या मंदिर अतर्रा (बाँदा)	3	2	5
5.	वत्सल कान्वेन्ट स्कूल अतर्रा (बाँदा)	2	2	4
	कुल योग			24

तालिका संख्या–4 वरिष्ठतम एवं कनिष्ठता के आधार पर

क्र.सं.	विद्यालय	वरिष्ठ शिक्षक	कनिष्ठ शिक्षक	कुल योग
1.	मेमोरियल स्कूल, अतर्रा (बाँदा)	1	3	4
2.	तुलसी फ्लावर गार्डेन अतर्रा (बाँदा)	3	3	6
3.	जनता जूनियर हाईस्कूल अतर्रा (बाँदा)	2	2	4
4.	जॉनमिल्टन एजुकेशनल सेंटर अतर्रा (बाँदा)	3	3	6
5.	ब्रह्मविज्ञान शिशु सदन अतर्रा (बाँदा)	3	3	6
	कुल योग			24

तालिका संख्या–5 आयु वर्ग के आधार पर

क्र.सं.	विद्यालय	40 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षक	40 वर्षसे अधिक आयु वाले शिक्षक	कुल योग
1.	सरस्वती शिशु मन्दिर अतर्रा (बाँदा)	3	2	5
2.	सरस्वती विद्या मन्दिर अतर्रा (बाँदा)	3	3	6
3.	सरस्वती शिशु मन्दिर बाँदा (बाँदा)	4	5	9
4.	सरस्वती विद्या मन्दिर खुरहण्ड (बाँदा)	2	3	5
	कुल योग			25

तालिका संख्या–6 वरिष्ठतम एवं कनिष्ठता के आधार पर

क्र.सं.	विद्यालय	वरिष्ठ शिक्षक	कनिष्ठ शिक्षक	कुल योग
1.	सरस्वती शिशु मन्दिर नरैनी (बाँदा)	3	3	6
2.	सरस्वती मन्दिर बदौसा (बाँदा)	3	4	7
3.	सरस्वती शिशु मन्दिर बिसण्डा (बाँदा)	4	3	7
4.	सरस्वती शिशु मन्दिर बबेरू (बाँदा)	3	2	5
	कुल योग			25

तालिका संख्या–7 वरिष्ठतम एवं कनिष्ठता के आधार पर

क्र.सं.	विद्यालय	40 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षक	40 वर्षसे अधिक आयु वाले शिक्षक	कुल योग
1.	प्राथमिक विद्यालय रानीपुर भट्ट, कर्वी	2	2	4
2.	प्राथमिक विद्यालय खाती, कर्वी	2	3	5
3.	प्राथमिक विद्यालय खुटहा, कर्वी	2	2	4
4.	प्राथमिक विद्यालय खोह, कर्वी	2	1	3
5.	प्राथमिक विद्यालय विनायकपुर, कर्वी	3	2	5
6.	प्राथमिक विद्यालय बैहारपुर, कर्वी	2	2	4
	कुल योग			25

तालिका संख्या–8 आयु वर्ग के आधार पर

क्र.सं.	विद्यालय	वरिष्ठ शिक्षक	कनिष्ठ शिक्षक	कुल योग
1.	प्राथमिक विद्यालय कसहाई, कर्वी	2	1	3
2.	प्राथमिक विद्यालय लुढ़वारा, कर्वी	2	2	4
3.	प्राथमिक विद्यालय गढ़ीवा, कर्वी	2	2	4
4.	प्राथमिक विद्यालय सीतापुर, कर्वी	3	2	5
5.	प्राथमिक विद्यालय नई दुनियॉ, कर्वी	2	2	4
6.	प्राथमिक विद्यालय रामपुर माफी, कर्वी	2	3	5
	कुल योग			25

कर्वी (चित्रकूट) जनपद से चयनित निजी प्राथमिक विद्यालयः–

तालिका संख्या–9 आयु वर्ग के आधार पर

क्र.सं.	विद्यालय	40 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षक	40 वर्षसे अधिक आयु वाले शिक्षक	कुल योग
1.	सहज पब्लिक स्कूल, कर्वी	2	1	3
2.	चित्रकूट पब्लिक स्कूल, कर्वी	2	2	4
3.	भीमराव अम्बेडकर विद्यालय, कर्वी	3	3	6
4.	डा. भाभा कान्वेन्ट स्कूल, कर्वी	2	2	4
5.	शान्ती पब्लिक स्कूल, कर्वी	2	3	5
	कुल योग			25

तालिका संख्या–10 आयु वर्ग के आधार पर

क्र.सं.	विद्यालय	वरिष्ठ शिक्षक	कनिष्ठ शिक्षक	कुल योग
1.	ज्ञान भारती पब्लिक स्कूल– कर्वी	2	3	5
2.	जे.पी. मेमोरियल विद्यालय– कर्वी	2	2	4
3.	बेथेल पब्लिक स्कूल–कर्वी	3	5	8
4.	गुरू कृपा पब्लिक सकूल– कर्वी	2	2	4
5.	शिवपुरी पब्लिक स्कूल– कर्वी	3	3	6
	कुल योग			27

कर्वी (चित्रकूट) जनपद से चयनित सरस्वती शिशु मन्दिरः–

तालिका संख्या–11 आयु वर्गो के आधार पर

क्र.सं.	विद्यालय	40 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षक	40 वर्षसे अधिक आयु वाले शिक्षक	कुल योग
1.	सरस्वती शिशु मन्दिर मानिकपुर, कर्वी	3	3	6
2.	सरस्वती शिशु मन्दिर गाँधी नगर, मानिकपुर, कर्वी	2	2	4
3.	सरस्वती शिशु मन्दिर महावीर नगर, मानिकपुर, कर्वी	3	2	5
4.	रामनाथ रामकिशन सरस्वती शिशु मन्दिर सीतापुर, कर्वी	3	1	4
5.	सरस्वती शिशु मन्दिर शिवरामपुर, कर्वी	3	3	6
	कुल योग			25

तालिका संख्या–12 आयु वर्ग के आधार पर

क्र.सं.	विद्यालय	वरिष्ठ शिक्षक	कनिष्ठ शिक्षक	कुल योग
1.	सरस्वती शिशु मन्दिर भरतकूप, कर्वी	4	4	8
2.	सरस्वती शिशु मन्दिर, राजापुर, कर्वी	3	4	7
3.	सरस्वती ज्ञान मन्दिर, कर्वी	2	3	5
4.	सरस्वती शिशु मन्दिर शंकर बाजार, कर्वी	3	2	5
	कुल योग			25

3.1(स) परिसीमनः प्रस्तुत अध्ययन में अन्वेषिका ने सीमित साधनों एवं समय को दृष्टिगत रखते हुए अध्ययन को परिसीमित किया है, क्योंकि अध्ययन का क्षेत्र काफी विस्तृत था इसलिए अध्ययन को एक इकाई के रूप में रख पाना कठिन है। जिसके कारण उसको परिसीमित किया गया प्रस्तुत शोध अध्ययन को निम्न स्रोत, समय की उपलब्धता के अन्तर्गत क्षेत्र, एवं अध्ययन के तरीकों, न्यादर्श के चयन विधियों, उद्देश्यों आदि सन्दर्भ में सीमित कर दिया गया है जो निम्न प्रकार है।

1. प्रस्तुत अध्ययन क्षेत्र के सन्दर्भ में चित्रकूट–धाम मंडल के दो जनपदों बांदा एवं कर्वी (चित्रकूट) जिलों तक सीमित किया गया।
2. अध्ययन में जनसंख्या के रूप में 300 अध्यापकों तक सीमित किया गया है।
3. प्रस्तुत अध्ययन को शिक्षा के प्राथमिक स्तर तक सीमित किया गया है।
4. अध्ययन में समस्या के समाधान के लिए अध्ययन को प्रमुख छः मूल्यों तक सीमित कर दिया गया है।

(क) सैद्धान्तिक

(ख) आर्थिक

(ग) सामाजिक

(घ) सौन्दर्यात्मक

(ङ) धार्मिक

(च) राजनैतिक

3.2 उपकरण–

न्यादर्श के चयन के पश्चात आंकड़ों के संकलन हेतु उपकरण का चयन करना होता है। उपकरण का चयन बहुत तथ्यों पर निर्भर करता है। जैसे अध्ययन के उद्देश्य, शोध समय, अन्वेषिका की व्यक्तिगत परिस्थितियां, प्राविधियां एवं गणनायें। उपरोक्त

सभी तथ्यों को ध्यान मे रखते हुए उपकरण का चुनाव किया गया है।

किसी भी अनुसन्धान की पूर्ण सफलता उपकरणों पर निर्भर करती है। इसलिए सभी तथ्यों एवं प्रस्तुत अध्याय के उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए अध्ययन कर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध में आंकड़ों के संकलन हेतु ***एस0पी0 आहलूवालिया द्वारा निर्मित टीचर वेल्यू इन्वेन्ट्री का प्रयोग किया गया।*** इस अनुसूची द्वारा शिक्षकों के छः मूल्यों का मापन किया जा सकता है जिसका विवरण इस प्रकार से है–

1. **सैद्धान्तिक मूल्य** : प्रभावशाली रूचि, सच की खोच, और परीक्षण निर्णायक बौद्धिक पहुंच द्वारा गुण और दोष को बताता है।
2. **आर्थिक मूल्य** : यह व्यवहारिक मूल्य के गुण, दोष तथा आर्थिक मामलों को महत्व देता है।
3. **सौन्दर्यात्मक मूल्य** : आकार और समन्वय के स्थान पर उच्च मूल्य का स्थानान्तरण और कला संगीत की रूचि दिखाना है।
4. **सामाजिक मूल्य** : लोक कल्याण की भावना तथा आपसी प्रेम की उपयोगिता बताना है।
5. **राजनैतिक मूल्य** : मुख्य रूप से स्वयं की भक्ति व कीर्ति का प्रभाव बताना है।
6. **धार्मिक मूल्य** : भगवान में विश्वास कार्यो में रूचि अपने धार्मिक कृत्यों में सम्बन्ध रखना बताता है।

3.3 आँकड़ों का संकलन–

आंकड़ों के संकलन हेतु विद्यालय से सम्पर्क पश्चात विद्यालय को पूर्व सूचना के उपरान्त आंकड़ों के संकलन हेतु अन्वेषिका चयनित विभिन्न प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में गई तथा वहां के प्रधानाचार्य से अनुमति प्राप्त करके विभिन्न अध्यापकों

का सहयोग प्राप्त करने के पश्चात चयनित शिक्षकों को मूल्य अनुसूची वितरित की तथा परीक्षण निर्देशों से अवगत कराया और शिक्षकों से उत्तर अनुसूची में उत्तर भरवाये तथा शिक्षकों के द्वारा भरी गयी उत्तर प्रश्नावली का निरीक्षण करके यह निश्चित कर लिया गया कि कोई प्रश्न अनुत्तरित तो नहीं रह गया अथवा किसी मूल्य मापनी में वरीयता अंकन में कोई त्रुटि तो नहीं है। तत्पश्चात निरीक्षण से ज्ञात हुआ कि परीक्षण क्रियान्वयन में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं पायी गयी।

अध्याय–4

आँकड़ों की गणना एवं अनुमान

चतुर्थ अध्याय

आँकड़ों की गणना एवं अनुमान

(4.1) सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन :–

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्य वरिष्ठता एवं कनिष्ठता के सन्दर्भ में।

तालिका नं० 4.1

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षक वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सैद्धान्तिक मूल्य	1.	वरिष्ठ	53.20	6.68	सार्थक	–	2.06
	2.	कनिष्ठ	38.10	4.72	सार्थक	–	

उपरोक्त तालिका (4.1) के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत वरिष्ठ एवं कनिष्ठ अध्यापकों में सैद्धान्तिक मूल्यों के संदर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–2.06)। अतः वरिष्ठ एवं कनिष्ठ अध्यापक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (53.20) तथा (38.10) से यह स्पष्ट है कि वरिष्ठ अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्य उच्च हैं। यह परिकल्पना .05 के स्तर पर सार्थक पायी गयी सार्थक अन्तर पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के आर्थिक मूल्य वरिष्ठता एवं कनिष्ठता के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.2

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षक वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
आर्थिक मूल्य	1.	वरिष्ठ	37.19	5.96	–	–	1.69
	2.	कनिष्ठ	54.80	7.61	–	–	

उपरोक्त तालिका (4.2) के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत वरिष्ठ शिक्षकों के मध्यमान आर्थिक मूल्य पर कनिष्ठ शिक्षकों की अपेक्षा निम्न हैं। आर्थिक मूल्य के सन्दर्भ में शिक्षकों के दोनों वर्गो में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–1.69)। अतः वरिष्ठ शिक्षक की अपेक्षा कनिष्ठ शिक्षक अधिक आर्थिक मूल्य रखते हैं। सार्थकता के अन्तर पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य वरिष्ठता एवं कनिष्ठता के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.3

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षक वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सौन्दर्यात्मक मूल्य	1.	वरिष्ठ	47.70	7.94	–	सार्थक	3.84
	2.	कनिष्ठ	44.30	8.76	–	सार्थक	

उपरोक्त तालिका (4.3) के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षकों में सौन्दर्यात्मक मूल्य के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया। (टी–3.84)। अतः वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (47.70) एवं (44.30) से ज्ञात होता है कि वरिष्ठ शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य उच्च है। सार्थकता के (0.01) स्तर पर यह परिकल्पना सार्थक पायी गयी तथा सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के सामाजिक मूल्य वरिष्ठता एवं कनिष्ठता के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.4

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षक वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सामाजिक मूल्य	1.	वरिष्ठ	39.30	5.15	–	–	1.56
	2.	कनिष्ठ	34.30	4.85	–	–	

उपरोक्त तालिका (4.4) के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षकों में सामाजिक मूल्य के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया (टी–1.56)। अतः वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षक इस मूल्य पर कोई विशेष भिन्नता नहीं रखते। मध्यमान (39.30) तथा 34.30) से ज्ञात होता है कि वरिष्ठ शिक्षक कनिष्ठ शिक्षकों की अपेक्षा सामाजिक मूल्य पर उच्च हैं। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना स्वीकार की गयी।

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के राजनैतिक मूल्य वरिष्ठता एवं कनिष्ठता के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.5

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षक वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
राजनैतिक मूल्य	1.	वरिष्ठ	41.10	6.72	–	–	1.83
	2.	कनिष्ठ	46.90	7.51	–	–	

उपरोक्त तालिका (4.5) के अध्ययन से ज्ञात होता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षकों में राजनैतिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया। (टी–1.83) इसलिए वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (41.10) तथा (46.90) से स्पष्ट है कि कनिष्ठ शिक्षक वर्ग वरिष्ठ शिक्षक वर्ग की अपेक्षा राजनैतिक मूल्य अधिक रखते हैं। सार्थकता के अन्तर पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के धार्मिक मूल्य वरिष्ठता एवं कनिष्ठता के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.6

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षक वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
धार्मिक मूल्य	1.	वरिष्ठ	48.50	8.17	-	-	.826
	2.	कनिष्ठ	45.35	7.91	-	-	

उपरोक्त तालिका (4.6) के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षकों में धार्मिक मूल्यों के सन्दर्भ में कोई विशेष सार्थक अन्तर नहीं है। अतः वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षक धार्मिक मूल्य पर लगभग एक समान है। मध्यमान (48.50) तथा 45.35) से ज्ञात होता है कि वरिष्ठ शिक्षक कनिष्ठ शिक्षकों की अपेक्षा धार्मिक मूल्य पर उच्च तो हैं परन्तु अन्तर कम हैं। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना स्वीकार की गयी।

ग्राफ–1 : सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के विभिन्न मूल्य
(कनिष्ठता एवं वरिष्ठता में)
वरिष्ठ शिक्षक
कनिष्ठ शिक्षक
मध्यमान
60
50
40
30
20
10
0
53.20
38.10
37.19
54.80
47.70
44.30
39.30
34.30
41.10
46.90
48.50
45.35
सैद्धान्तिक
आर्थिक
सौन्दर्यात्मक
सामाजिक
राजनैतिक
धार्मिक
मूल्य
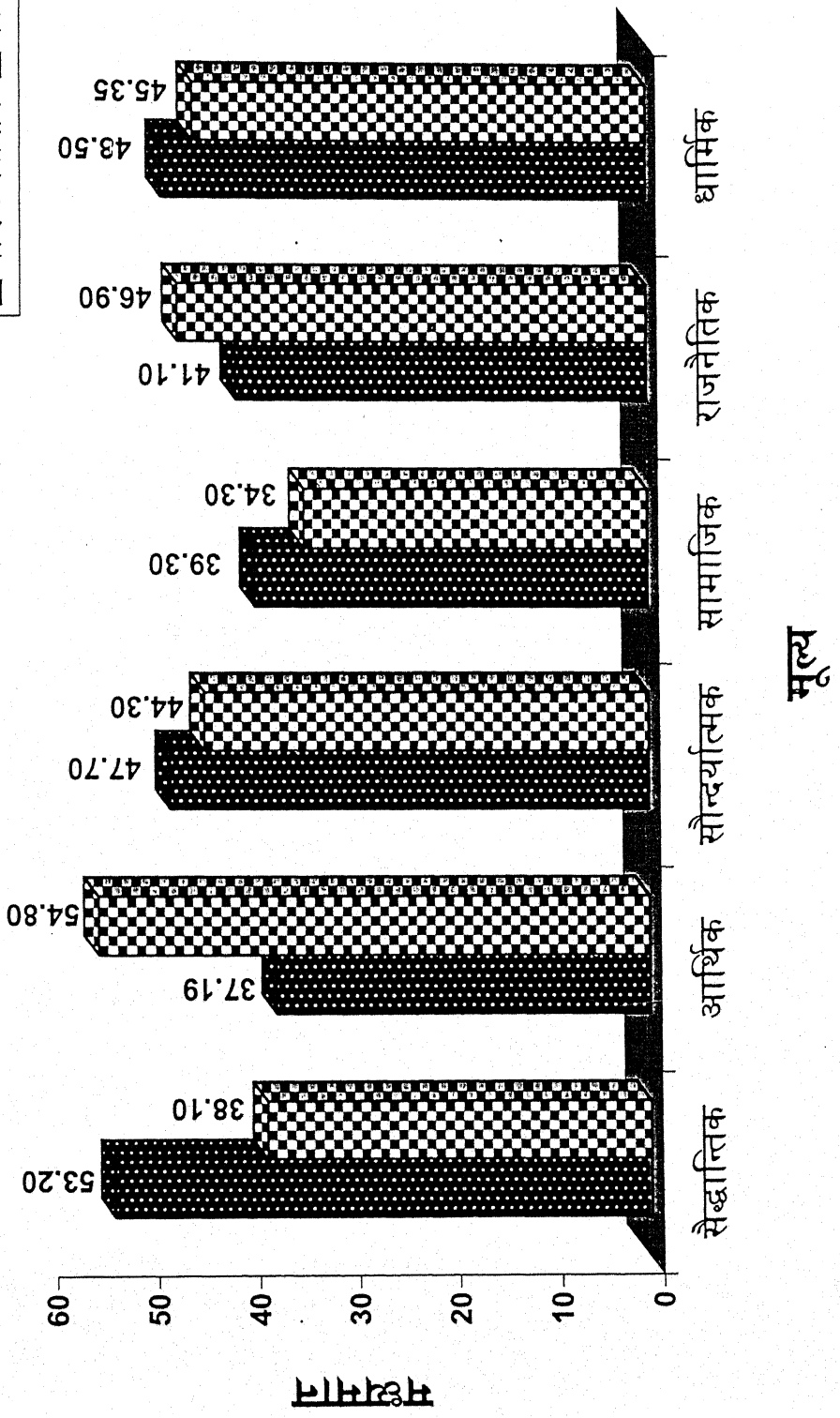
(4.2) निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन :–

निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्य वरिष्ठता एवं कनिष्ठता के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.7

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षक वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सैद्धान्तिक मूल्य	1.	वरिष्ठ	40.6.	3.54	–	–	.79
	2.	कनिष्ठ	43.80	4.89	–	–	

उपरोक्त तालिका (4.7) के अवलोकन से ज्ञात होता है कि निजी प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षकों में सैद्धान्तिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–.79)। अतः वरिष्ठ शिक्षक एवं कनिष्ठ शिक्षकों में इस मूल्य पर भिन्नता पायी गयी। मध्यमान (40.60) तथा (43.80) यह दर्शाता है कि कनिष्ठ शिक्षक वरिष्ठ शिक्षकों की अपेक्षा इस मूल्य पर उच्च हैं। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के आर्थिक मूल्य

वरिष्ठता एवं कनिष्ठता के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.8

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षक वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		''टी'' मान
					.05 पर	.01 पर	
आर्थिक मूल्य	1.	वरिष्ठ	47.00	7.63	सार्थक	–	3.24
	2.	कनिष्ठ	52.50	8.79	सार्थक	–	

उपरोक्त तालिका (4.8) के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि निजी प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षकों में आर्थिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर है। अतः वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। (टी–3.24)। मध्यमान (47.00) तथा (52.50) से यह स्पष्ट है कि कनिष्ठ शिक्षक वरिष्ठ शिक्षकों की अपेक्षा उच्च मध्यमान रखते हैं। सार्थकता के (.05) स्तर पर यह परिकल्पना सार्थक पायी गयी तथा सार्थक अन्तर पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य

वरिष्ठता एवं कनिष्ठता के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.9

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षक वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सौन्दर्यात्मक मूल्य	1.	वरिष्ठ	41.20	7.54	सार्थक	–	2.16
	2.	कनिष्ठ	35.50	6.91	सार्थक	–	

उपरोक्त तालिका (4.9) के अवलोकन से स्पष्ट है कि निजी प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षकों में आर्थिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–2.16)। अतः वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (41.20) तथा 35.50) से ज्ञात होता है कि वरिष्ठ शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य उच्च हैं सार्थकता के 0.05 स्तर पर यह परिकल्पना सार्थक पायी गयी तथा सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के सामाजिक मूल्य वरिष्ठता एवं कनिष्ठता के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.10

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षक वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सामाजिक मूल्य	1.	वरिष्ठ	48.40	6.02	–	–	.29
	2.	कनिष्ठ	48.30	5.96	–	–	

उपरोक्त तालिका (4.10) से स्पष्ट होता है कि निजी प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षकों में सामाजिक मूल्यों के सन्दर्भ में कोई विशेष भिन्नता नहीं पायी गयी (टी–.29)। अतः इस मूल्य पर वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षक कोई विशेष भिन्नता नहीं रखते हैं। वरिष्ठ शिक्षकों के मध्यमान उच्च होने के कारण ये शिक्षक कनिष्ठ शिक्षकों की अपेक्षा सामाजिक मूल्य को अधिक महत्व देते हैं सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना स्वीकार की गयी।

निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के राजनैतिक मूल्य वरिष्ठता एवं कनिष्ठता के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.11

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षक वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
राजनैतिक मूल्य	1.	वरिष्ठ	41.40	8.17	-	-	1.36
	2.	कनिष्ठ	35.60	7.96	-	-	

उपरोक्त तालिका (4.11) से ज्ञात होता है कि निजी प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षकों में राजनैतिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया। (टी-1.36) अतः वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (41.40) तथा (35.60) से ज्ञात होता है कि वरिष्ठ शिक्षक कनिष्ठ शिक्षकों की अपेक्षा राजनैतिक मूल्य को अधिक महत्व देते हैं सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के धार्मिक मूल्य

वरिष्ठता एवं कनिष्ठता के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.12

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षक वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
धार्मिक मूल्य	1.	वरिष्ठ	48.30	8.53	–	–	.83
	2.	कनिष्ठ	47.10	7.92	–	–	

उपरोक्त तालिका (4.12) से स्पष्ट होता है कि निजी प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षकों में धार्मिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। (टी–.83) अतः वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता नहीं रखते। मध्यमान (48.30) तथा (47.10) से स्पष्ट है कि शिक्षक धार्मिक मूल्यों को लगभग समान महत्व देते हैं। सार्थक अन्तर पर यह परिकल्पना स्वीकार की गयी।

ग्राफ–2 : निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के विभिन्न मूल्य (कनिष्ठता एवं वरिष्ठता में)
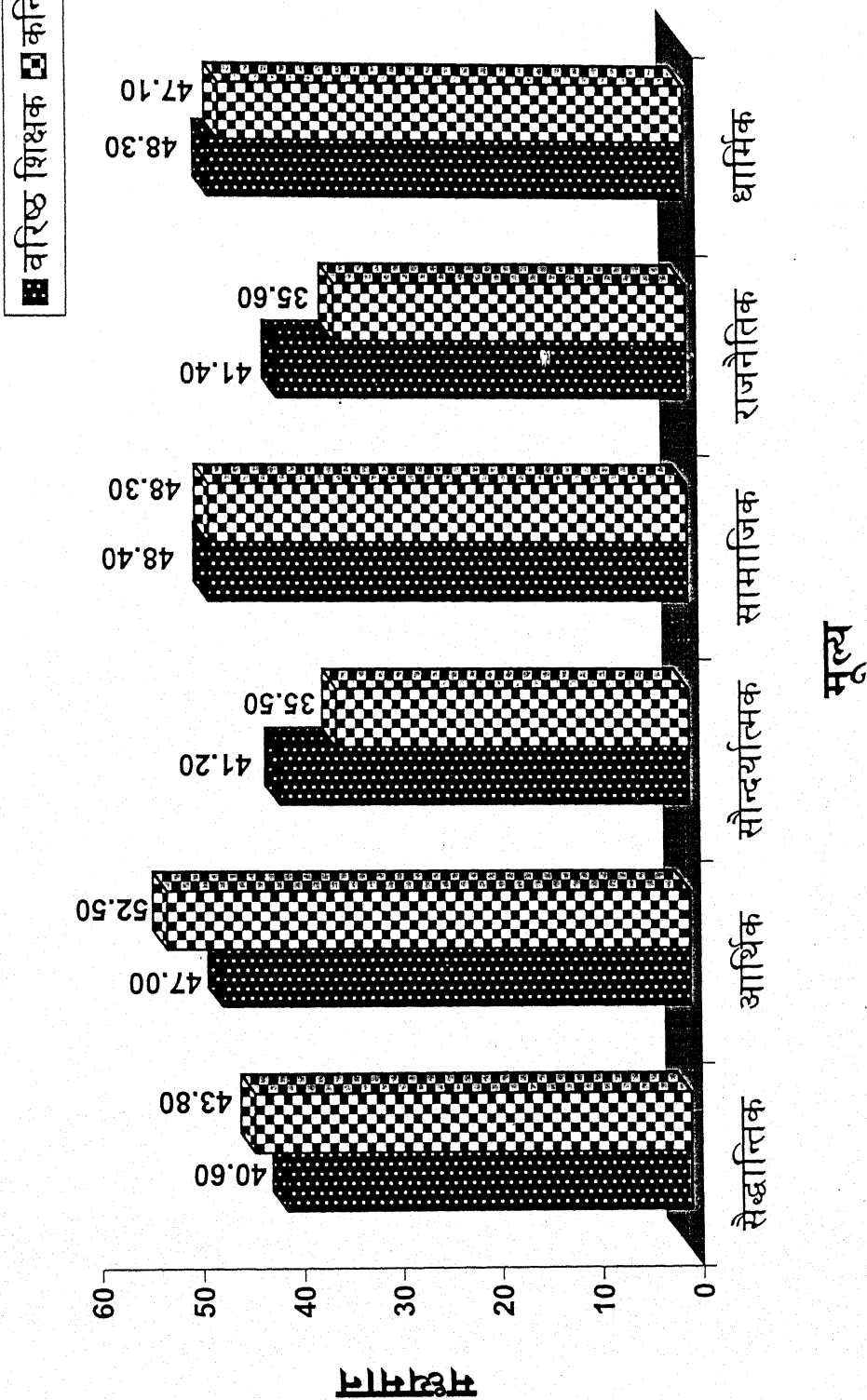
(4.3) सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन :–

सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्य

वरिष्ठता एवं कनिष्ठता के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.13

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षक वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सैद्धान्तिक मूल्य	1.	वरिष्ठ	53.40	7.64	–	–	.81
	2.	कनिष्ठ	43.90	5.21	–	–	

उपरोक्त तालिका (4.13) के अवलोकन से पता चलता है कि सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षकों में सैद्धान्तिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया। (टी–.81) अतः वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (53.40) तथा (43.90) यह दर्शाते हैं कि वरिष्ठ शिक्षक एवं कनिष्ठ शिक्षकों की अपेक्षा सैद्धान्तिक मूल्य को अधिक महत्व देते हैं। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के आर्थिक मूल्य वरिष्ठता एवं कनिष्ठता के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.14

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षक वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
आर्थिक मूल्य	1.	वरिष्ठ	40.50	7.86	सार्थक	–	2.96
	2.	कनिष्ठ	46.40	6.43	सार्थक	–	

उपरोक्त तालिका (4.14) से स्पष्ट है कि सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षकों में आर्थिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया। (टी–2.96) अतः स्पष्ट है कि इस मूल्य पर वरिष्ठ शिक्षक कनिष्ठ की अपेक्षा अधिक उच्चता रखते हैं। अतः सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य वरिष्ठता एवं कनिष्ठता के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.15

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षक वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सौन्दर्यात्मक मूल्य	1.	वरिष्ठ	43.20	6.92	–	सार्थक	2.78
	2.	कनिष्ठ	35.10	5.27	–	सार्थक	

उपरोक्त तालिका (4.15) से स्पष्ट है कि सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षकों में सौन्दर्यात्मक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया। (टी–2.78) अतः वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (43.20) तथा 35.10) से यह स्पष्ट है कि वरिष्ठ शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य कनिष्ठ शिक्षकों की अपेक्षा उच्च हैं तथा सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के सामाजिक मूल्य वरिष्ठता एवं कनिष्ठता के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.16

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षक वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सामाजिक मूल्य	1.	वरिष्ठ	43.3.	5.41	सार्थक	–	2.43
	2.	कनिष्ठ	48.30	6.71	सार्थक	–	

उपरोक्त तालिका (4.16) के अवलोकन से स्पष्ट है कि सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षकों में सामाजिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर हैं। (टी–2.43) अतः वरिष्ठ शिक्षक एवं कनिष्ठ शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (43.30) तथा (48.30) से यह ज्ञात होता है कि वरिष्ठ शिक्षकों के सामाजिक मूल्य कनिष्ठ शिक्षकों की अपेक्षा कम हैं। सार्थकता के (.05) स्तर पर यह परिकल्पना सार्थक पायी गयी तथा सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के राजनैतिक मूल्य

वरिष्ठता एवं कनिष्ठता के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.17

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षक वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
राजनैतिक मूल्य	1.	वरिष्ठ	35.30	5.78	–	–	2.36
	2.	कनिष्ठ	39.70	6.49	–	–	

उपरोक्त तालिका (4.17) से स्पष्ट है कि सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षकों में राजनैतिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया। (टी–2.36) अतः वरिष्ठ शिक्षक एवं कनिष्ठ शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते है। मध्यमान (35.30) तथा (39.70) से यह स्पष्ट है कि कनिष्ठ शिक्षक वरिष्ठ शिक्षकों की अपेक्षा राजनैतिक मूल्य को अधिक महत्व देते हैं। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के धार्मिक मूल्य

वरिष्ठता एवं कनिष्ठता के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.18

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षक वर्ग	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
धार्मिक मूल्य	1.	वरिष्ठ	51.30	7.29	–	–	1.52
	2.	कनिष्ठ	49.40	6.91	–	–	

उपरोक्त तालिका (4.18) से यह ज्ञात होता है कि सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत वरिष्ठ एवं कनिष्ठ शिक्षकों में धार्मिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया। (टी–1.52) अतः इस मूल्य पर वरिष्ठ शिक्षक एवं कनिष्ठ शिक्षक भिन्नता रखते है। मध्यमान (51.30) तथा (49.40) ये यह सपष्ट है कि वरिष्ठ शिक्षक कनिष्ठ शिक्षकों की अपेक्षा धार्मिक मूल्य उच्च रखते हैं। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

ग्राफ–3 : सरस्वती शिशु मंदिर के अध्यापकों के विभिन्न मूल्य
(कनिष्ठता एवं वरिष्ठता में)
वरिष्ठ शिक्षक
कनिष्ठ शिक्षक
मध्यमान
60
50
40
30
20
10
0
53.40
43.90
40.50
46.40
43.20
35.10
43.30
48.30
35.30
39.70
51.30
49.40
सैद्धान्तिक
आर्थिक
सौन्दर्यात्मक
सामाजिक
राजनैतिक
धार्मिक
मूल्य
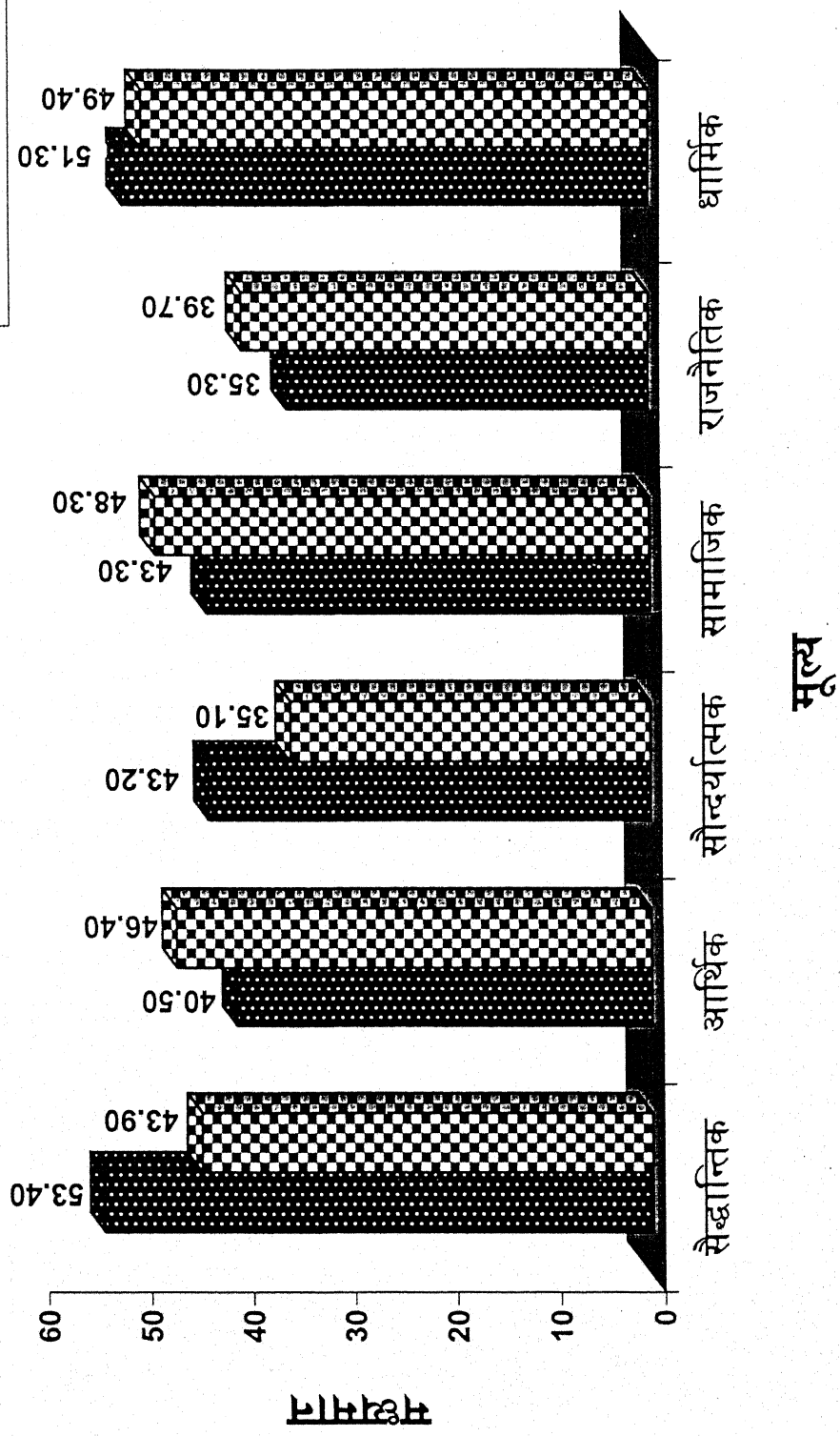
(4.4) सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययनः–

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के
सैद्धान्तिक मूल्य आयु वर्गों के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.19

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षकों की आयु वर्षों में	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सैद्धान्तिक मूल्य	1.	40 वर्ष से कम	48.20	5.78	–	–	3.23
	2.	40 वर्ष से अधिक	52.10	6.67	–	–	

उपरोक्त तालिका (4.19) के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालयों में कार्यरत 40 वर्ष की आयु से कम व 40 वर्ष की आयु से अधिक वाले शिक्षकों में सैद्धान्तिक मूल्य स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया (टी–3.23)। अतः 40 वर्ष से कम तथा 40 वर्ष से अधिक आयु के शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (48.20) तथा (52.10) से ज्ञात होता है कि 40 वर्ष से कम आयु के शिक्षकों की तुलना में 40 वर्ष से अधिक आयु के शिक्षकों के सैद्धान्तिक मूल्य अधिक उच्च हैं। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के आर्थिक मूल्य आयु वर्गो के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.20

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षकों की आयु वर्षों में	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
आर्थिक मूल्य	1.	40 वर्ष से कम	43.33	8.5	-	-	0.07
	2.	40 वर्ष से अधिक	43.76	8.2	-	-	

तालिका (4.20) के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालयों में कार्यरत 40 वर्ष की आयु से कम व 40 वर्ष की आयु से अधिक वाले शिक्षकों में आर्थिक मूल्य स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं है (टी-0.07)। अतः 40 वर्ष से कम तथा 40 वर्ष से अधिक आयु के शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता नहीं रखते। मध्यमान (43.33) तथा (43.76) से ज्ञात होता है कि 40 वर्ष से अधिक आयु के शिक्षकों का आर्थिक मूल्य उच्च हैं। सार्थक अन्तर पर यह परिकल्पना स्वीकार की गयी।

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य आयु वर्गो के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.21

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षकों की आयु वर्षों में	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सौन्दर्यात्मक मूल्य	1.	40 वर्ष से कम	48.46	6.96	सार्थक	सार्थक	8.67
	2.	40 वर्ष से अधिक	43.85	5.53	सार्थक	सार्थक	

उपरोक्त तालिका (4.21) के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालयों में कार्यरत 40 वर्ष की आयु से अधिक के शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–10.77)। अतः 40 वर्ष की आयु से कम व 40 वर्ष की आयु से अधिक के शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (48.46) तथा (43.85) से पता चलता है कि 40 वर्ष की आयु से कम के शिक्षकों के मूल्य का मध्यमान 40 वर्ष की आयु से अधिक के शिक्षकों के मध्यमान से अधिक है। सार्थक अन्तर पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के

सामाजिक मूल्य आयु वर्गो के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.22

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षकों की आयु वर्षों में	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सामाजिक मूल्य	1.	40 वर्ष से कम	46.09	8.46	–	–	1.09
	2.	40 वर्ष से अधिक	48.61	7.94	–	–	

उपरोक्त तालिका (4.22) के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सरकारी विद्यालयों में कार्यरत 40 वर्ष की आयु से कम व 40 वर्ष की आयु से अधिक के शिक्षकों में सामाजिक मूल्य स्तर पर सार्थक अन्तर पाया गया (टी–1.09)। अतः 40 वर्ष की आयु से अधिक के शिक्षक इस मूल्य पर कोई विशेष भिन्नता नहीं रखते हैं। मध्यमान (46.09) तथा (48.61) से ज्ञात होता है कि 40 वर्ष की आयु से अधिक वाले शिक्षकों का सामाजिक मूल्य 40 वर्ष की आयु से कम वाले शिक्षकों की तुलना में अधिक हैं। सार्थक अन्तर पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के

राजनैतिक मूल्य आयु वर्गों के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.23

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षकों की आयु वर्षों में	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
राजनैतिक मूल्य	1.	40 वर्ष से कम	46.78	8.64	–	–	0.84
	2.	40 वर्ष से अधिक	48.25	7.93	–	–	

उपरोक्त तालिका (4.23) के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सरकारी विद्यालयों में कार्यरत 40 वर्ष से कम व 40 वर्ष से अधिक की आयु वाले शिक्षकों में राजनैतिक मूल्यों के संदर्भ में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया (टी–0.84)। अतः 40 वर्ष की आयु से कम व 40 वर्ष की आयु से अधिक वाले शिक्षक इस स्तर पर अधिक भिन्नता नहीं रखते हैं। मध्यमान (46.78) तथा (48.25) को देखने से पता चलता है कि 40 वर्ष की आयु से अधिक वाले शिक्षकों का मध्यमान 40 वर्ष की आयु से कम वाले शिक्षकों की तुलना में अधिक है। सार्थक अन्तर पर यह परिकल्पना स्वीकार की गयी।

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के धार्मिक मूल्य आयु वर्गो के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.24

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षकों की आयु वर्षों में	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
धार्मिक मूल्य	1.	40 वर्ष से कम	41.15	4.41	–	–	1.80
	2.	40 वर्ष से अधिक	44.75	5.85	–	–	

उपरोक्त तालिका (4.24) से स्पष्ट है कि सरकारी विद्यालयों में कार्यरत 40 वर्ष की आयु से कम व 40 वर्ष की आयु से अधिक के शिक्षकों में धार्मिक मूल्यों के संदर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–1.80)। अतः 40 वर्ष की आयु से कम व 40 वर्ष की आयु से अधिक के शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (41.15) तथा (44.75) से स्पष्ट होता है कि 40 वर्ष की आयु से कम वाले शिक्षकों की तुलना में 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों में धार्मिक मूल्य का माध्य अधिक है। सार्थक अन्तर पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

ग्राफ–4 : सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के विभिन्न मूल्य (आयु वर्गों के अनुसार)
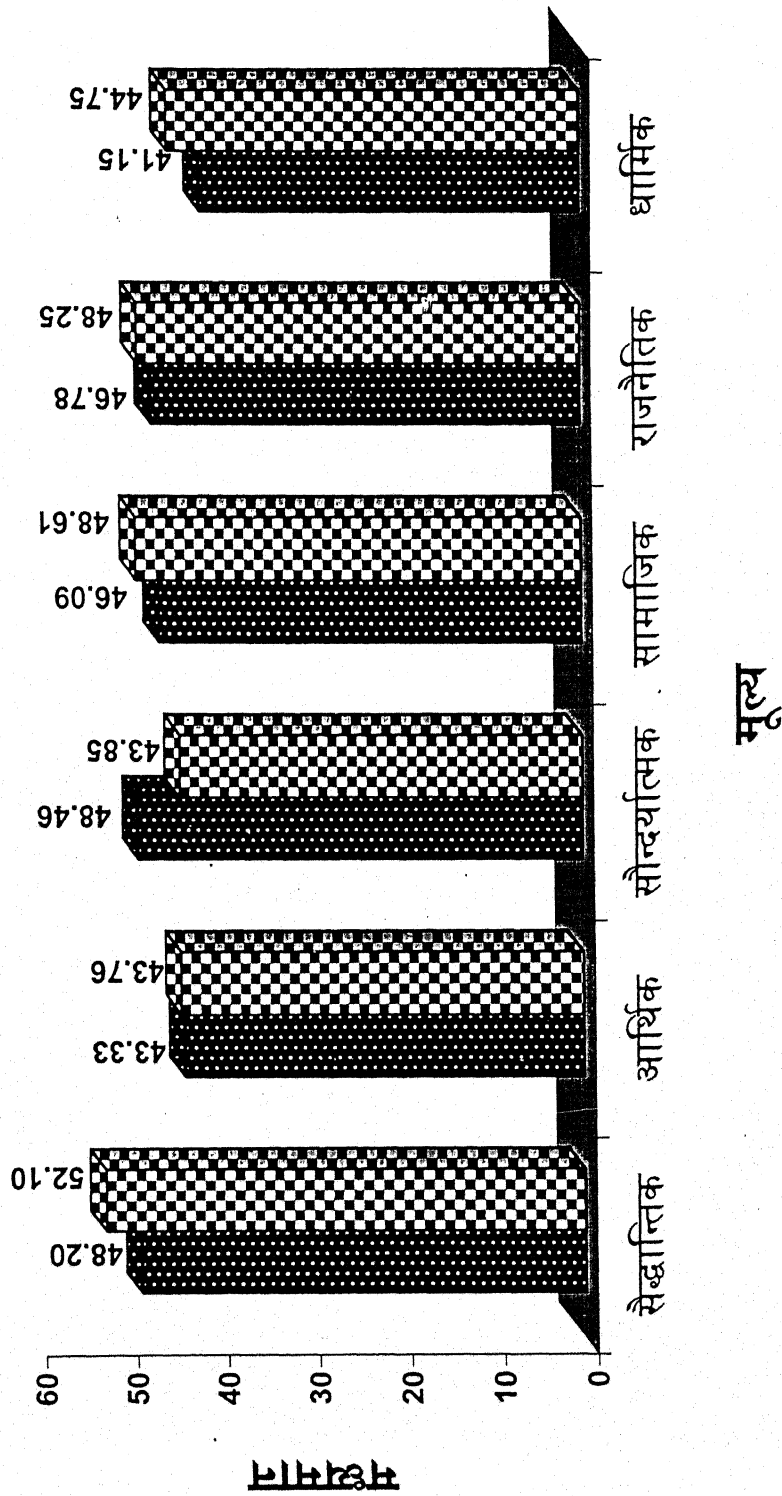
(4.5) निजी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन:–

निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के
सैद्धान्तिक मूल्य आयु वर्गो के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.25

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षकों की आयु वर्षों में	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सैद्धान्तिक मूल्य	1.	40 वर्ष से कम	45.16	6.29	सार्थक	–	4.82
	2.	40 वर्ष से अधिक	47.92	7.45	सार्थक	–	

उपरोक्त तालिका (4.25) से स्पष्ट होता है कि गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत 40 वर्ष की आयु से अधिक के शिक्षकों में सैद्धान्तिक मूल्यों के स्तर पर अन्तर पाया गया। (टी–4.82) अतः ज्ञात होता है कि 40 वर्ष की आयु से कम वाले शिक्षकों के सैद्धान्तिक मूल्य में भिन्नता है। मध्यमान (45.16) तथा (47.92) से ज्ञात होता है कि 40 वर्ष की आयु से कम वाले शिक्षकों के सैद्धान्तिक मूल्य 40 वर्ष की आयु से अधिक के शिक्षकों के सैद्धान्तिक मूल्य की अपेक्षा कम हैं। सार्थक अन्तर पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के

आर्थिक मूल्य आयु वर्गो के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.26

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षकों की आयु वर्षों में	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
आर्थिक मूल्य	1.	40 वर्ष से कम	46.69	7.39	सार्थक	–	6.41
	2.	40 वर्ष से अधिक	49.02	8.70	सार्थक	–	

तालिका (4.26) के अवलोकन से ज्ञात होता है कि गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत 40 वर्ष की आयु से कम तथा 40 वर्ष की आयु से अधिक वाले शिक्षकों के आर्थिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–6.41)। अतः 40 वर्ष से कम तथा 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (46.69) तथा (49.02) को देखने से स्पष्ट होता है कि 40 वर्ष से अधिक की आयु वाले शिक्षकों की तुलना में 40 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों के आर्थिक मूल्य माध्य अधिक उच्च है। सार्थक अंतर पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के

सौन्दर्यात्मक मूल्य आयु वर्गों के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.27

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षकों की आयु वर्षों में	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सौन्दर्यात्मक मूल्य	1.	40 वर्ष से कम	42.23	11.51	–	–	0.60
	2.	40 वर्ष से अधिक	47.33	13.49	–	–	

तालिका (4.27) के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत 40 वर्ष की आयु से कम तथा 40 वर्ष की आयु से अधिक वाले शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया। (टी–0.60) अतः 40 वर्ष से कम तथा 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (42.23) तथा (47.33) को देखने से स्पष्ट होता है कि 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों की तुलना में 40 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों के आर्थिक मूल्य माध्य अधिक उच्च हैं। सार्थक अन्तर पर यह परिकल्पना स्वीकार की गयी।

निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के सामाजिक मूल्य आयु वर्गो के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.28

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षकों की आयु वर्षों में	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सामाजिक मूल्य	1.	40 वर्ष से कम	47.69	9.46	–	–	3.71
	2.	40 वर्ष से अधिक	52.83	13.01	–	–	

तालिका (4.28) को देखने से ज्ञात होता है कि निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत 40 वर्ष की आयु से कम तथा 40 वर्ष की आयु से अधिक वाले शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया। (टी–3.71) अतः 40 वर्ष से कम तथा 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (47.69) तथा (52.83) को देखने से स्पष्ट होता है कि 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों की तुलना में 40 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों के सामाजिक मूल्य अधिक उच्च हैं। सार्थक अन्तर पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के

राजनैतिक मूल्य आयु वर्गो के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.29

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षकों की आयु वर्षों में	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
राजनैतिक मूल्य	1.	40 वर्ष से कम	49.27	8.49	–	–	4.36
	2.	40 वर्ष से अधिक	57.92	11.71	–	–	

तालिका (4.29) के देखने से ज्ञात होता है कि गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत 40 वर्ष की आयु से कम तथा 40 वर्ष की आयु से अधिक वाले शिक्षकों के राजनैतिक मूल्य में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–4.36)। अतः 40 वर्ष से कम तथा 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (49. 27) तथा (57.92) को देखने से स्पष्ट होता है कि 40 वर्ष से अधिक की आयु वाले शिक्षकों की तुलना में 40 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों के राजनैतिक मूल्य माध्य अधिक उच्च हैं। सार्थक अन्तर पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के

धार्मिक मूल्य आयु वर्गों के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.30

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षकों की आयु वर्षों में	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
धार्मिक मूल्य	1.	40 वर्ष से कम	46.08	9.45	-	-	2.35
	2.	40 वर्ष से अधिक	51.15	12.70	-	-	

तालिका (4.30) के अवलोकन से ज्ञात होता है कि गैर सरकारी विद्यालयों में कार्यरत 40 वर्ष की आयु से कम तथा 40 वर्ष की आयु से अधिक वाले शिक्षकों के धार्मिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–2.35)। अतः 40 वर्ष से कम तथा 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (46.08) तथा (51.15) से ज्ञात होता है कि 40 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों की तुलना में 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों के धार्मिक मूल्य अधिक उच्च हैं। सार्थक अन्तर पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

ग्राफ–5 : निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के विभिन्न मूल्य (आयु वर्गों के अनुसार)

40 वर्ष से कम के अध्यापक
40 वर्ष से अधिक के अध्यापक

मध्यमान

60
50
40
30
20
10
0

45.16
47.90
46.69
49.02
42.23
47.33
47.69
52.83
49.27
57.92
46.08
51.15

सैद्धान्तिक
आर्थिक
सौन्दर्यात्मक
सामाजिक
राजनैतिक
धार्मिक

मूल्य
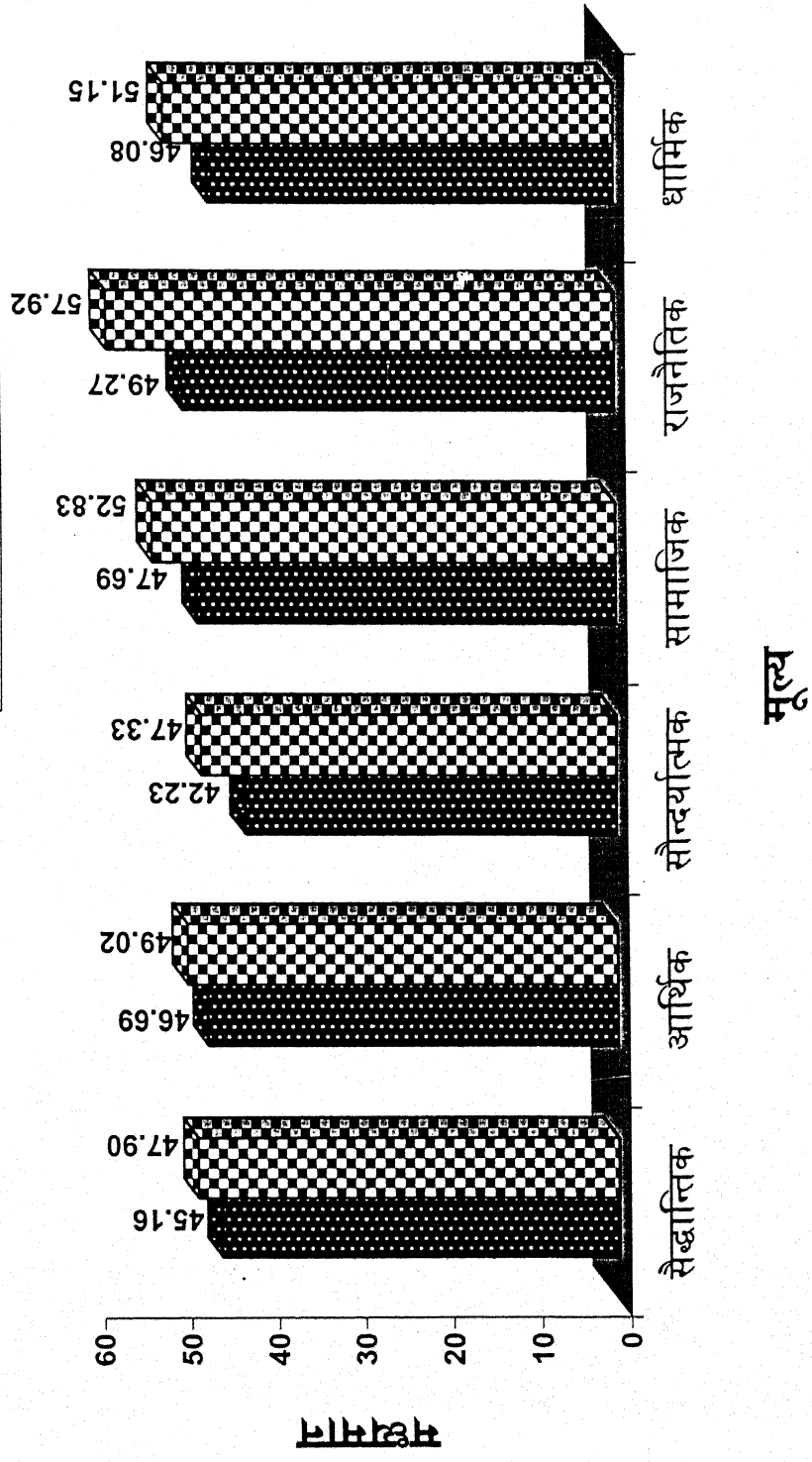
(4.6) सरस्वती शिशु मन्दिर के शिक्षकों के विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन:–

सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत शिक्षकों के
सैद्धान्तिक मूल्य आयु वर्गो के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.31

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षकों की आयु वर्षों में	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सैद्धान्तिक मूल्य	1.	40 वर्ष से कम	45.16	9.45	–	–	3.82
	2.	40 वर्ष से अधिक	52.92	11.29	–	–	

उपरोक्त तालिका (4.31) से स्पष्ट है कि सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत 40 वर्ष की आयु से कम तथा 40 वर्ष की आयु से अधिक वाले शिक्षकों में सैद्धान्तिक मूल्य स्तर पर अन्तर पाया गया (टी–3.82)। अतः 40 वर्ष से कम तथा 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (45.16) तथा (52.92) से ज्ञात होता है कि 40 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों की तुलना में 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों के सैद्धान्तिक मूल्य अधिक उच्च हैं। सार्थक अन्तर पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत शिक्षकों के

आर्थिक मूल्य आयु वर्गो के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.32

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षकों की आयु वर्षों में	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
आर्थिक मूल्य	1.	40 वर्ष से कम	56.59	9.39	–	–	5.41
	2.	40 वर्ष से अधिक	50.02	11.70	–	–	

तालिका (4.32) के अवलोकन से ज्ञात होता है कि सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत 40 वर्ष की आयु से कम तथा 40 वर्ष की आयु से अधिक वाले शिक्षकों में आर्थिक मूल्य के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–5.41)। अतः 40 वर्ष से कम तथा 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता नहीं रखते हैं। मध्यमान (56.59) तथा (50.02) से ज्ञात होता है कि 40 वर्ष से अधिक के शिक्षकों की तुलना में 40 वर्ष की आयु से कम वाले शिक्षकों के आर्थिक मूल्य उच्च हैं। सार्थक अन्तर पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य आयु वर्गो के सन्दर्भ में

तालिका नं॰ 4.33

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षकों की आयु वर्षों में	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सौन्दर्यात्मक मूल्य	1.	40 वर्ष से कम	57.23	11.51	–	–	0.06
	2.	40 वर्ष से अधिक	52.33	13.49	–	–	

उपरोक्त तालिका (4.33) से स्पष्ट है कि सरस्वती शिशु मंदिर में कार्यरत 40 वर्ष की आयु से कम तथा 40 वर्ष की आयु से अधिक के शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया (टी–0.06)। अतः 40 वर्ष से कम तथा 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता नहीं रखते हैं। मध्यमान (57.23) तथा (52.33) से पता चलता है कि 40 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों की तुलना में 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों के मूल्य के मध्यमान उच्च पाये गये। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना स्वीकार की गयी।

सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत शिक्षकों के सामाजिक मूल्य आयु वर्गों के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.34

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षकों की आयु वर्षों में	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सामाजिक मूल्य	1.	40 वर्ष से कम	47.69	8.46	–	–	3.71
	2.	40 वर्ष से अधिक	56.83	11.46	–	–	

उपरोक्त तालिका (4.34) से स्पष्ट है कि सरस्वती शिशु मंदिर में कार्यरत 40 वर्ष की आयु से कम तथा 40 वर्ष की आयु से अधिक के शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–3.71)। अतः 40 वर्ष से अधिक तथा 40 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (47.69) तथा (56.83) से यह ज्ञात होता है कि 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों का सामाजिक मूल्य 40 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों की तुलना में उच्च है। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत शिक्षकों के
राजनैतिक मूल्य आयु वर्गो के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.35

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षकों की आयु वर्षों में	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
राजनैतिक मूल्य	1.	40 वर्ष से कम	49.27	9.49	सार्थक	–	2.83
	2.	40 वर्ष से अधिक	57.92	12.71	सार्थक	–	

उपरोक्त तालिका (4.35) से ज्ञात होता है कि सरस्वती शिशु मन्दिर के 40 वर्ष से कम तथा 40 वर्ष की आयु से अधिक आयु वाले शिक्षकों के राजनैतिक मूल्यों में अन्तर पाया गया (टी–2.83)। अतः 40 वर्ष से कम व 40 वर्ष की आयु से अधिक आयु वाले शिक्षक इस स्तर पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (49.27) तथा (57.92) से पता चलता है कि 40 वर्ष की आयु से अधिक वाले शिक्षकों का मध्यमान 40 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों की तुलना में राजनैतिक मूल्य मध्यमान उच्च रखते हैं। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत शिक्षकों के धार्मिक मूल्य आयु वर्गो के सन्दर्भ में

तालिका नं० 4.36

मूल्य	क्रम सं0	शिक्षकों की आयु वर्षों में	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
धार्मिक मूल्य	1.	40 वर्ष से कम	46.08	8.70	–	–	1.86
	2.	40 वर्ष से अधिक	50.15	11.49	–	–	

तालिका (4.36) से स्पष्ट है कि सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत 40 वर्ष की आयु से कम तथा 40 वर्ष की आयु से अधिक आयु वाले शिक्षकों के धार्मिक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–1.86) से ज्ञात होता है कि विद्यालय में 40 वर्ष से कम तथा 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (46.08) तथा (50.15) से स्पष्ट होता है कि 40 वर्ष से कम आयु वाले शिक्षकों की तुलना में 40 वर्ष से अधिक आयु वाले शिक्षकों के धार्मिक मूल्य के मध्यमान उच्च्व हैं। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

ग्राफ–6 : सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के विभिन्न मूल्य (आयु वर्गों के अनुसार)
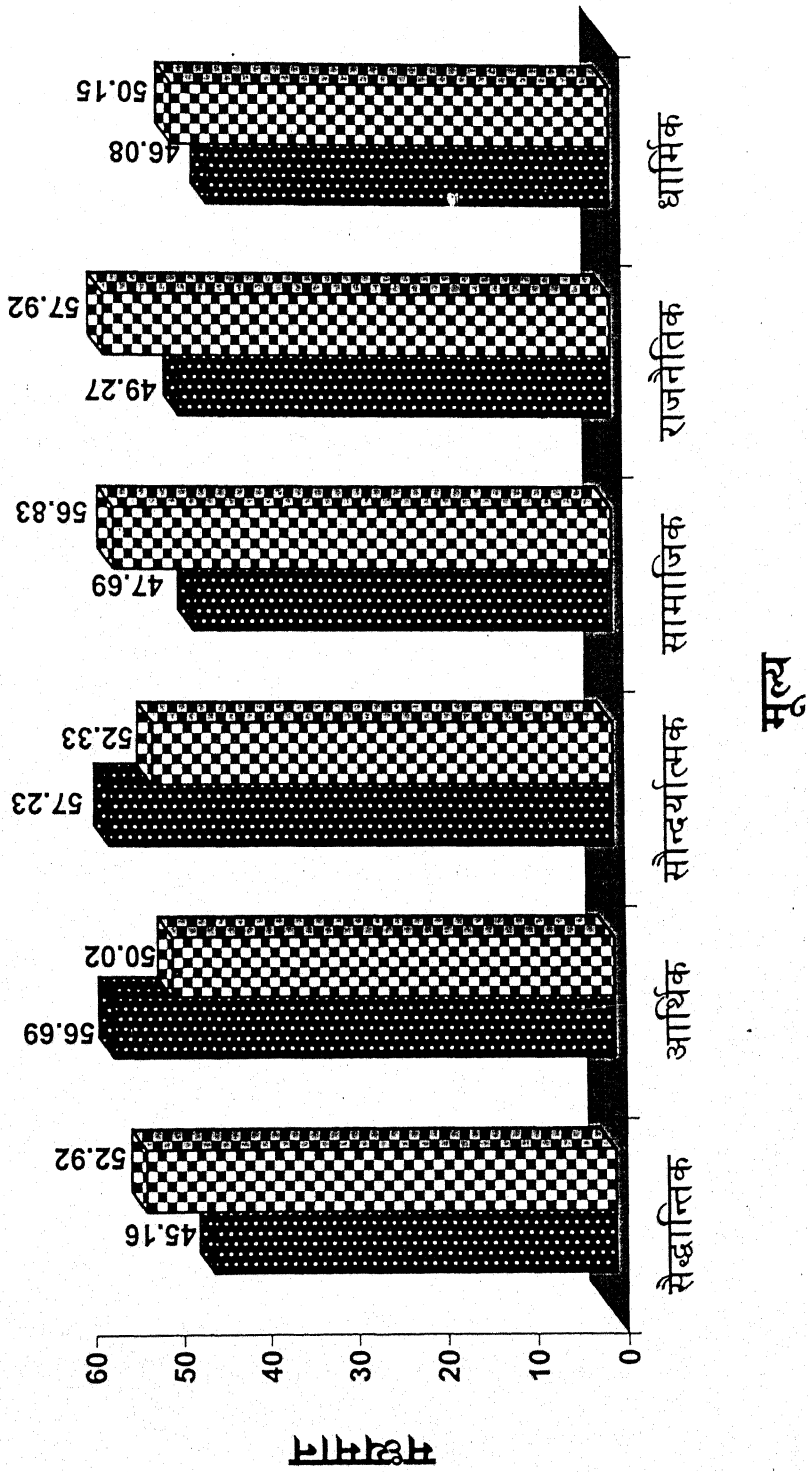
(4.7) सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन:–

सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्य

तालिका नं० 4.37

मूल्य	क्रम सं0	प्राथमिक विद्यालय	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सैद्धान्तिक मूल्य	1.	सरकारी	44.22	5.45	सार्थक	–	2.18
	2.	निजी	43.09	4.784	सार्थक	–	

उपरोक्त तालिका (4.37) से स्पष्ट होता है कि सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में सौन्दर्यात्मक मूल्य के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–2.18)। अतः दोनों प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (44.22) तथा (43.09) से स्पष्ट है कि निजी विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा सरकारी विद्यालयों के शिक्षक इस मूल्य पर उच्चता रखते हैं। सार्थकता के (0.05) स्तर पर यह परिकल्पना सार्थक पायी गयी। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के आर्थिक मूल्य

तालिका नं० 4.38

मूल्य	क्रम सं0	प्राथमिक विद्यालय	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
आर्थिक मूल्य	1.	सरकारी	42.31	6.16	–	–	0.171
	2.	निजी	42.22	6.23	–	–	

उपरोक्त तालिका (4.38) के अवलोकन से ज्ञात होता है कि निजी एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में आर्थिक मूल्य के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर नहीं है (टी–0.17)। अतः स्पष्ट है कि दोनों प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक इस मूल्य पर समानता रखते हैं। मध्यमान (42.31) तथा (42.22) से स्पष्ट है कि दोनों विद्यालय के शिक्षक इस मूल्य पर कोई विशेष भिन्नता नहीं रखते। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना स्वीकार की गयी।

सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य

तालिका नं० 4.39

मूल्य	क्रम सं0	प्राथमिक विद्यालय	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सौन्दर्यात्मक मूल्य	1.	सरकारी	36.23	7.76	–	सार्थक	6.74
	2.	निजी	32.05	6.80	–	सार्थक	

उपरोक्त तालिका (4.39) से ज्ञात है कि सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में सौन्दर्यात्मक मूल्य के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–6.74)। अतः दोनों प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (36.23) तथा (32.05) से ज्ञात होता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों के सौन्दर्यातमक मूल्य उच्च हैं। सार्थकता के (0.01) स्तर पर यह परिकल्पना सार्थक पायी गयी। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के

अध्यापकों के सामाजिक मूल्य

तालिका नं० 4.40

मूल्य	क्रम सं0	प्राथमिक विद्यालय	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सामाजिक मूल्य	1.	सरकारी	49.21	6.15	–	सार्थक	4.16
	2.	निजी	51.37	6.02	–	सार्थक	

उपरोक्त तालिका (4.40) से स्पष्ट होता है कि सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में सामाजिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–4.16) अतः सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (49.21) तथा (51.37) से ज्ञात होता है कि निजी प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों के सामाजिक मूल्य उच्च हैं। सार्थकता के (0.01) स्तर पर यह सार्थक पायी गयी। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के राजनैतिक मूल्य

तालिका नं० 4.41

मूल्य	क्रम सं0	प्राथमिक विद्यालय	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
राजनैतिक मूल्य	1.	सरकारी	28.37	5.60	–	सार्थक	3.43
	2.	निजी	27.81	6.51	–	सार्थक	

उपरोक्त तालिका (4.41) से स्पष्ट होता है कि सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में सामाजिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–3.43)। अतः सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (28.37) तथा (27.81) से ज्ञात होता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों के राजनैतिक मूल्य उच्च हैं। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी। (0.01) स्तर पर सार्थक।

सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के धार्मिक मूल्य

तालिका नं० 4.42

मूल्य	क्रम सं0	प्राथमिक विद्यालय	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
धार्मिक मूल्य	1.	सरकारी	40.55	10.7	–	सार्थक	3.37
	2.	निजी	43.19	8.21	–	सार्थक	

उपरोक्त तालिका (4.42) से स्पष्ट होता है कि सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में सामाजिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–3.37)। अतः यह स्पष्ट है कि धार्मिक मूल्य पर दोनों विद्यालयों के शिक्षक विभिन्नता रखते हैं। मध्यमान (40.55) तथा (43.19) से स्पष्ट होता है कि निजी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षक सरकारी विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा धार्मिक मूल्य अधिक रखते हैं। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी। (0.01) स्तर पर सार्थक।

ग्राफ–7 : सरकारी एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के विभिन्न मूल्य

सरकारी विद्यालय के अध्यापक
निजी विद्यालय के अध्यापक

60
50
40
30
20
10
0

मध्यमान

44.22
43.09
42.31
42.22
36.23
32.05
49.21
51.37
28.37
27.81
40.55
43.19

सैद्धान्तिक
आर्थिक
सौन्दर्यात्मक
सामाजिक
राजनैतिक
धार्मिक

मूल्य
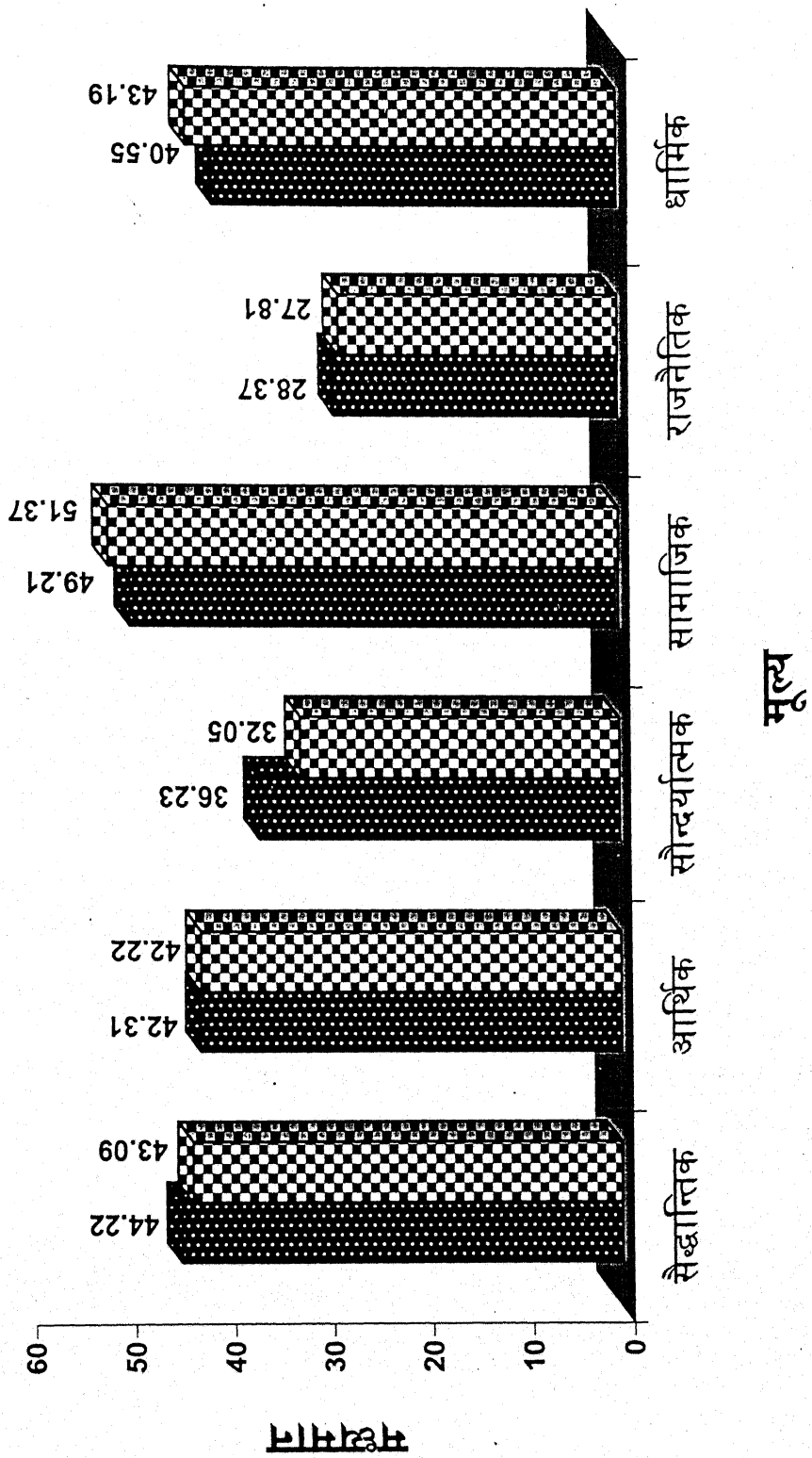
(4.8) निजी प्राथमिक विद्यालय एवं सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययनः–

निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्य

तालिका नं० 4.43

मूल्य	क्रम सं0	प्राथमिक विद्यालय	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सैद्धान्तिक मूल्य	1.	निजी	41.89	6.10	–	–	0.25
	2.	सरस्वती शिशु मन्दिर	41.67	4.75	–	–	

उपरोक्त तालिका (4.43) के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सरस्वती शिशु मन्दिर एवं निजी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों में सैद्धान्तिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया (टी–0.25)। अतः स्पष्ट है कि सरस्वती शिशु मन्दिर एवं निजी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक इस मूल्य पर समानता रखते हैं। मध्यमान (41.89) तथा (41.67) से स्पष्ट होता है कि दोनों विद्यालयों के शिक्षकों के सैद्धान्तिक मूल्य लगभग समान हैं। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना स्वीकार की गयी।

निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के आर्थिक मूल्य

तालिका नं० 4.44

मूल्य	क्रम सं0	प्राथमिक विद्यालय	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
आर्थिक मूल्य	1.	निजी	41.81	5.87	सार्थक	–	2.22
	2.	सरस्वती शिशु मन्दिर	44.16	6.70	सार्थक	–	

उपरोक्त तालिका (4.44) के अवलोकन से ज्ञात होता है कि निजी प्राथमिक विद्यालय एवं सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत शिक्षकों में आर्थिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–2.22)। अतः दोनों विद्यालयों के शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (41.81) तथा (44.16) से स्पष्ट होता है कि सरस्वती शिशु मन्दिर के शिक्षकों के आर्थिक मूल्य उच्च हैं। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य

तालिका नं० 4.45

मूल्य	क्रम सं0	प्राथमिक विद्यालय	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सौन्दर्यात्मक मूल्य	1.	निजी	34.45	7.14	–	सार्थक	4.22
	2.	सरस्वती शिशु मन्दिर	31.57	6.35	–	सार्थक	

उपरोक्त तालिका (4.45) के स्पष्ट होता है कि निजी प्राथमिक विद्यालय एवं सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत शिक्षकों में सौन्दर्यात्मक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–4.22)। अतः उक्त दोनों विद्यालयों के शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (34.45) तथा (31.57) से स्पष्ट होता है कि निजी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य उच्च हैं। सार्थकता के (.01) स्तर पर यह परिकल्पना स्वीकार की गयी। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के सामाजिक मूल्य

तालिका नं० 4.46

मूल्य	क्रम सं0	प्राथमिक विद्यालय	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सामाजिक मूल्य	1.	निजी	49.74	6.61	–	–	1.93
	2.	सरस्वती शिशु मन्दिर	51.64	5.74	–	–	

उपरोक्त तालिका (4.46) से स्पष्ट होता है कि निजी प्राथमिक विद्यालय एवं सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत शिक्षकों में सामाजिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–1.93)। अतः उक्त दोनों विद्यालयों के शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (49.74) तथा (51.64) से स्पष्ट होता है कि सरस्वती शिशु मन्दिर के शिक्षक सामाजिक मूल्य पर उच्च हैं। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के राजनैतिक मूल्य

तालिका नं० 4.47

मूल्य	क्रम सं0	प्राथमिक विद्यालय	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
राजनैतिक मूल्य	1.	निजी	27.81	6.71	-	-	0.64
	2.	सरस्वती शिशु मन्दिर	27.11	5.85	-	-	

उपरोक्त तालिका (4.47) के अध्ययन से ज्ञात होता है कि निजी प्राथमिक विद्यालय एवं सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत शिक्षकों में राजनैतिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया (टी-0.64)। अतः दोनों विद्यालयों के शिक्षक इस मूल्य पर समानता रखते हैं। मध्यमान (27.81) तथा (27.11) से स्पष्ट है कि उक्त दोनों विद्यालयों के शिक्षकों के राजनैतिक मूल्यों में विशेष अन्तर नहीं है। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के धार्मिक मूल्य

तालिका नं० 4.48

मूल्य	क्रम सं0	प्राथमिक विद्यालय	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
धार्मिक मूल्य	1.	निजी	40.14	11.01	सार्थक	–	2.18
	2.	सरस्वती शिशु मन्दिर	42.57	7.25	सार्थक	–	

उपरोक्त तालिका (4.48) के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि निजी प्राथमिक विद्यालय एवं सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत शिक्षकों में धार्मिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–2.18)। अतः दोनों विद्यालयों के शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (40.14) तथा (42.57) से स्पष्ट होता है कि धार्मिक मूल्य पर सरस्वती शिशु मन्दिर के शिक्षकों के मूल्य उच्च हैं। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी। (0.05) के स्तर पर सार्थक।

ग्राफ–8 : निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के विभिन्न मूल्य
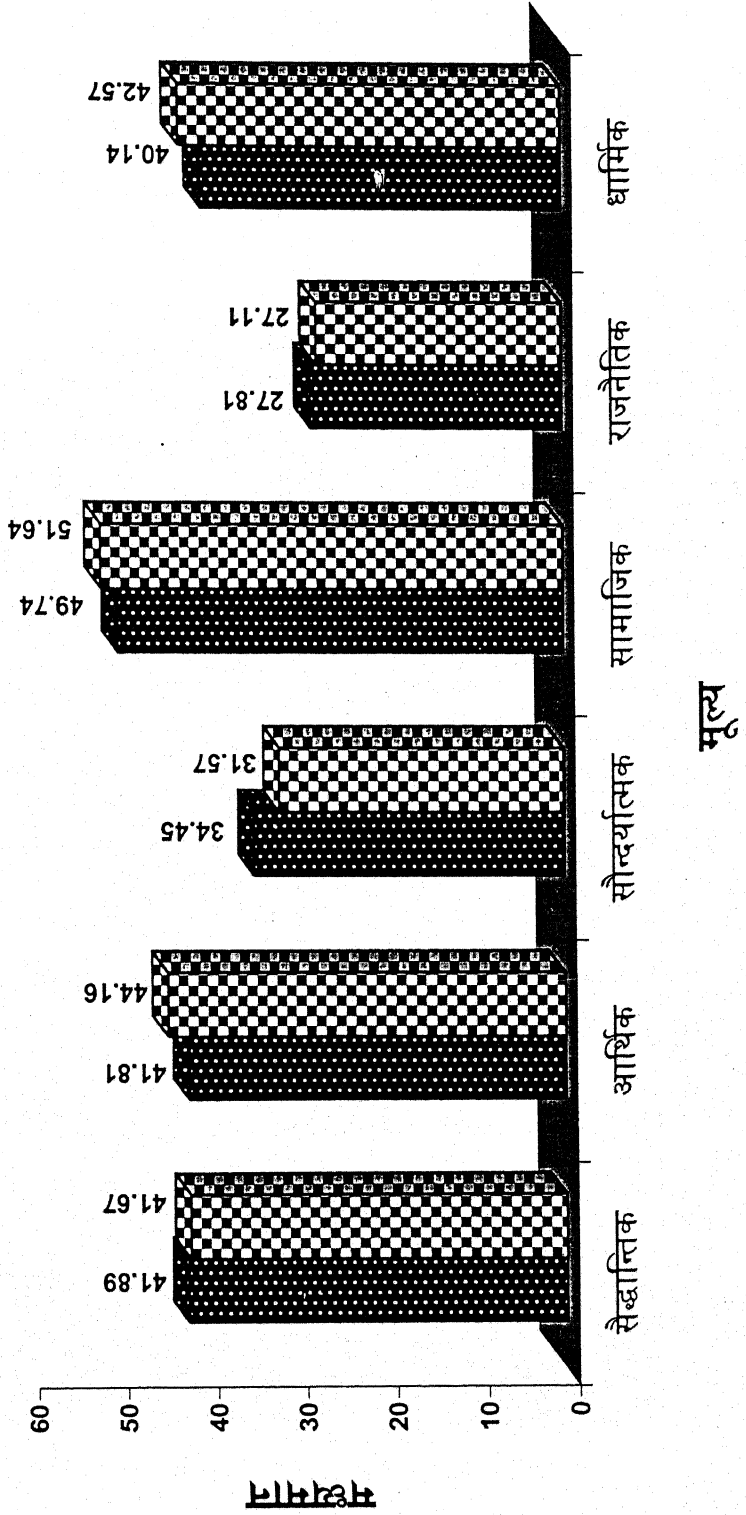
(4.9) सरकारी प्राथमिक विद्यालय एवं सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के विभिन्न मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययनः–

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के सैद्धान्तिक मूल्य

तालिका नं० 4.49

मूल्य	क्रम सं0	प्राथमिक विद्यालय	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सैद्धान्तिक मूल्य	1.	सरकारी	41.90	5.71	–	–	0.01
	2.	सरस्वती शिशु मन्दिर	41.91	4.98	–	–	

उपरोक्त तालिका (4.49) से स्पष्ट होता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय एवं सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत शिक्षकों में सैद्धान्तिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया (टी–0.01)। अतः दोनों विद्यालयों के शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता नहीं रखते हैं। मध्यमान (41.90) तथा (41.91) से स्पष्ट होता है कि दोनों विद्यालयों के शिक्षक सैद्धान्तिक मूल्य पर समानता रखते हैं। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना स्वीकार की गयी।

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के आर्थिक मूल्य

तालिका नं० 4.50

मूल्य	क्रम सं0	प्राथमिक विद्यालय	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
आर्थिक मूल्य	1.	सरकारी	42.09	6.25	–	–	1.36
	2.	सरस्वती शिशु मन्दिर	43.17	6.34	–	–	

उपरोक्त तालिका (4.50) से ज्ञात होता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय एवं सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत शिक्षकों के आर्थिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया (टी–1.36)। अतः उक्त दोनों विद्यालयों के शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (42.09) तथा (43.17) से स्पष्ट होता है कि सरस्वती शिशु मन्दिर के शिक्षकों के आर्थिक मूल्य उच्च हैं। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर के

अध्यापकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य

तालिका नं० 4.51

मूल्य	क्रम सं0	प्राथमिक विद्यालय	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
सौन्दर्यात्मक मूल्य	1.	सरकारी	33.19	7.60	–	–	1.79
	2.	सरस्वती शिशु मन्दिर	31.53	6.48	–	–	

उपरोक्त तालिका (4.51) से स्पष्ट होता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय एवं सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–1.79)। अतः उक्त विद्यालयों के शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (33.19) तथा (31.53) से स्पष्ट होता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के सौन्दर्यात्मक मूल्य उच्च हैं। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के सामाजिक मूल्य

तालिका नं० 4.52

<table>
<tr><th rowspan="2">मूल्य</th><th rowspan="2">क्रम सं0</th><th rowspan="2">प्राथमिक विद्यालय</th><th rowspan="2">मध्यमान</th><th rowspan="2">मानक विचलन</th><th colspan="2">सार्थकता</th><th rowspan="2">"टी" मान</th></tr>
<tr><th>.05 पर</th><th>.01 पर</th></tr>
<tr><td rowspan="2">सामाजिक मूल्य</td><td>1.</td><td>सरकारी</td><td>50.60</td><td>7.45</td><td>–</td><td>–</td><td rowspan="2">0.70</td></tr>
<tr><td>2.</td><td>सरस्वती शिशु मन्दिर</td><td>52.11</td><td>5.76</td><td>–</td><td>–</td></tr>
</table>

उपरोक्त तालिका (4.52) से स्पष्ट होता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय एवं सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत शिक्षकों में सामाजिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया (टी–0.70)। अतः दोनों विद्यालयों के शिक्षक इस मूल्य पर विशेष भिन्नता नहीं रखते। मध्यमान (50.60) तथा (52.11) से स्पष्ट होता है कि सरस्वती शिशु मन्दिर के शिक्षकों के सामाजिक मूल्य उच्च हैं। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना स्वीकार की गयी।

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के राजनैतिक मूल्य

तालिका नं० 4.53

मूल्य	क्रम सं0	प्राथमिक विद्यालय	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
राजनैतिक मूल्य	1.	सरकारी	28.09	6.41	–	–	0.89
	2.	सरस्वती शिशु मन्दिर	26.65	5.92	–	–	

उपरोक्त तालिका (4.53) से स्पष्ट होता है कि सरस्वती शिशु मन्दिर एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों में राजनैतिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–0.89)। अतः उक्त दोनों विद्यालयों के शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (28.09) तथा (26.65) से स्पष्ट है कि राजनैतिक मूल्य पर सरकारी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षक उच्च हैं। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी।

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के धार्मिक मूल्य

तालिका नं० 4.54

मूल्य	क्रम सं0	प्राथमिक विद्यालय	मध्यमान	मानक विचलन	सार्थकता		"टी" मान
					.05 पर	.01 पर	
धार्मिक मूल्य	1.	सरकारी	36.74	9.47	सार्थक	–	2.57
	2.	सरस्वती शिशु मन्दिर	43.27	6.53	सार्थक	–	

उपरोक्त तालिका (4.54) के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय एवं सरस्वती शिशु मन्दिर में कार्यरत शिक्षकों में धार्मिक मूल्यों के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया (टी–2.57)। अतः उक्त दोनों विद्यालयों के शिक्षक इस मूल्य पर भिन्नता रखते हैं। मध्यमान (36.74) तथा (43.27) से स्पष्ट है कि सरस्वती शिशु मन्दिर के शिक्षकों के धार्मिक मूल्य सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक उच्च हैं। सार्थक अन्तर के आधार पर यह परिकल्पना अस्वीकार की गयी। (0.05) स्तर पर सार्थक।

ग्राफ–9 : सरकारी प्राथमिक विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के विभिन्न मूल्य
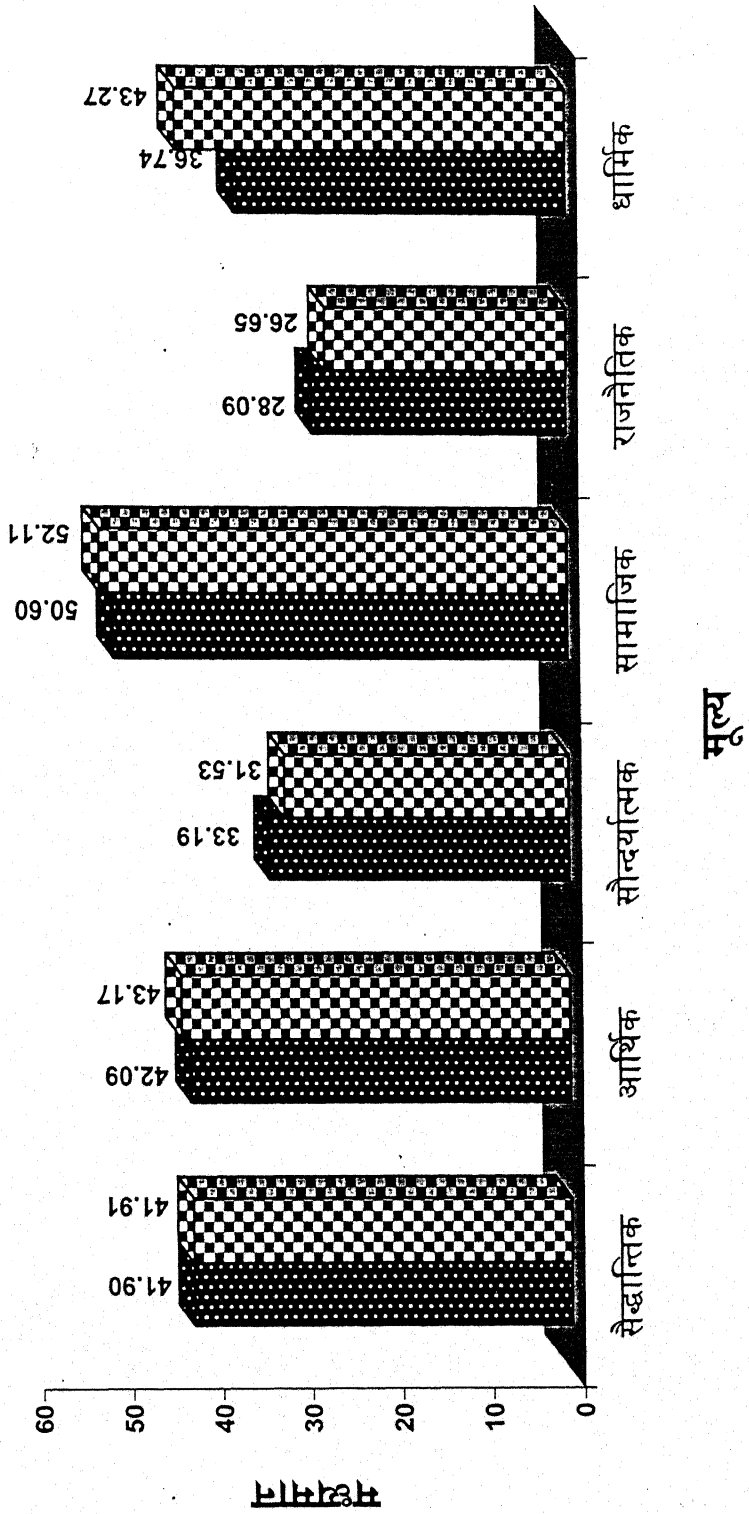
अध्याय–5

निष्कर्ष, सामान्यीकरण एवं सुझाव

पंचम अध्याय

निष्कर्ष, सामान्यीकरण एवं सुझाव

5.1 निष्कर्ष :–

अन्वेषिका ने समस्या का चुनाव करने के पश्चात उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं का निर्माण करते हुए सन्दर्भित आंकड़े एकत्र किये तत्पश्चात् प्राप्त आंकड़ों को अर्थ प्रदान करने हेतु चयनित सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग कर आंकड़ों का विवेचन एवं विश्लेषण किया जिसके उपरान्त समस्या के सन्दर्भ में निष्कर्ष प्राप्त किये जो निम्न प्रकार हैं:–

● सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के सन्दर्भ में –

➲ सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के वरिष्ठ एवं कनिष्ठ अध्यापकों के परस्पर अध्ययन के द्वारा पाया गया कि वरिष्ठ अध्यापकों में सैद्धान्तिक, सामाजिक एवं धार्मिक मूल्य अधिक पाये गये जबकि कनिष्ठ अध्यापकों में आर्थिक एवं राजनैतिक मूल्य अधिक पाये गये। वरिष्ठ अध्यापकों एवं कनिष्ठ अध्यापकों में किसी भी मूल्य पर समानता नहीं पायी गयी।

➲ सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापकों का अध्ययन जब आयु वर्गो के सन्दर्भ में किया गया तो पाया कि 40 वर्ष की आयु से अधिक वाले अध्यापक 40 वर्ष से कम आयु वाले अध्यापकों की तुलना में सैद्धान्तिक, सामाजिक एवं धार्मिक मूल्य अधिक रखते हैं। 40 वर्ष से कम आयु वाले अध्यापकों में ये मूल्य अपेक्षाकृत कम पाये गये आर्थिक मूल्य के सन्दर्भ में 40 वर्ष से अधिक एवं 40 वर्ष से कम आयु के अध्यापकों में कोई अन्तर नहीं पाया गया। 40 वर्ष से कम आयु वाले अध्यापकों में सौन्दर्यात्मक मूल्य अधिक पाये गये।

- सरकारी प्राथमिक विद्यालयों तथा निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के परस्पर अध्ययन स्वरूप पाया गया कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों में निजी प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की अपेक्षा सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक एवं राजनैतिक मूल्य अधिक पाये गये जबकि निजी प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों में केवल धार्मिक मूल्य अधिक पाये गये तथा उक्त दोनों प्रकार के विद्यालयों के अध्यापकों में आर्थिक मूल्य पर कोई अन्तर नहीं पाया गया। मुद्रा के प्रति दोनों विद्यालयों के अध्यापकों में समानता पायी गयी।

- सरकारी प्राथमिक विद्यालय तथा सरस्वती शिशु मन्दिनर के अध्यापकों के परस्पर अध्ययन में पाया गया कि सरकारी प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों में सौन्दर्यात्मक एवं राजनैतिक केवल दो ही मूल्य अधिक पाये गये। सरकारी प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों में कला, संगीत आदि मे अधिक रूचि पायी गयी जबकि उक्त दोनों विद्यालयों के अध्यापकों में केवल सैद्धान्तिक मूल्य पर समानता पायी गयी।

- **निजी प्राथमिक विद्यालयों के सन्दर्भ में–**

- निजी प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापकों के वरिष्ठ एवं कनिष्ठ वर्ग के अध्यापकों का परस्पर अध्ययन करने के पश्चात पाया गया कि वरिष्ठ वर्ग के अध्यापकों में सौन्दर्यात्मक एवं राजनैतिक मूल्य अधिक पाये गये जबकि कनिष्ठ वर्ग के अध्यापकों के अन्तर्गत सैद्धान्तिक एवं आर्थिक मूल्य अधिक पाये गये। उक्त दोनों विद्यालयों के दोनों वर्गो के अध्यापकों में सामाजिक एवं आर्थिक मूल्यों के सन्दर्भ में कोई अन्तर नहीं पाया गया।

- निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों का अध्ययन जब आयु वर्गो (40 वर्ष से कम तथा 40 वर्ष से अधिक) के आधार पर किया गया तो पाया कि 40 वर्ष की आयु से अधिक वाले अध्यापकों में सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक तथा धार्मिक मूल्य अधिक पाये गये जबकि 40 वर्ष से कम आयु वाले अध्यापकों में केवल आर्थिक मूल्य ही अधिक पाये गये। उक्त दोनों विद्यालयों के दोनों आयु वर्ग के अध्यापकों में किसी भी मूल्य पर समानता नहीं पायी। 40 वर्ष की आयु से अधिक वाले अध्यापकों की अपेक्षा 40 वर्ष से कम आयु वाले अध्यापक मुद्रा संचय पर अधिक बल देते हैं।

- निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों के परस्पर अध्ययन से ज्ञात हुआ कि निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों में सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक एवं राजनैतिक मूल्य सरकारी प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की अपेक्षा कम पाये गये निजी विद्यालयों के अध्यापकों में केवल धार्मिक मूल्य ही अधिक पाये गये। उक्त दोनों विद्यालयों के अध्यापकों में आर्थिक मूल्य समान पाये गये।

- निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों का अध्ययन जब सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों से किया गया तो परिणामस्वरूप पाया कि निजी प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों में केवल सौन्दर्यात्मक मूल्य ही अधिक पाये गये। निजी प्राथमिक विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों में राजनैतिक एवं आर्थिक मूल्यों के सन्दर्भ मे कोई अन्तर नहीं पाया गया जबकि आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक मूल्य अपेक्षाकृत कम पाये गये।

- **सरस्वती शिशु मन्दिर के सन्दर्भ में–**

➲ सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों का अध्ययन जब वरिष्ठ एवं कनिष्ठ वर्गो के सन्दर्भ में किया गया तो पाया कि वरिष्ठ अध्यापकों में कनिष्ठ अध्यापकों की अपेक्षा सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक एवं धार्मिक मूल्य अधिक पाये गये जबकि कनिष्ठ अध्यापकों में वरिष्ठ अध्यापकों की अपेक्षा आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक मूल्य अधिक पाये गये। उक्त दोनों विद्यालयों के अध्यापकों में किसी भी मूल्य पर समानता नहीं पायी गयी।

➲ सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों का आयु वर्गो (40 वर्ष से कम तथा 40 वर्ष से अधिक) के सन्दर्भ में अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि 40 वर्ष से अधिक आयु वाले अध्यापकों में 40 वर्ष से कम आयु वाले अध्यापकों की तुलना में सैद्धान्तिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्य अधिक पाये गये जबकि 40 वर्ष से कम आयु वाले अध्यापकों में अपेक्षाकृत आर्थिक एवं सौन्दर्यात्मक मूल्य अधिक पाये गये। उक्त विद्यालय के किसी भी वर्ग के अध्यापकों में किसी भी मूल्य पर समानता नहीं पायी गयी।

➲ सरस्वती शिशु मन्दिर एवं सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों के परस्पर अध्ययन स्वरूप पाया गया कि सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों में सरकारी प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों की अपेक्षा धार्मिक, सामाजिक, एवं आर्थिक मूल्य अधिक पाये गये जबकि सौन्दर्यात्मक एवं राजनैतिक मूल्य अपेक्षाकृत कम पाये गये। उक्त दोनों विद्यालयों के अध्यापकों में केवल सामाजिक मूल्य पर ही समानता पायी गयी।

➲ सरस्वती शिशु मन्दिर एवं निजी प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों के परस्पर अध्ययन स्परूप पाया गया कि सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों में आर्थिक,

सामाजिक एवं धार्मिक मूल्य अधिक पाये गये जबकि सौन्दर्यात्मक मूल्य अपेक्षाकृत कम पाये गये। उक्त दोनों विद्यालयों के अध्यापकों में राजनैतिक एवं आर्थिक दोनों मूल्य पर समानता पायी गयी। अतः सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों में नीति, मुद्रा संचय आदि के सन्दर्भ में अन्तर नहीं पाया गया।

5.2 सामान्यीकरणः–

उपरोक्त निष्कर्षों को प्राप्त करने के पश्चात इन निष्कर्षों के विभिन्न विद्यालयों के सन्दर्भ में निम्न प्रकार से सामान्यीकृत किया जा सकता है–

- **सरकारी प्राथमिक विद्यालय के सन्दर्भ में–**

➲ सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के वरिष्ठ अध्यापक आर्थिक तथा धार्मिक कार्यो में कम विश्वास रखते हैं जबकि सरकारी प्राथमिक विद्यालयो के कनिष्ठ अध्यापक आर्थिक एवं धार्मिक क्रियाओं को सर्वाधिक प्राथमिकता देते हैं।

➲ सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के विभिन्न मूल्यों का आयु वर्गो के आधार पर हम कह सकते हैं कि सरकरी विद्यालयों में कार्यरत 40 वर्ष की आयु से अधिक के अध्यापक अधिक सैद्धान्तिक एवं धार्मिक होते हैं तथा इस आयु वर्ग के अध्यापकों में आपसी प्रेम, सौहार्द एवं लोक कल्याण की भावना अधिक होती है। इस आयु के अध्यापक धन एवं मुद्रा आदि को सामान्य से कम महत्व देते हैं जबकि 40 वर्ष की आयु से कम के अध्यापक सामान्यतः कम सैद्धान्तिक होते हैं उनका धार्मिक कृत्यों पूजा पाठ एवं आस्तिकता में सामान्य विश्वास होता है। इसी आयु वर्ग के अध्यापकों में कला, संगीत, आदि में अधिक रूचि होती है।

➲ सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापक निजी विद्यालयों की अपेक्षा अधिक अनुशासित होते हैं। इन अध्यापकों में सच के प्रति अधिक निष्ठा, बौद्धिकता अधिक पायी जाती है। सरकारी अध्यापक संगत, कला, साहित्य आदि में अधिक रूचि रखते हैं। इन अध्यापकों में मुद्रा के प्रति आकर्षण एवं धर्म निष्ठा भी कम होती है। ये अध्यापक पद, प्रतिष्ठा, सम्मान, यश एवं कीर्ति को अधिक महत्व देते हैं।

➲ सरकारी प्राथमिक विद्यालयों एवं सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के अध्ययन से पता चलता है कि सरकारी अध्यापकों में सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों की अपेक्षा संगीत, कला एवं साहित्यिक गतिविधियों के प्रति अधिक रूचि होती है। ये अध्यापक यश, कीर्ति, सम्मान आदि को अधिक महत्व देते हैं। सैद्धान्तिक मूल्य स्तर पर सरकारी अध्यापक सामान्य होते हैं।

- **निजी प्राथमिक विद्यालयों के सन्दर्भ में–**

➲ निजी प्राथमिक विद्यालयों के वरिष्ठ एवं कनिष्ठ अध्यापकों के अध्ययन से स्पष्ट होता हैकि वरिष्ठ अध्यापकों में संगीत, कला, साहित्य के प्रति अधिक रूचि होती है। ये अध्यापक कनिष्ठ अध्यापकों की अपेक्षा राजनीतिक गतिविधियों, यश, सम्मान एवं कीर्ति आदि को अधिक महत्व देते हैं। जबकि कनिष्ठ अध्यापक अधिक सैद्धान्तिक होते हैं। ये अध्यापक बौद्धिक पहुंच को अधिक महत्व देते हैं। इन अध्यापकों में मुद्रा के प्रति अधिक आकर्षण पाया जाता है। तथा ये अध्यापक पूजा पाठ, ईश्वर निष्ठा, आस्तिकवाद आदि में अधिक विश्वास करते हैं। निजी प्राथमिक विद्यालयो में वरिष्ठ एवं कनिष्ठ दोनों प्रकार के अध्यापक आपसी प्रेम, भाईचारा, लोक कल्याण आदि गतिविधियों में सामान्य होते हैं।

- निजी प्राथमिक विद्यालयों में 40 वर्ष से कम तथा 40 वर्ष से अधिक की आयु वाले अध्यापकों में 40 वर्ष से अधिक की आयु वाले अध्यापक अधिक सैद्धान्तिक, सौन्दर्यात्मक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक होते हैं। अतः कहा जा सकता है कि इस आयु के अध्यापक अधिक बौद्धिक, सत्य, रूचि, संगीत, नृत्य, कला एवं साहित्य के प्रति अधिक प्रेम रखते हैं। इस आयु के अध्यापकों में परस्पर प्रेम, भाईचारा एवं लोक कल्याण की भावना अपेक्षाकृत अधिक होती है। इस आयु के अध्यापक यश, सम्मान, कीर्ति को अधिक महत्व देते हैं। ये अध्यापक अपेक्षाकृत अधिक धर्म, निष्ठा एवं ईश्वर के प्रति अधिक विश्वास रखते हैं। 40 वर्ष की कम आयु वाले अध्यापक 40 वर्ष की अधिक आयु वाले अध्यापकों द्वारा वर्जित आर्थिक मूल्य को सर्वाधिक प्राथमिकता देते हैं। इस आयु के अध्यापकों में मुद्रा संचय या धन के प्रति अधिक आकर्षण होता है।

- निजी प्राथमिक विद्यालय एवं सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों के परस्पर अध्ययन से ज्ञात होता है कि शिशु मन्दिर के अध्यापकों में आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक मूल्य अधिक होते हैं। निजी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापक शिशु मन्दिर के अध्यापकों की अपेक्षा कला, संगीत, साहित्य आदि में अधिक रूचि रखते हैं। जबकि सच, बौद्धिक पहुंच, रूचि आदि में शिशु मन्दिर एवं निजी विद्यालय दोनों के अध्यापक सामान्य होते हैं। राजनीतिक क्षेत्र के अन्तर्गत सम्मान, राजनीतिक गतिविधियों एवं यश आदि में भी दोनों विद्यालय के अध्यापक सामान्य रूचि रखते हैं।

- **सरस्वती शिशु मन्दिर के सन्दर्भ में–**

- सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों का वरिष्ठता एवं कनिष्ठता के संदर्भ में अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि वरिष्ठ अध्यापक अपेक्षाकृत अधिक अनुशासित,

सत्यनिष्ठ एवं बौद्धिक रूचि वाले होते हैं। ये अध्यापक कला, संगीत, नृत्य एवं साहित्यिक गतिविधियों में अपेक्षाकृत अधिक रूचि रखते हैं। इन अध्यापकों में धर्म, निष्ठा, ईश्वर निष्ठा अधिक पायी जाती है। इस वर्ग के अध्यापक अपेक्षाकृत अधिक आस्तिक होते हैं जबकि शिशु मन्दिर के कनिष्ठ अध्यापक मुद्रा संचय, आपसी प्रेम, सौहार्द, भाईचारा, लोक कल्याण एवं प्रशासनिक गतिविधियों को अधिक महत्व देते हैं। कनिष्ठ अध्यापक प्रतिष्ठा, यश, कीर्ति आदि को अधिक महत्व देते हैं। कनिष्ठ अध्यापक प्रतिष्ठा, यश, कीर्ति आदि को अधिक महत्व देते हैं। ये अध्यापक अपेक्षाकृत कम अनुशासित होते हैं।

- सरस्वती शिशु मन्दिर के 40 वर्ष की आयु से कम व 40 वर्ष से अधिक आयु वाले अध्यापकों में, 40 वर्ष की आयु से अधिक वाले अध्यापकों मे सैद्धान्तिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक मूल्य अधिक होते हैं। अतः कह सकते हैं कि 40 वर्ष की आयु से अधिक वाले अध्यापकों में अनुशासन, बौद्धिक पहुंच, सत्यनिष्ठा अधिक पायी जाती है। इस आयु के अध्यापक साहित्यिक, कलात्मक, संगीत एवं नृत्य आदि गतिविधियों में कम रूचि वाले होते हैं। इस उम्र के अध्यापक अधिक सामाजिक होते हैं तथा आपसी प्रेम, लोककल्याण एवं सार्वजनिक कार्यों को अधिक महत्व देते हैं। इन अध्यापकों में धर्म के नियमों मे निष्ठा, ईश्वर में विश्वास एवं मान्यता अधिक पायी जाती है ये अध्यापक सम्मान, प्रतिष्ठा एवं कीर्ति के प्रति समर्पित होते हैं। जबकि 40 वर्ष की आयु से कम वाले अध्यापक मुद्रा संचय एवं कलात्मक गतिविधियों में विश्वास रखते हैं। इन अध्यापकों में ये सब मूल्य सामान्य पाये गये।

- सरस्वती शिशु मन्दिर एवं निजी प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों में शिशु मन्दिर के अध्यापकों में मुद्रा संचय एवं मुद्रा आकर्षण अधिक होता है। इस

विद्यालय के अध्यापक अधिक सामाजिक होते हैं। अतः कहा जा सकता है कि ये अध्यापक आपसी प्रेम, भाईचारा, लोक एवं सार्वजनिक कल्याण को अधिक महत्व देते हैं। ये अध्यापक अधिक धर्मनिष्ठ होते हैं। आस्था ईश्वर के प्रति विश्वास एवं धार्मिक नियमों में विश्वास रखते हैं।

➲ सरस्वती शिशु मन्दिर एवं सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों में मुद्रा संचय एवं व्यवहारिकता अधिक होती है। इन अध्यापकों में सामाजिकता भी अधिक पायी जाती है। ये अध्यापक समाज के नियमों का पालन, आपसी प्रेम, लोक कल्याण को अधिक महत्व देते हैं। इन अध्यापकों में धर्म के प्रति अधिक विश्वास, ईश्वर के प्रति आस्था अधिक होती है। ये अध्यापक धार्मिक क्रियाओं में अधिक भाग लेते हैं। तथा सच की खोज, बौद्धिक कार्य आदि में सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों तथा सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों में समानता होती है।

5.3 सुझाव :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन में विभिन्न स्रोतों, समय एवं सीमाओं के कारण अन्वेषिका ने वर्तमान शोध का अध्ययन केवल सीमित उद्देश्यों, क्षेत्र एवं मूल्यों के सन्दर्भ में किया। प्रस्तुत शोध अध्ययन का सभी परिसीमाओं के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में भी अध्ययन किया जा सकता है। इस क्षेत्र में भावी अध्ययन हेतु सुझाव निम्न प्रकार से है:

➲ प्रस्तुत शोध अध्ययन दो जनपद के क्षेत्र में कार्यरत अध्यापकों का अध्ययन है। इसे अधिक जनपदों पर या मण्डल स्तर पर भी किया जा सकता है जिससे निष्कर्ष और अधिक सार्वभौमिक यथार्थ तथा शुद्ध निकाले जा सकते हैं।

- प्रस्तुत शोध में केवल छः मूल्यों का ही अध्ययन किया गया जबकि अध्ययन को अधिक मूल्यों के सन्दर्भ में भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षा के प्राथमिक स्तर को ही चयनित किया गया है जबकि अध्ययन को माध्यमिक, उच्च माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा स्तर पर भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध में अध्ययन हेतु केवल अध्यापकों को चयनित ही किया गया है जबकि मूल्यों का अध्ययन विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के सन्दर्भ में भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन को वरिष्ठ एवं कनिष्ठ अध्यापक वर्गो के सन्दर्भ में किया गया इस अध्ययन को सेवानिवृत्त एवं सेवाकारी अध्यापकों के सन्दर्भ में भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन आयु के सन्दर्भ में किया गया है जबकि अध्ययन लिंग अनुपात में भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन अध्यापकों के सन्दर्भ में किया गया है जबकि यह अध्ययन विद्यार्थियों के सन्दर्भ में भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन में प्राथमिक स्तर के केवल तीन प्रकार (सरकारी, निजी एवं शिशु मन्दिर) विद्यालयों के सन्दर्भ में किया गया है। इस अध्ययन को निकेतन, बाल मन्दिर एवं अन्य प्रकार के प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के सन्दर्भ में भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन में 300 अध्यापकों के न्यायदर्श पर अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन 300 अध्यापकों से अधिक पर भी किया जा सकता है।

- प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल मूल्यों के सन्दर्भ में किया गया है जबकि यह मूल्य एवं अन्य व्यक्तित्व गुण जैसे समायोजन, आत्मनियन्त्रण, आदि के सन्दर्भ में भी किया जा सकता है।

- प्रस्तुत शोध अध्ययन केवलं अध्यापकों पर किया गया है जबकि यह अध्ययन प्राथमिक तथा सैकेन्ड्री तथा सीनियर सैकेण्ड्री एवं स्नातक अध्यापकों के सन्दर्भ में भी किया जा सकता है।

- प्रस्तुत शोध अध्ययन मूल्यों के संदर्भ मे विभिन्न स्तर के अतिरिक्त विभिन्न संकायों जैसे कला, विज्ञान, वाणिज्य, कृषि आदि के अध्यापकों के मूल्यों के सन्दर्भ में भी किया जा सकता है।

- प्रस्तुत शोध अध्ययन के मूल्यों के सन्दर्भ में विभिन्न भाषाओं एवं क्षेत्र के सन्दर्भ में भी किया जा सकता है।

- प्रस्तुत शोध अध्ययन को विभिन्न संकायों के अतिरिक्त विभिन्न विषयों जैसे गणित, विज्ञान, अंग्रेजी आदि के अध्यापकों के सन्दर्भ में भी किया जा सकता है।

- प्रस्तुत शोध अध्ययन के अध्यापकों के मूल्यों के सन्दर्भ में उम्र, सेवाकाल तथा अनुभव के सन्दर्भ में भी किया जा सकता है।

- प्रस्तुत शोध अध्ययन अध्यापकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन है जबकि विकास के सन्दर्भ में मूल्यों के प्रभाव का भी अध्ययन किया जा सकता है।

- प्रस्तुत शोध अध्ययन विद्यार्थियों के सन्दर्भमें उपलब्धि पर मूल्य का प्रभाव के सन्दर्भ में भी किया जा सकता है।

- प्रस्तुत शोध अध्ययन में अध्यापकों का तुलनात्मक अध्ययन है इस अध्ययन को विद्यार्थियों की उपलब्धि पर अध्यापकों के मूल्यों का प्रभाव पर भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल दो जनपदों के सन्दर्भ में किया गया है जबकि इसको क्षेत्र एवं राष्ट्र के सन्दर्भमे भी किया जा सकता है।
- प्रस्तुत शोध अध्ययन केवल प्राथमिक स्तर पर ही किया गया है। इस अध्ययन को स्नातक और परास्नातक स्तर पर भी किया जा सकता है।
- मूल्यों के अध्ययन को विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का उपलब्धि पर प्रभाव के सन्दर्भ में भी किया जा सकता है।
- मूल्यों का अध्ययन अध्यापकों के सन्दर्भ में किया गया है। इस अध्ययन को अध्यापकों के दृष्टिकोण तथा उत्प्रेरक के सन्दर्भ में भी किया जा सकता है।
- इस अध्ययन को अध्यापकों के मूल्यों के सन्दर्भ में शहरी तथा ग्रामीण अध्यापकों के सन्दर्भ में भी किया जा सकता है।

5.4 प्रस्तुत शोध का शैक्षिक निहितार्थ:-

कोठारी कमीशन ने यह स्वीकार किया है कि भारत के भाग्य का निर्माण उसकी कक्षाओं में हो रहा है यह कक्षायें चाहे प्राथमिक, माध्यमिक, महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय हों प्राथमिक शिक्षा सम्पूर्ण शिक्षा की प्राथमिक कड़ी है, जिसमें प्राय: 6 वर्ष की उम्र से लेकर 14 वर्ष की उम्र तक के व्यक्ति प्रवेश प्राप्त करते हैं। यह ऐसी अवस्था है जिसमें बालक का भावात्मक, गद्यात्मक, ज्ञानात्मक तथा शारीरिक व मानसिक विकास होता है इस उम्र में बालक जो कुछ भी सीखता, समझता तथा

अनुभव करता है वह उसके मस्तिष्क में स्थायी प्राप्त करते हैं और उसका सम्पूर्ण जीवन इन्हीं आधारों को लेकर विकसित होता है यद्यपि आनुवंशिक तथा वातावरण के प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता है लेकिन अनुसंधानों के परिणामों से यह स्पष्ट हो चुका है कि बालक के जीवन की आयु उसके मस्तिष्क पर अमिट प्रभाव डालती है।

इसी प्रकार अध्यापक राष्ट्र निर्माता, बालक के भविष्य का निर्माणकर्ता तथा सामाजिक परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण कारक माना गया है हमारी शिक्षा व्यवस्था में शिक्षण प्रक्रिया की शिक्षक एक धुरी है, इसके अभाव में शिक्षण कार्य सम्पन्न नहीं किया जा सकता। समाज की मान्यतायें, विश्वास तथा दिशा और दशायें समय-समय पर परिवर्तित हो रही हैं। शिक्षा तथा व्यक्ति के जीवन के उद्देश्य समय और परिस्थिति के अनुकूल बदलते जा रहे हैं शिक्षा और समाज दोनों के मूल्यों में एक गिरावट आ गयी है और मूल्य धीरे-धीरे बदलते जा रहे हैं। अतएव् शिक्षा में मूल्यों के संरक्षण की आवश्यकता है जिससे शैक्षिक उन्नयन हो सके।

अभी तक मूल्यों पर किये गये अनुसंधानों के परिणामों, अनुभवों तथा परीक्षणों से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह सिद्ध हो सका है कि मूल्यों का शिक्षण नहीं किया जा सकता है बल्कि मूल्यों का शिक्षण अनुकरण के आधार पर होता है (Values are not taught, but it is caught).

प्रस्तुत शोध में विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन वरिष्ठता एवं कनिष्ठता के आधार पर, आयुवर्गों के आधार पर , शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों के अध्यापकों के आधार पर, सरकारी व गैर सरकारी तथा शिशु मन्दिरों में कार्यरत अध्यापकों के मूल्यों का तुल्नात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें यह निष्कर्ष निकला है कि प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ाने वाले उन्हीं अध्यापकों की नियुक्ति की जानी चाहिए जो विभिन्न प्रकार के मूल्यों से अच्छादित हों।

अतएव इस शोध कार्य का मुख्य शैक्षिक निहितार्थ यही कहा जा सकता है कि प्राथमिक कक्षाओं के अध्यापकों की नियुक्ति के पूर्व उनके मूल्य मापन हेतु उनका परीक्षण/परीक्षा अवश्य की जानी चाहिए और उन्हीं अध्यापकों की नियुक्ति की जानी चाहिए जो परीक्षण के आधार पर अपने आपको विभिन्न मूल्यों से सम्पन्न पाये गये जायें।

संदर्भ सूची

संदर्भ सूची

- **टेलर, ई.बी. (1873) :** प्रीमिटिव वेल्यूज कल्चर स्टडी टूवारड्स अस (2 वोल्यूमस, 2 एडीशन) लंदन जान मुरे।

- **बनजेल, जी.एम. (1944) :** "वेल्यू" इन डिक्शनरी ऑफ सोशियोलोजी (एजूकेशन) फेयर चाइल्ड, ***एच.पी. फिलास्फीकल लाइब्रेरी, न्यूयार्क, पे. 331.***

- **सफ्फार लोरेन्स एफ. (1951) :** रिव्यू ऑफ स्टडीज ऑफ वेल्यूज, ***जनरल ऑफ कान्स, साइकोलोजी–15.***

- **लारेन्स, एफ, शॉफर (1951) :** रीव्यू ऑफ दा स्टडी ऑफ वेल्यूज, ***जूनियर ऑफ कनसल्टिंग साइक्लॉजि, वोल्यूम–15, पेज–515.***

- **क्लूकोहन, सी. (1954) :** वेल्यू एण्ड वेल्यू आरियेन्टेशन्स इन दि थ्योरी ऑफ ऐक्सन्स, इन दा प्रसन्स, एंड ई.ए. शिल्स एजूकेशन कैम्ब्रिज, ***मास हार्डवर्ड यू. प्रेस।***

- **सिंगर, स्टेनले एल, एण्ड बुफोर्ड स्टीफलरे (1954) :** सेक्स डिफरेन्सीस इन जॉब वेल्यूज एण्ड डिजायरस, ***दा पर्सनल एण्ड गाइडेन्स जूनियर, वोल्यूम, 32 (8).***

- **आलपोर्ट, जी. डब्ल्यू (1960) :** पी.ई. वर्नन एण्ड गार्डनर लिंडजे – अ स्टडी ऑफ वेल्यूज, ***बॉस्टन हॉगटन माइफलिन कम्पनी।***

- **मेर, माटिन, एल., राबर्ट ई. स्टेक (1962) :** दा वेल्यू पेटनर्स ऑफ मेन वेल्यूनट्रेले क्वीट सेमिनारे ट्रेनिंग, दा पर्सनल एण्ड जूनियर गाइडेन्स, ***वोल्यूम, 40 (6) पेज 537.***

- **भटनागर, आर.पी. (1963) :** ऐ डिफ्रेन्शियल स्टडी ऑफ वेल्यूज ऑफ मेल ग्रेजुएट्स, ***जनरल ऑफ एजूकेशन एण्ड साइकोलोजी, वोल्यूम नं0 3.***

- **लिचमन, ईरविन, जैक्ब ईशबेल के.पेने (1963) :** एन एक्सपलोरेशन ऑफ एटीट्यूड एण्ड वेल्यू चेन्जस ऑफ कॉलिज फ्रेशमेन, ***दा पर्सनल एण्ड गाइडेन्स जूनियर (जनवरी), वोल्यूम 42 (5).***

- **विलसन, ई. (1964) :** रीलिजन एण्ड ह्यूमन नेचर, ***अमेरिकन सोशियोलोजिकल रीव्यू XXIV पेपर 358–374.***

- **तिवारी, जी., आर.ए. सिंह एण्ड डी.एन. श्रीवास्तव (1965) :** एडजस्टमेन्ट एज ए फंगशन ऑफ वेल्यू-***आरियन्टेशन, इंडियन साइक्लोजिकल रिव्यू, वोल्यूमक 12 (2), पेपर 22–24.***

- **वंशन्था, रामकुमार (1965) :** एन एक्सपेरिमेन्ट टू डीटरमाइन दा इफेक्ट ऑफ दा सेक्स बेरिएब्ल इन डीशक्रिमीनेटिंग सोशल डीजयरेबलिटी वेल्यू एण्ड सोशल एन्डयूरेबलिटी वेल्यू, ***जूनियर ऑफ एजूकेशनल रीसर्च एण्ड एक्सटेंशन, वोल्यूम 1 (3), पेज 39.***

- **हम्मेल, रेमण्ड, नार्मन स्प्रनीथॉल (1966) :** अण्डर एचिवमेन्ट रिलेटिव टू इन्टरेस्टस, एटिट्यूडस एण्ड वेल्यूज, ***दा पर्सनल एण्ड गाइडेन्स जूनियर, वोल्यूम–44, पेपर–388, टू 395.***

- **त्यागी, एम. (1966) :** ए कम्प्रेरिटव स्टडी ऑफ वेल्यूज बिटविन ब्यॉज एण्ड गर्ल्स एट यूनिवर्सिटी लेवल, ***अनपब्लिशड, एम.ए. थीसिस, एम.यू.।***

- **बेवरवाल, एस. (1967) :** इकोनोमिक्स स्टेटस एण्ड अदर डीटरमिनेशन्स ऑफ वेल्यूज, ***एन पब्लिसड एम.ए. थीसिस,*** ए.वी.।

- **ग्रेनडे, पीटर पी. एण्ड जोज़फ बी. साइमन्स (1967) :** पर्सनल वैल्यू एण्ड ऐकडिमिक परफारमेन्स अमंग इंजीनियरिंग स्टॅडेन्टस, ***दा पर्सनल एण्ड गाइडेन्स जूनियर , बोल्यूम–45, पंज–585.***

- **सिंह, अमर जे. (1967) :** इण्टरेस्ट, वेल्यूस ऑफ पर्सनलिटी ट्रेटस ऑफ स्टूडेन्टस स्पेशिलाइजिंग इन डिफरेन्ट फिल्ड्स ऑफ साइक्लॉजी, ***ब्रिटिश जूनियर ऑफ एजूकेशनल साइक्लॉजी, वोल्यूम–39 (1–3), पेज–90.***

- **डेफ्ट, स्टेनटन के. (1967) :** अमंग वेल्यूज एण्ड कल्वर चेन्ज अमंग टीनऐज इंडियन्स, इन ***एक्सप्लोरेटॉरी स्टडी, सोशियोलॉजी ऑफ एजूकेशन (स्प्रिंग), वोल्यूक–40 (2), पंज–150.***

- **वर्मा, एस.एस.के. (1968) :** छात्राध्यापकों के मूल्य, समायोजन, अभिवृत्तियों, तथा व्यक्तिगत समस्याओं पर अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के प्रभाव का अध्यन ***रिसर्च जनरल ऑफ एजूकेशन एण्ड साइकोलोजी, खण्ड डब्ल्यू टी0सी0 दयालबाग, आगरा।***

- **वर्मा, एस.एस.के. (1968) :** माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों व छात्रों के अन्तर पारस्परिक सम्बन्ध के संदर्भ में मूल्यों का अध्ययन ,***रिसर्च जनरल ऑफ एजूकेशन खण्ड साइकोलाजी,*** डब्ल्यू टी0सी0 दयालबाग, आगरा।

- **रॉकिच, एम. (1968) :** बीलिफस, एटीट्यूडस एण्ड वेल्यूज : ए थ्योरी ऑफ ऑरगेनाइजेशन एण्ड चेन्ज सेन फ्रॉसिस्को : ***जोरो–वेन इन्टेलिक्टयूअल*** ।

- **जॉनसन ऑगने मिल्टन (1969) :** एन एम्पायरिकल स्टडी ऑफ सेल्फ रिपोर्ट डेलिक्यूऐंसि एण्ड ऑक्यूपेशनल वेल्यूज, ***डिस एब्स, इण्टर, वोल्यूम 38 (4), पेज 1650.***

- **मुरे, मुरेल एलोइसे (1969) :** सेल्फ एक्टॅएलाइजेसन एण्ड सोशल वेल्यूज ऑफ टीचर्स एज़ रिलेडिज स्टूटैन्टस परसेपशन्स ऑफ ***टीचर्स डिस एब्स, इण्टर, वोल्यूम 30 (3), पेज 1028.***

- **स्लोकम, डार्विन आरनोल्ड (1969) :** ए कम्पेरिजन ऑफ ए रेशियो ऑफ दा लेवलस ऑफ एशपिरेशन विद दा एटिट्सूछा टूवार्डस स्टडी एण्ड दा वेल्यूज हेल्ड बाए मेट्रिकूलेटिंग फ्रेशमेन एट सिक्स सलेक्टिड एजूकेशनल इनस्ट्रक्शन्स, ***डिस एब्स, इण्टर, वोल्यूम 30, पेज 990.***

- **थार्नटन, लेरे ली (1969) :** मॉरलस इथिक्स एण्ड वेल्यूज : इन एक्सप्लोरेशन ऑफ स्टूडेन्ट रीएक्शन्स एण्ड काउंटर – रीफार्मेशन रीलेटिव टू रूल्स एण्ड स्पेशिफिक एटिट्यूडस, ***डिस एब्स, इण्टर, वोल्यूम 30 (6), पेज 2346.***

- **वीचीयापॉजाटे, नॉनपेन कोशॉलस्रीथ (1969) :** ए क्रोस-कल्वरल स्टडी ऑफ सोशियल वेल्यूज एण्ड पर्सनलिटी ऑफ थाई एण्ड अमेरिकन एडोलिसेन्टस, ***डिस एब्स, इण्टर, वोल्यूम 31(1), 179.***

- **व्हाईट, थॉमस रॉबर्ट (1969) :** ए स्टडी ऑफ वेल्यूज एण्ड ऐटिट्यूट ऑफ डिशट्रीव्यूटिव एजूकेशन टीचर-काऑरडिनेटरस एज कम्पेयरड टॅ ग्रुपस ऑफ पॉटेंशियल टीचर-कॉआरडिनेटरस, ***डिस एब्स इण्टर वोल्यूम 30 (2), पेज–610.***

- **व्लूजी, जे. पी. (1970) :** दी कान्ट्रीब्यूशनल ऑफ वेल्यूज इन प्रिजिक्अिग दी सक्सस इन प्रैक्टिकल नर्सिंग प्रोग्राम, ***डिस. एब्स. ईस्टर वोल्यूम–31.***

- **डेविडसन, आर. ए. (1970) :** ए स्टडी ऑफ पर्सनलटी ट्रेटस एण्ड वेल्यू सिस्टम ऑफ हाईस्कूल ऐथिलीट एण्ड नान ऐथिलीटस, ***एब्स वोल्यूम–30.***

- **वाल्कर, पी.जी. (1970) :** ए स्टडी ऑफ डिफरेन्सिस इन वेल्यूज ऑफ हाई स्कूल सीनियर ऑफ सलेक्टिड सैकेण्ड्री स्कूल, ***डिस. एब्स. ईस्टर वोल्यूम–31 नं0 5.***

- **इटो, संटोशी (1970) :** वेल्यू फॉरिलेटस ऑफ ऑक्यूपेशनल एण्ड एजूकेशनल गॉल्स अमंग साउथ्रन हाई स्कूल निग्रो एण्ड व्याईट मेट्स, ***डिस. एब्स. ईस्टर वोल्यूम–30 (3–8), पेज 3558.***

- **रींगनेस, थॉमस ए. (1970) :** आइडेन्टीफाइंग फिगरस, देयर एचिवमेंट वेल्यूज एण्ड चिन्ड्रन 'स वेल्यू एज रीलेटिड टू एक्चुअल एण्ड पीडिक्टिड एचिवमेन्ट, ***जूनियर ऑफ एजूकेशन एण्ड साइक्लॉजी, वोल्यूम – 61 (3), पेपर 174–185.***

- **नेलशन, एयर जीन, ए. (1971) :** ए वेल्यू प्रोफाईल फिजिकल एजूकेशन डिस, एब्स ईस्टर, ***वोल्यमू–31, नं0 10.***

- **दीक्षित, रमेश सी, डी.ओ. डूथ शर्मा (1971) :** डिरेन्टियल वेल्यूस ऑफ हाईस्कूल एण्ण्ड यूनिवर्सिटी स्टूडेन्ट्स एण्ड टीचर्स, ***जूनियर ऑफ साइकलॉजिकल रिसर्च, वोल्यूम 15(1) पेज 12.***

- **जॉनसन, बिल लेसल (1971) :** इन इनवेस्टिगेशन ऑफ आक्यूपेशनल वेल्यू हेल्ड बाइए ए ग्रुप ऑफ रूरल नार्थन न्यू मेक्ससिको सीनियर हाई स्कूल स्टूडेन्ट्स, ***डिस एब्स. इण्टर, वोल्यू – 31, पेज 5129.***

- **वर्मा, आई.बी. (1971) :** सेक्स डिफरेन्सस इन दा इम्पेक्ट ऑफ ट्रेनिंग ऑन दा वेल्यूज एण्ड एटिटयूड्स ऑफ दा स्टूडेन्टस टीचर्स, ***जूनियर ऑफ एजूकेशनल रीसर्च एण्ड एक्सटेंशन, वोल्यूम 7(4).***

- **वर्मा, आर.पी. (1972) :** कन्सैप्ट ऑफ वेल्यूज चैप्टर-II, ***पी.एच.डी. थिसिस इन एजूकेशन, आगरा यूनि., आगरा।***

- **बीई, बी. एण्ड जयसवाल, एम.पी. (1972) :** सेक्स डिरेन्सीस इन वेल्यू पैटर्न ऑफ एडोलिसेन्स स्टूडेन्टस, ***इण्डियन एजूकेशनल रीव्यू, वोल्यूम 7 (1) पेज 187-194.***

- **पानिक्कर, एम. कोबे एण्ड एच. विश्वश्वरन (1972) :** दा एटिट्यूड ऑफ कॉलिज स्टूडेन्ट टूवार्डस मॉरल वेल्यूज, **जूनियर ऑफ एजूकेशनल रिसर्च एण्ड एक्सटेंशन, वोल्यू 8 (4), पेज 238.**

- **रॉकिच, एम. (1973) :** लॉग रेंज एक्सपेरिमेन्ट मॉडिफिकेशनल ऑफ वेल्यूज एटिट्यूडस एण्ड बीहेवियर, ***अमेरिकन साइक्लाजिकल, 26, पेज 157.***

- **तिवारी, गोविन्द, राम सिंह (1973) :** वेल्यू पेटर्न ईज ए फंक्शन ऑफ सेक्स, ***जूनियर ऑफ एजूकेशन एण्ड साइक्लॉजी, वोल्यूम - 31(3), पेज 153।***

- **सिंह, बी.एल., (1974) :** अभिवृत्ति के संदर्भ में मूल्यों को मापन पर एक अध्ययन, ***रिसर्च जनरल ऑफ एजूकेशन खण्ड साइकॉलोजी।***

- **सिंह, एच.एम. एण्ड सिंह, एस. (1974):** अ मैनयूल फॉर स्टडी ऑफ वेल्यूज, *आगरा : ए.पी.आर.सी.।*

- **श्रीवास्तव, ए.के. (1974):** वेल्यूस इन रिलेशन टू पर्सनेलिटी ट्रेड एण्ड सेल्फ कन्सेप्ट, ***द क्रीयेटिव साइक्लोजिस्ट वाल्यूम 6 (122), 31-37.***

- **जैकब, एस.एच. (1974) :** वेल्यू सिस्टम ऑफ टू एकेडिमिकली कन्ट्रस्टिड ग्रुप ऑफ कालिज मैन, ***दि जनरल ऑफ एक्सप्रिमेन्टल एजूकेशन वोल्यूम 41.***

- **गौर.आर.एस. (1974) :** ए स्टडी ऑफ वेल्यू एंड परसेप्सन्स ऑफ हाई स्कूल स्टूडेंट्स ऑफ दी स्टेट ऑफ राजस्थान एण्ड टिचर रिलेशन टू लर्निंग, ***अनपब्लिशड पी.एच.डी. थिसिस इन एजूकेशन, राज. यूनिवर्सिटी।***
- **वर्मा, आई.बी. (1974) :** एन इन्वेस्टीगेशन इनटू दि इम्पैक्ट ऑफ ट्रेनिंग ऑफ वेल्यूज, ऐटीट्यूड पर्सनल प्राब्लम एण्ड एडजसमेंट ऑफ टीचर्स, ***ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, ऐडिटर एम. वुच, बड़ौदा यूनि., बड़ौदा।***
- **गौर आर.एस. (1975) :** ए स्टडी ऑफ वेल्यूज एण्ड परसेप्शन्स ऑफ हाई स्कूल स्टूडेन्ट्स ऑफ दा स्टेट ऑफ राजस्थान एण्ड देयर रिलेशन टू लर्निंग, ***पी. एच.डी. एजूकेशन, राजस्थान यूनिवर्सिटी।***
- **मिलर, मिल्टन डान (1975) :** दि डिफरेन्स इन सैल्फ कनसैप्ट वेल्यू एण्ड डिसक्रिमिनेशन ऑफ प्रोसेस एड प्रोडक्ट ओरियन्टेड टीचर्स, ***डिस. एब्स. ईस्टर वोल्यूम – 35।***
- **सिप सरहा, जेने (1975) :** ए स्टडी टेस्टिंग नॉलेज, वेल्यू एण्ड एटीट्यूड ऑफ पेरेन्ट्स ऑफ ऐलिमेन्ट्री ऐज चिन्ड्रन पार्टिशिपेटिंग इन बीहेवियरल मोडिफिकेशन इन सर्विस ट्रेनिंग प्रोग्राम, ***डिस एब्स. इण्टर, वोल्यूम 30 (3), पेज 1402.***
- **टॉलबी हेलन बेहरम (1975) :** ए सर्वे ऑफ कल्चरल मॉरल एण्ड करेक्टर ट्रेट वेल्यूज एक्सप्रेसड बाए सलेक्टिड फाइव, सिक्स एण्ड सेवन ईयर ओल्ड चिल्ड्रन, ***डिस एब्स. इण्टर, वोल्यूम 35 (11–12), पेज 6541.***
- **गुप्ता, एस.के. (1976) :** ए कम्प्रेटिव स्टडी ऑफ वेल्यूज अमंग पोस्ट ग्रेजुएट स्टूडेंट ऑफ डिफरेंट फैक्लटीज, ***कुरूक्षेत्र यूनि., वोल्यूम नं0 4.***
- **पाण्डे, ए. (1976) :** ए स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट, प्रसनल्टी, वेल्यूज एण्ड वोकेशनल ईण्ट्रेस्ट ऑफ सुपर नारमल एण्ड नारमल एडोलसेन्स, ***इण्डियन साइकोलोजिकल रिव्यू, वोल्यू – 13 नं0 9.***

- **ईटजन, स्टेनले डी. (1976) :** दी सैल्फ कान्सेप्ट ऑफ डेलीक्यून्ट इन ऐ बिहेवियर मोडिफिकेशन ट्रीटमेन्ट प्रोग्राम, द ***जनरल ऑफ सोशल साइकॉलोजी, वोल्यूम 99.***
- **क्रोफार्ड, डगलस गॉर्डन (1976):** फेमिनली इन्टरएक्शन एचीवमेंट वेल्यूज एण्ड मॉटिवेशन एज रिलेटिड टू स्कूल ड्रापआउटस, ***डिस्ट्रीक एब्स इण्टर, वोल्यूम 36 (11–12), पेज 7915.***
- **फेनट्रेल डगलस डेविड (1976) :** इम्पेक्ट ऑफ यूनिवर्सिटी डिपार्टमेन्ट्स ऑन स्टूडेन्ट्स वेल्यूस, ***डिस्ट्रीक, एब्स, इण्टर, वोल्यूम 36(11–12),*** **पेज 7229.**
- **ईशियन, डब्लू. टी.वी. ऐडिस (1976) :** पर्सनल एण्ड सोशल वेल्यूज, ***न्यू फ्रन्टियरस इन एजूकेशन, वोल्यूम – Vi (3), पेज 15।***
- **गुप्ता, एस.के. (1976) :** ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑफ वेल्यूज अमंग पोस्ट–ग्रेजएटस स्टूडेन्टस ऑफ डिफरेन्ट फेक्लटिज एट कुरूक्षेत्र यूनिवर्सिटी, ***जूनियर ऑफ एजूकेशनल एण्ड साइक्लॉजि, वोल्यूम 33 (4), पेज – 221.***
- **पांडे, ए. (1976) :** अ स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट, पर्सनॉलिटी वेल्यूज एण्ड वोकेशनल इन्टरेस्ट ऑफ दा सूपरनार्मल एण्ड नॉर्मल एडोलिस्न्टस, **इण्डियन *साइक्लॉजिकल रिव्यू, वोल्यूम – 13 (1), पेपर 39–40.***
- **शर्मा, डी.डी. (1977) :** विभिन्न सामाजिक कारकों पर अध्यापकों और छात्रों के मूल्यों का अध्ययन, रिसर्च जनरल ऑफ एजूकेशन ऑफ एजूकेशन एण्ड सोसियोलाजी, ***पी.एच.डी. जोधपुर यूनिवर्सिटीज, जोधपुर, राजस्थान।***
- **चन्द्र, डी. (1977):** अध्यापन कार्य में कार्यरत तथा अन्य कार्यों में कार्यरत व्यक्तियों के मूल्य का अध्ययन, ***रिसर्च जनरल ऑफ एजूकेशन एण्ड सोसियोलॉजी, पी.एच.डी., जोधपुर यूनिवर्सिटी ।***

- **चन्द्र, डी. (1977):** अध्यापकों तथा अन्य कार्यों में कार्यरत व्यक्तियों के मूल्य का अध्ययन, ***रिसर्च जनरल ऑफ एजूकेशन एण्ड सोसियोलॉजी, पी.एच. डी., ए.एम.यू.।***

- **न्यू जेम्स ऐलन (1977) :** ए कम्प्रेजन ऑफ वेल्यूज बिटवीन रेजीडेन्ट एण्ड कामिन्यूटी स्टूडेंट एट स्लेक्टिड कालिज, ***डिस, एब्स, ईस्टर वॉल्यूम – 38, नं0 4.***

- **पोरियर, जेम्स (1977) :** ए कम्प्रेजन ऑफ वेल्यूज अमंग इण्डियन हाई स्कूल स्टूडेंट, इंडियन ट्राप आउटस एण्ड नान इंडियन टीचर्स, ***डिस. एब्स ईस्टर, इन. वॉल्यूम – 37, नं0 9.***

- **कर्जन, जोसेफ डेनियल (1977):** कम्प्रेटिव स्टडी ऑफ वेल्यूज ऑफ सलेक्टिड पर्सनल एडमिनिस्ट्रेटिव एण्ड प्रेसीडेन्ट्स इन सीनियर कम्यूनिटी कालिज, ***डिस. एब्स., ईस्टर वोल्यूम – 38.***

- **सालूजा, मदान (1977) :** ए स्टडी ऑफ स्टूडेन्ट्स परसनल वेल्यूज सिस्टम दियर परसेप्सन ऑफ मैनेजमेंट वेल्यू एण्ड दि रिलेशनशिप ऑफ वेल्यूज एण्ड प्रेसीडेन्ट्स टू डिसिजन मेकिंग्स, ***डिस, एब्स, ईस्टर वॉल्यूम – 38.***

- **सोबल, रोसलायान्डे के. (1977) :** स्टूडेंट वेल्यू चैंज एण्ड कान्गुरेन्सी विद फैकल्टी वेल्यूज इन प्रोफेशनल एजूकेशन रिलेटिड टू रेफरैन्स ग्रुप थ्योरी, ***डिस एब्स, वोल्यूम 37, नं0 11.***

- **त्यागी, मधु (1977) :** टीचर्स वेल्यू ओरियेन्टेशन एण्ड प्यूपिल्स ऐकेडिमिक एचीवमेंट्स, ***अनपब्लिशड डेजरटेशन, मेरठ यूनिवर्सिटी, मेरठ।***

- **विश्वास, सुशान्त कुमार (1977) :** वेल्यू–ओरिन्टेशन्स, लाइफ स्टाइल्स एण्ड

प्रीफ्रेन्सस इन अरबल एनवायरमेन्ट्स : एन एम्पायरीकल एनलिसर्स, ***डिस. एब्स. इन्ट. वोल्यूम 38 (5) पेज 3101.***

- **ईगन, मेरी जी जॉने (1977) :** ए स्टडी ऑफ दी इफैक्ट ऑफ एजूकेशनल लेवल, ऐज एण्ड सेक्स ऑन दो वेल्यूज एण्ड सेल्फ कन्सेप्ट्स ऑफ एडल्ट स्टूडेन्ट्स एण्ड ऑलउमनी ऑफ इन एडल्ट बैकेलारायट डिग्री प्रोग्राम, ***डिस. एब्स. इण्टर, वोल्यूम 38 (11–12 पेज 7034).***
- **फीदर, एन. टी. (1977) :** वेल्यू इम्पोरटेन्स, कनजरवेशन एण्ड ऐज यूरोपियन जूनियर ऑफ सोशनल साइक्लॉजी, ***वोल्यूम–7 (2) पेपर–241–245.***
- **थिंगर, मेरिलेन पासचके (1977) :** एटेनमेन्ट वेल्यूज एण्ड पेरेन्टल वेल्यू ट्रांसमिशन, ***डिस, एब्स, इण्टी, वोल्यूम 38 (3) पेज 1686.***
- **किरपॉल, प्रेम (1977) :** ह्यूमन वेल्यू टूवारड्स डब्लपमेन्ट ***न्यू फ्रन्टीचर इन एजूकेशन 1977, वोल्यूम–7 (1–4), पेपर 28–46.***
- **कौशल, गोलेन्टी रैने (1977) :** दा रिलेशनशिप ऑफ साइक्लॉजिकल टाइप्स एण्ड मॉस मीडिया परफॉरमेन्स टू दा वेल्यूज ऑफ नॉन–एकेडिमिक हाईस्कूल स्टूडेंटस, ***डिस एब्स, इण्टर, वोल्यूम 38 (8), पेज 4683.***
- **लॉमन्ना, मेरी अन (1977) :** दा वेल्यू ऑफ चिल्ड्रन टू, नेचुरल एण्ड एडॉपटिव पेरेन्टस, ***डिस एब्स, इण्टर वोल्यूम–38 (3), पेज 1687.***
- **लॉकले, ऑरा ईवलि (1977) :** मॉरल रीज़निंग एण्ड च्वाइस ऑफ वेल्यूज अमंग स्टूडेन्स एट रूटगरस यूनिवर्सिटी, ***डिस एब्स, इण्टर, वोल्यूम 37 (11–12), पेज 7663.***

- **मुच, जेम्स बर्टन (1977) :** दा आइडेन्टिफिकेशन ऑफ ब्लैक वेल्यूज एज़ दे इफैक्ट ब्लैक स्टूडेन्टस, ***डिस एब्स, इण्टर, वोल्यूम 38 (4), पेज 1960.***
- **सोबेल, रॉस्लेनडे कोलोडनर (1977) :** स्टॅडेन्स वेल्यू चेन्ज एण्ड कॉगरूऐंसि विद फेकल्टी वेल्यूस इन प्रोफेशनल एजूकेशन रिलेटिड टू रेफरेन्स ग्रुप थ्योरी, ***डिस एब्स, इण्टर, वोल्यूम–39 (11–12), पेज 7346.***
- **थार्टन, एम. (1977) :** ए कॉरिलेशन स्टडी ऑफ दा रिलेशनशिप बीटविन ह्यूमन वेल्यूज एण्ड ब्रोडकासट टेलिविजन, ***डिस एब्स, इण्टर, वोल्यूम 37 (9–10)(, पेज – 5424.***
- **थेल वॉल्टर लेसले (1977) :** दा इम्पेक्ट ऑफ माइनॉरिटी स्ट्टेस ऑन सेल्फ एस्टीम एण्ड कल्वरल वेल्यूज ऑफ थ्रीएडोलिसेन्ट प्यूरटो राईक्नस, ***डिस एब्स, इण्टर, वोल्यूम 37 (11–12), पेज 5652 ।***
- **उपाध्याय, एस.एम. मुखर्जी (1977) :** वेल्यू सिस्टम ए क्रोस इनकम लेवल्स, ***जूनियर ऑफ साइक्लॉजिकल रिसर्च, वोल्यूम 21 (2), पेज 105.***
- **वींकलर ग्लेण्डा ऑण्टे हेनसर्ड (1977) :** डीफरेन्सस इन दा वेल्यू ओरियन्टेशन ऑफ ग्रेजुएट स्टूडेन्ट इन एजूकेशन, ***डिस एब्स, इण्ट, वोल्यूम 37 (7–8), पेज 4911.***
- **व्याईट, कोटी जीरोम (1977) :** ए स्टडी ऑफ डेमोक्रेटिक सोशियोपॉलिटीकल वेल्यू अमंग हाई स्कूल स्टूडेन्ट्स इन अरबन सेटिंग ***डिस एब्स इण्टर, वोल्यूम 36 (4), पेज 2036.***
- **वॉलकिंस, डेविड डॉन (1977) :** दा इम्पेक्टस ऑफ वेल्यू क्लेरिफिकेशन ट्रेनिंग ऑन डॉगमेस्जिम एण्ड चेन्जसय इन वेल्यू सिस्टरम ***डिस एब्स, इण्टर, वोल्यूम 38 (11), पेज 6550.***

- **सौलर, वबरनार्ड, एल. (1978) :** ए स्टडी ऑफ सिमिलियरटी एंड डिफरेन्सीज ऑफ वेल्यू ऑफ हाई स्कूल सीनियर्स इन डिफरैन्ट कम्यूनिटीज इन मैट्रोपोलिटन ऐरिय, ***डिस, एब्स, ईस्टर वोल्यूम – 38.***

- **डाऊसन, रोजमैरी जी. (1978) :** इन इन्वेस्टीगेशन ऑफ दी एक्सप्रेस्ड वेल्यू एण्ड एजूकेशन प्रायटिज ऑफ ऐडल्ट एजूकेशन टीचर्स, एडमिस्टेटर, 6 स्टूडैण्ट एंड कोम्यूनिटी मेम्बर, ***एब्स ईस्टर, वोल्यूम–38.***

- **विस्को, ल्यूईस जान (1978) :** ए स्टडीज ऑफ वेल्यूज एंड दियर रिलेशन टू कोर्स सेलैक्शन एंड सक्सेस एट हाई स्कूल लेवल। ***डिस, एब्स ईस्टर वोल्यूम–39.***

- **वाल्दर, चार्ल्स सी. (1978) :** ए कम्प्रेजन ऑफ सेल्फ कन्सैप्ट मिनिरंग एंड वेल्यू ऑफ वर्क एंड सलैक्टिड डेमोग्राफिक वेरीयबल्स ऑफ टू टाप्स ऑफ वोकेशनल स्टूडेंट। ***डिस एब्स वोल्यूम 38 नं0–8.***

- **अग्रेस्ता, फ्रेंक जेम्स (1978) :** एन एनलिसिस ऑफ दा वेल्यू प्रोफाइल ऑफ सिक्सथ ग्रेड पूपिल्स विद हाई न्टेलिएक्टुयल एबिलटि ***डिश, एब्स. ईस्ट, वोल्यूम–38 (1) पेज 7265.***

- **क्रेने, बीवरले ब्राउन (19780 :** कारियन मैचारिटी, वर्क वेल्यूज एण्ड पर्सनल करेक्टरस्टिक फ्रेन्डस और सिबलिंग; डिस्ट्रीक, ***एब्स, इन्ट – बोल्यूम 38 (11) पेज 6528.***

- **कॉबल, जीरॉल्ड वेने (1978) :** दा इफेक्ट ऑफ वेल्यूस क्लेरिफिकेशन ट्रेनिंग ऑन दा सेल्फ कनसेप्ट एण्ड वेल्यूज ऑफ टीचर्स, ***डिस, एब्स,. इण्टर, वोल्यूम 38 (11), पेज 6658.***

- **प्रीसुता, राबर्ट एच (1978) :** दा रोल ऑफ टेलिविजड स्पोर्टस इन दा सोशिलाइजेनशन ऑफ पॉलिटिकल वैल्यूज ऑफ एडोलिसेनटस, ***डिस एब्स, इण्टर, वोल्यूम 38 (10), पेज 5780.***

- **सोलोमन, रीचार्ड डेनिस (1978) :** दा इफेक्ट ऑफ वेल्यूज क्लेरिफिकेशन इन्स्ट्रक्शन ऑन दा वेल्यूज ऑफ सेलेक्टिड जूनियर हाई स्कूल स्टूडेन्टस, ***डिस एब्स, इण्टर, वोल्यूम 38 (9), पेज 5228.***

- **कुलश्रेष्ठ, एस.पी. (1979) :** दि इमरजिंग वेल्यू पैट्रन ऑफ टीचर्स इन सोसियो कल्वरल एनवायरेमेन्ट्स ऑफ दी स्कूल्स इन प्रजेन्ट एरिया, ***नई दिल्ली, लाईट एण्ड लाई पब्लिशर्स।***

- **रास, जेम्स, जान (1979) :** दि स्टडी ऑफ वेल्यू सिस्टम ऑफ वरसिटी ऐथिलिट्स एंड नान ऐथिलिट्स, ***डिस, एब्स, ईस्टर, वोलयूम–39, नं0–10.***

- **ईवान्स, वाईने हेनरी (1979) :** एन इन्वेस्टीगेशन ऑफ वेल्यू ओरियन्टेशन ऑफ अमेरिकन कालिज स्टॅडेंट, ***डिस, एब्स, ईस्टर वोल्यूम–39.***

- **सिंह, एच.एल. (1979) :** मिजरमैन्ट ऑफ टीचर्स वेल्यू एंड दियर रिलेशनशिप विद टीचर्स ऐटीट्यूडस एंड जॉव सटिसफैक्शन, ***डिस, एब्स, ईस्टर वोल्यूम–35.***

- **स्पोटो, एलिजबेथ, जोसेफलाईन (1979) :** ऐ काम्प्रेटिव स्टडी ऑफ वेल्यूजसिस्टम अमग ब्लैक, हिस्पेनिक एंड वाहईट कम्यूनिअी कालिज स्टूडेंट, ***डिस एब्स वोल्यूम – 39; नं0–10.***

- **वोग, डिविड फ्री (1979) :** वेल्यू एंड लिडरशिप करेक्टरशिप ऑफ सेवन्थ डे एडवेन्टिस्ट ऐकेडमी टीचर्स इन मिचीगन, ***डिस, एब्स. वोल्यूम–40, नं.–2.***

- **बर्गर, मोंरिस हर्बट, (1979) :** दा रिलेशनशिप ऑफ रिलिजियस एटिट्यूट एण्ड वेल्यज विद पर्सनलिटी एडजेस्टमेन्ट, डिश, एब्स, इण्टर बोल्यूम 39, (मई–जून), पे0–7232.
- **डेविसि, रॉलफॉद विन्यूव (1979) :** वेल्यूस, स्कूल ऑरगेनाइजेशन क्लाइमेट एण्ड सेटिसफेक्शन ऑफ पॉरटिसिपेसिनिंग ग्रुपस इन सेलेक्टिड कैथॉलिक सेकेण्ड्री स्कूलस ऑफ न्यूयार्क, ***डिस, एब्स. इण्टर वोल्यूम 39, पे. 6421.***
- **द्विवेदी, कमल (1979) :** एजूकेशन, सेक्स एण्ड कल्चरल बैकग्राउंड एज कॉरिल्टिस ऑफ वेल्यूज। ऐसथेटिक एण्ड सोशल, ***जूनियर ऑफ एजूकेशन एण्ड साइक्लॉजि, वोल्यूम 36 (4), पेज 219.***
- **फीदर, एन. टी. (1979) :** वेल्यू एण्ड कनजरवेशन, ***जूनियर ऑफ पर्सनल एण्ड सोशल साइक्लॉजि, वोल्यूम–37, पेज 1627.***
- **कटियार, पी.सी. (1979) :** ए स्टडी ऑफ वैल्यूज एण्ड वॉकेशनल प्रीफिरेन्सस ऑफ दा इन्टरमीडिएट क्लास स्टूडेन्टस इन यू.पी. ***सेकेण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, पेज 104.***
- **लू, हेलन हॉग – मिन (1979) :** डिटरमिनेन्टस ऑफ फेमिली साइज : सेक्स रोल ऑरियन्टेशन एण्ड वेल्यू ऑफ चिल्ड्रन ***डिस एब्स, इण्टर, (अप्रैल), वोल्यूम 39, पेज 5988.***
- **आनन्थारामन, आर.एन. (1980) :** दा इफेक्ट ऑफ सोशल एण्ड रूरल अरबल लॉकेलिटि ऑन वेल्यूज, ***जूनियर ऑफ साइको रिसर्च, नं0–2 पेज–112.***
- **नायडू, एन. चिन्नास्वामी (1980) :** इनक्लेशन ऑफ वेल्यूस एण्ड कल्चर इन चिल्ड्रन ऑफ प्राइमरी क्लासिस, ईथिकल एण्ड सोशन वेल्यूज इन टीचर एजूकेशन, एन.आई.ई. कम्पस, एन.सी.ई.आर.टी., न्यू देहली, पेज–38.

- **बॉहनन ब्लस्ट, स्टीफन एरिक (1981) :** रिलेशनशिप बिटविन, स्टूडेन्टस वेल्यूज, टीचर वेल्यूस एण्ड हेल्थ एटिट्यूडस अमंग स्टूडेन्टस एनरोल्ड इन ए कॉलेज लेवल पर्सनल हेल्थ क्लास, ***डिस, एब्स, एण्टी वोल्यूम 41.41 (7–8) पे0 3433.***

- **गुटलियस, रीबेका एसटीए मॉरिआ (1981) :** ए स्टडी ऑफ दा रिलेशनशिप बिटविन दा वेल्यू आरियन्टेशन ऐकेडेमिक एचिवमेन्ट ऑफ फीलीपिनो – अमेरिकन स्टूडेन्टस, ***डिस, एब्स, इण्टर, वोल्यूम 42 (5–6) पेज 2011।***

- **लिर, जेनॅट (1981) :** ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ दी वेल्यू ऑरियन्टेशन एण्ड सेल्फ कन्सेप्ट्स ऑफ मेक्सिकन अमेरिकन एण्ड इंग्लोअमेरिकन हाईस्कूल स्टॅडेन्टस, ***डिस एब्स, इण्टर, वोल्यूम 41*** *(11–12), पेज–4979.*

- **पॉप, ऐलन मरे (1981) :** ए स्टडी ऑफ हाई स्कूलस्टूडेन्टस एजूकेशन वेल्यू : एम्पलीकेशन फॉर कनसेसनल, ***डिस एब्स, इण्टर, वाल्यूम 41 (7–8), पेज 935.***

- **रीसे, विलियम एलबर्ट (1981) :** दा डेवलपमेन्ट एण्ड वेलिडेशन ऑफ ए स्कूल टू मेजर डोमिनेन्ट लाइफ वेल्यूज ऑफ स्टूडेन्टस ऑफ डायवर्स कल्चरल बैंक ग्राउण्ड्स, ***डिस एब्स, इण्टर, वोल्यूम–4 (3–4), पेज–1556.***

- **शाहनद, होजाद (1981) :** रिलेशनशिप्स अमंग सलेक्टेड बैकग्राउण्ड केरेक्टरीस्टिक ऑफ यूनिवर्सिटी स्टूडेन्टी एण्ड देयर पर्सनल व्यूज, ***डिस एब्स, इण्टर, वोल्यूम 42 (3–4), पेज 1530.***

- **मेथर, पॉल एनथोरि (1982) :** दा वेल्यू ऑफ चिल्ड्रन इन दा कान्टेक्सट ऑफ दा फेकिली इन जावा ***डिस एब्स, इण्टर, (नवम्बर), वोल्यूम 43 (5), पेज 1701.***

- **गोस्वामी, एस. के. (1983) :** गुजरात के पोस्ट बेसिक तथा सामान्य विद्यालयों के अध्यापकों तथा छात्रों के मूल्य का अध्ययन ***रिसर्च जनरल ऑफ एजूकेशन खण्ड सोसियोलोजी पी–एच.डी. एस.पी.यू.।***

- **गोस्वामी, एस. एस. (1983) :** उच्च माध्यमिक स्तर पर स्कूल के वातावरण में अध्यापकों के मूल्यों का अध्ययन किया। ***रिसर्च जनरल ऑफ एजूकेशन खण्ड सोसियोलोजी पी.–एच.डी एस.पीयू.।***

- **स्टेल, एस.एम. एण्ड हरमॉन, वी.एम. (1983) :** वेल्यू क्लेरिफिकेशन इन नर्सिंग, क्नेस्टीकट : ***ऐप्लटॉन सेन्ट्यरी – क्राफ्ट्स।***

- **क्रुचफिल्ड, ग्लेरिया एन. (1983) :** दा रिलेशनशिप ऑफ वेल्यूज एण्ड सेल्फ कन्सेप्ट टू दा ऐकेडमिक परफारेन्स ऑफ ब्लैक स्टॅडेन्टस, ***डिस, एब्स, इण्टर, वाूल्यू 43 (9), पे. 2916.***

- **एलिस रिचमंड, जेने (1983) :** लाइफ वेल्यू चॉइसस इन करियर डिसिजन मेकिंग एजू फॅंगशन ऑफ रॉल सेसियेन्स, ऐज एण्ड सेक्स अमंग कम्यूनिटी कोंज स्टूडेन्टस, ***डिस, एब्स, इण्टर, वोल्यूम 43 (9), पेज 2894.***

- **फील्ड, जॉक वाइटलॉक (1983) :** दा वेल्यू पेरॉडम : ए स्टडी ऑफ वेल्यूज एण्ड कॉनसेन्सस इन फेमिली सिस्टम, ***डिस, एब्स, इटर, वोल्यूम–44 (20 पेज 588.***

- **ग्रे. जीन डेविस (1983) :** वर्क वेल्यस एण्ड असरटेवनेस इन दा अएम्लॉएड एण्ड अनएम्पलाएड एपिलेपटिक; ***डिस एब्स, इण्टर, वोल्यूम 44 (2), पेज 386.***

- **मधुरो, ऑजीनीओ ऐलन (1983) :** मेटरनल एडोपटेशन इन रीलेश्न टॅ वेल्यू ऑफ चिल्ड्रन एण्ड स्पोर्ट सिस्टम : ए स्टडी ऑफ हीज़ पेनिक मदरस। ***डिस एब्स. इण्टर, (जून), वोल्यूम–43(11), पेज 3546.***

- **गोस्वामी, ए. एस. (1984) :** माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों का शैथ्क्षक मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण और राजनैतिक मूल्यों की वरीयता का अध्ययन, ***रिसर्च जनरल ऑफ एजूकेशन, खण्ड सोसियालोजी पी.–एच.डी. एस0पी0यू0।***

- **तनेजा, वी0 आर0 (1984) :** फाउंडेशन ऑफ एजूकेशन (फिलासिफकल एण्ड सोशियोलोजिकल) चंडीगढ़ ***महेन्द्रा कपिटल पब्लिशिंग।***

- **दा दलाई लामा (1984) :** काइंडनेस, क्लेरिटि एण्ड इनसाइट वेल्यूज (ट्रास्लेटिड एण्ड एडिटड बाए आपकिंस, जे.) ***स्नो लाएन, न्यूयार्क, यू.एस.ए.।***

- **डिलेनो, जूनो ली (1984) :** जेनेडर इफेक्टस इन वेल्यूस एण्ड नेगॉसिएशन आउट कमस ***डिस, एब्स, इण्टर, वोल्यूम – 45(4) पेज 1016.***

- **कुन्नकल, टी.वी. (1984) :** वेल्यू ऑरियन्टेशन एजूकेश, न्यू फ्रन्टीयरर्स इन ***एजूकेशन, वोल्यूम–14,(1) पेपर–19–30.***

- **किंग, एउन जीन (1984) :** डायट्री विहेवियर एण्ड एनट्रायशन नॉलेज, वेल्यूज ऐज एण्ड रेस ऑफ कॉलेज फ्रेशमेन, ***डिस एब्स, इण्टर, वोल्यूम–44(7).***

- **कुमार, प्रमोद एण्ड मुथा, दिनेश (1985), :** टीचर इफैक्टीवनेस एज रीलेटिड विद वेल्यू – ऑरियन्टेशन ऐट सैकेण्ड्री लेवलस टीचिंग, ***जूनियर ऑफ एजूकेशन एण्ड साइकलोजी, वोल्यूम–43 (1), पेपर 222–226.***

- **मिलिस, एम. (1986) :** रिसर्च फाइनडिंग ऑन दा स्टैजिज ऑफ स्कूल इम्प्रुवमेन्ट कान्फ्रेंस आन प्लॉनड चेंज, ***ऑनटेरियो इन्सटीट्यूट फार स्टडीज इन एडयूकेशन।***

- **सिंह, एल.सी. एण्ड प्रभाकर सिंह (1986) :** इफैक्टीवनेस ऑफ वेल्यू क्लेरिफाईंग स्ट्रेटजीस इन वेल्यू – ऑरियन्टेशन ऑफ बी.एड. स्टूडेन्टस रिसर्च प्रोजेक्ट, डिपार्टमेन्ट ऑफ टीचर-एजूकेशन, ***स्पेशल एजूकेशन एण्ड एक्सटेंशन सर्विस, एन.ई.ई.आर.टी., न्यू देहली, पेज712.***

- **कुमारी, प्रभावती (1987) :** माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों के शैक्षिक मूल्यों तथा व्यक्तिगत मूल्यों के संदर्भ में अध्ययन, ***रिसर्च जनरल ऑफ एजूकेशन, खण्ड सोस्यिोलोजी, पी.–एच.डी. एजूकेशन, गोरखपुर।***

- **अग्रवाल, नम्रता (1987) :** माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मूल्यों का अध्ययन, ***एम.जी.पी. रूहेलखण्ड यूनिवर्सिटी एलाइड एम.एड. डिजरटेशन।***

- **फुलेन, एम. मिलिस, एम. एण्ड एण्डरसन, एस. (1987; :** अ कन्सेप्चूअल प्लॉन फार एम्पिलिमेन्टिंग दा न्यू इनफारमेशन टेक्नोलोजिस इन ओनटैरियो स्कूल, ***रिपोर्ट इन दा एशिशटेन्ट बाए मिनिस्टिर फार एड्यूकेशनल टेक्लोलाजि, आनटैरियो।***

- **सक्सेना, एस (1987) :** ए स्टडी नीड एचिवमेंट इन रीलेशन टू क्रियेटिविटी वेल्यूज, लेवल ऑफ एसपिरेशन एण्ड एनजाईटी, ***एम.बी.बुच (एजूकेशन), थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च एजूकेशन, पेज–108.***

- **भागवती, ए0 श्रीमती (1988) :** प्राथमिक स्तर के अध्यापकों के मूल्यों पर आधुनिकता के प्रभाव का अध्ययन, ***रिसर्च जनरल ऑफ एजूकेशन पी.–एच. डी. एजूकेशन विलासपुर, मध्यप्रदेश।***
- **हिच, ई.डी. (1988) :** कल्चरल लीट्रेसी : वॉट एवरी अमेरिकन नीड टॅ नॉ? ***वीनटैज बुक्स रेंडम हाउस।***
- **भटनागर, इन्दू (1989) :** ए स्टडी ऑफ सम फैमिली करेक्टरस्टिक्स रिलेटिड टू सैकेण्ड्री स्कूल स्टूडेन्ट्स ऐक्टिवस्जिम, वेल्यूज ऐडजेस्टमेन्ट एण्ड स्कूल लर्निंग, ***एनपब्लिसड पी.एच.डी. थीसिस मेरठ यूनिवर्सिटी, मेरठ।***
- **सिंह, रघुराज (1990) :** आधुनिकता पर मूल्य के प्रभाव का अध्ययन, ***जनलरल ऑफ एजूकेशन खण्ड, इलाहाबाद।***
- **द्विवेदी, सी.वी. (1991) :** सांस्कृतिक मूल्य और शहरीकरण पर अध्ययन, ***जनरल ऑफ एजूकेशन, खण्ड पी.एच.डी. एजूकेशन इंडिया, इलाहाबाद।***
- **सिंह, आर. पी. (1993) :** ए स्टडी ऑफ वेल्यूस ऑफ अरबन एण्ड रूरल एडोलिसेंट स्टूडेंटस ***प्राचीन जर्नल ऑफ साइको–कल्चर डाइमेंशन वाल्यूम–9(1), 1711.***
- **नागार्ड, आर. (1994) :** डवलपमेन्ट ब्रट्राइड : दा एण्ड आफ प्रोसेस एण्ड ए को0, ***इवोल्यूशनरी रीविजनिंग ऑफ दा फ्यूचर न्यूयार्क रूटलेज।***
- **दा दलाई लामा (1994) :** ए फ्लैश ऑ लाईटनिंग इन दा डार्क आफ नाइट : ए गाइड टू दा बुद्धि स्तवावास वे ऑफ लाइफ, ट्रास्लेटिड बाए दा पदमाकर ***ट्रासलेशन ग्रुप, सम्भाला, यू.एस.ए.।***

- **वीदर्स, जी. (1995) :** कैरीकूलम रीफोर्मिंग, इश्यु एण्ड ट्रेड, दा ह्यूमेनेटिस एण्ड कल्चर एडयूकेशन इन दा साउथ पेसिफिक बैंकाक, यूनेस्को।
- **दा दलाई लामा (1995) :** दा पावर आफ कम्पेशन एण्ड कलचरल वेल्यूज (ट्रांसलेटिड एण्उ ढडिटिड बाए जिनपा, जी.टी.) थॅरसन्स, लन्दन, यू.के.।
- **एखानी, पी0 जनबन्धु डी.एस. एण्ड श्रीवास्तव, एस (1996) :** जनरेशन गेप एण्ड चेन्ज इन वेल्यूस, सावेनिर, 2 नेशनल कान्फ्रैन्स नागपुर साइको – लिंगयूस्टिक एसोसियेशन ऑफ इण्डिया।
- **बाजपेयी, एस. (1996) : ए स्टडी ऑफ वेल्यू इन रिलेशन टू लोकेल एण्ड जेन्डर,** *सॉवनियर 2 नेशनल कान्फ्रैन्स नागपुर साइको – लिंगयूस्टिक एसोसियेशन ऑफ इण्डिया।*
- **चौहान,वी.एल. एण्ड कोठारी, पी. (1996) :** पर्सनल वेल्यूस – ***ए मोटिवेटर फॉर वूमेन्स एम्प्लॉएमेंट प्राचीन जर्नल ऑफ साइकोकल्चर डाइमेंशन, वोल्यूम–12(2), 129–135.***
- **डीलॉर्स, लनिंग (1996) :** दा ट्रेजर विद इन यू.एन.ई.एस.सी., ***ऐ कमीशन रिपोर्ट आन एजूकेशन फार दा 21 सेन्टयूरी पेरिस : यू.एन.ई.एस.सी.ओ.।***
- **डीलर, जैक्स (1996) :** अभिरूचियों के सन्दर्भ में मूल्यों के मापन पर एक अध्ययन, ***रिसर्च जनरल, पेरिस, यूनेस्को।***
- **डायर, ब्लू (1998) :** विजडम ऑ एजेज, ***हार्वर कालिन्स पब्लिशिंग, न्यूयार्क, यू.एस.ए।***
- **दास, आर. सी. (1998) :** मूल्यों के सन्दर्भ में अध्यापकों की तैयारी एवं तत्परता का एक अध्ययन, **इंडियन जनरल फोर एजूकेशन।**

- **दा दलाई नामा (1999) :** हार्ट आफ बुद्धास पॉथ एण्ड वेल्यूज (ट्रांसलेटिड बाए जिनपा जी.टी.) ***थारसन्स, लन्दन, यू.के.।***
- **राठोर, बी. सिंह (1999) :** माध्यमिक विद्यालय तथा स्नातक विद्यालय के शिक्षकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्यन, ***पी.एच.–डी. डिजरटेशन एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड यूनिवर्सिटी, बरेली।***
- **सिंह, एस.के. (1999) :** आधुनिकीकरण का प्राइमरी स्कूल के अध्यापकों के मूल्यों पर प्रभाविकता का अध्ययन, ***एम0एड0 डिजरटैशन एम0जे0पी0 रूहेलखण्ड यूनिवर्सिटी, बरेली।***
- **दा दलाई लामा (1999) :** एनसिएंट विजडम, मार्डन वर्ल्ड एण्ड वेल्यूज एथिक्स फार दा न्यू मिलेनिम, ***लिटिल, ब्राउन एण्ड कम्पनी, लंदन, यू.के.।***
- **यूनेस्को – ए.सी.ई.आइ.डी. (2000) :** रीफोर्मिंग लनिाग कैरीकुलम एण्ड पेडागोमी, ***इनोवेशन विजन फार दा न्यू सेन्ट्री बैंकाक, यूनेस्को।***
- **हिक्स, डेविड (2000) :** प्रोजिक्स ऑफ दा हार्ट, ***रिफ्लेक्शनस आन एड्यूकेशन फार दा न्यू सेन्चयूरी, इन यूनेस्को – सी.ई.आई.डी. (2000)।***
- **जेरॉनसिटासिन, क्यू., टी.एम. (2000):** इन्टेलीजेन्स एट दा मिलेनियम, इन यूनेस्को – ***ए.सी.ई.आई.डी.।***
- **नाकायम्मा, रायूची (2000) :** दा डेस्टीनेशन ऑफ जेपनीज चैलेन्जीस, इन यूनेस्को – ***ए.सी.ई.आई.डी. (2000).***
- **दा दलाई नामा XIV (2000) :** ट्रांसफॉमिंग दा वेल्यूज (ट्रांसलेटिड बाए जिनपा, जी.टी.) थारसन्स, लंदन, यू.के.।

- **ब्रोक, बी.एल. एड ग्रीडी, एम.एल. (2000) :** मूल्यों के सन्दर्भ में प्राथमिक स्तर पर अध्यापकों की चेतना का अध्ययन, ***क्राऊन प्रेस।***
- **टॉली, ई. (2001) :** दा पावर ऑ नॅव टूवारड्स दा वेल्येज : ए गाइड टू स्प्रीट्यल्स एनलाइटमेन्ट, ***योगी एमप्रेशन्स बुक प्राइवेट लिमिटेड।***
- **जिबारडो, पी.जी. (2002) :** साइक्लोजि एराउंड दा वर्ल्ड, ***ए.पी.ए. मॉनिटर जनवरी इश्यु।***
- **हे., एल. (2002) :** यू केन हील यॉअर लाइफ, ***फुल सर्कल पब्लिशिंग।***
- **मीरचन्दानी, डी. (2002) :** वाई एलट्रयूस्जिम इज गुड फार यू/लाइफ पॉजिटिव, वाल्यूम–7, इश्यू–9, पेपर–60–61.
- **शुक्ला, एन. (2002) :** 101 वेएज टॅ क्रिएट ए सुपर यू, लाइफ पॉजिटिव ***वाल्यूम–7, एश्यु–ए, पेपर–21–30.***
- **कलाम, ए.पी.जे. अब्दुल (2003) :** ए स्टडी ऑफ वेल्यूज टूवारड्स डवलपमैन्ट, ***गजट वोल्यूम–4.***
- **जेकोब, ए (2003) :** सरवाइविंग ऑन फेथ, लाइफ पॉजिटिव, ***वोल्यूम–7, इशु–11, पे–86.***
- **पाण्डेय राम सकल:** मूल्य शिक्षण, आगरा विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
- **सिंह अरूण कुमार :** व्यक्तित्व पटना मोतीलाल वनारसी दास।
- **गुप्ता, एस.पी. :** उच्च शिक्षा मनोविज्ञान इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।
- **तिवारी एण्ड तिवारी :** परीक्षण, मापन एवं मूल्यांकन आगरा रामलाल एण्ड सन्स।

- **गैरिट, एच.ई.** : शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांख्यिकी नई दिल्ली, नेशनल
- **गुप्ता, नत्थूलाल** : मूल्य परक शिक्षा नई दिल्ली, अभिनव प्रकाशन, 2006.
- **एन.सी.टी.ई** : शिक्षा एवं मूल्य नई दिल्ली राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्, 2004.
- **यादव, आर. एस.** : एजुकेशन एण्ड वैल्यूज, वाराणसी, यूनी0 पलब्लिशन्स, 2001.
- **बुच, एम.वी.** : फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च न्यू देहली, एन.सी.ई.आर. टी.त्र 1999.
- **बेस्ट, जे. डब्ल्यू.** : रिसर्च इन एजूकेशन, न्यू देहली, हिन्द पब्लिकेशन्स
- **सुखिया, एस. पी. एण्ड मेहरोत्रा, आर. एन.** – एलिमेण्ट्स ऑफ एजूकेशनल रिसर्च आगरा विनोद पुस्तक मंदिर।
- **भटनागर, आर. पी.** : शिक्षा में अनुसंधान, मेरठ लॉयल बुक डिपो – 1998 शिक्षा शोध पत्रिका लखनऊ सरस्वती कुंज निराला नगर।
- **अभिनव,** इलाहाबाद, सीनेट।
- **ओड, एल. के.** : शिक्षा के दर्शनिक एवं सामाजिक आधार जयपुर, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी–2001
- **एजूकेशन एण्ड वेल्यूज** : माउण्ट आबू, स्प्रिरिचुयल यूनीवर्सिटी।
- **किन्डू, सी.एल. इण्डियन ईयर्स** : ऑन टीचर्स एजूकेशन, स्टर्लिंग पब्लिशर्स, प्रा.लि. नई दिल्ली।

REUSABLE BOOKLET

OF

TEACHER VALUES INVENTORY

(T V I)

(Hindi Version)

Dr. (Mrs.) Harbhajan L. Singh

UDAIPUR

And

Dr. S.P. Ahluwalia

Retired Prof. Head and Dean

Faculty of Education

Dr. H.S. Gaur University

SAGAR (M.P.)

Estd. 1971 ***Ph.: (0562) 2364926***

NATIONAL PSYCHOLOGICAL CORPORATION

4/230, KACHERI GHAT, AGRA - 282 004 (INDIA)

अध्यापकों के विचारों और अधिमानों को जानने का यह एक प्रयास है। इसमें यह निश्चित करने का यत्न किया गया है कि विभिन्न स्थितियों में अध्यापक क्या करते हैं अथवा क्या करना चाहते हैं। इस पुस्तिका में कुछ प्रश्न, छः छः वैकल्पिक उत्तरों के साथ दिये गये हैं। आप को इन्हें अपनी पसन्द के आधार पर क्रमबद्ध करना है।

कोई भी उत्तर सही अथवा गलत नहीं है। आपसे केवल विविध स्थितियों में अपने निजी अधिमान बताने के अनुरोध है। आप किसी भी वैकल्पिक को प्राथमिकता दे सकते हैं। परन्तु यह आवश्यक है कि आप दिये गये वैकल्पिकों में से ही चयन करें और छः वैकल्पिकों को उनकी वांछनीयता के आधार पर क्रमबद्ध करें। जहाँ आपकी पसन्द सुस्पष्ट न हो आप अनुमान लगा सकते हैं पर ऐसा कम से कम करें।

कृपया प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दें और पहले से हल हुए प्रश्नों का उत्तर बाद में मत बदलिये।

कृपया इस पुस्तिका में कुछ न लिखें उत्तर पत्र में ही लिखिये।

कहीं ऐसा भी हो सकता है कि आप सोचें कि एक अध्यापक के जीवन में यह बात सम्भव नहीं है, तो भी आप स्वयं को उस स्थिति में मान कर उस प्रश्न का उत्तर दें। उत्तरों को उत्तर पत्र में लिखने के ढंग की विधि एक उदाहरण द्वारा नीचे समझाई गई है। कृपया इसे ध्यान पूर्वक पढ़ें और उसके अनुसार कार्य करें। समय की कोई निर्धारित सीमा नहीं है। फिर भी काम जल्दी ही करें।

उत्तर पत्र में उत्तर लिखने की विधि :

कृपया प्रत्येक प्रश्न तथा इसके छः सम्भाव्य उत्तरों को ध्यान से पढ़िये और इनका प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ और अंन्तिम स्थान निर्धारित कीजिये । उत्तर पत्रिका में जो वैकल्पिक आपको सबसे अधिक पसन्द है, उसके कोष्ठ में '1' लिखिये। जो वैकल्पिक आपको उससे कम पसन्द है उसके कोश्ठ में '2' और इसी प्रकार बाकी के कोष्ठकों में वैकल्पिकों की वांछनीयता के आधार पर '3', '4', '5' और '6' लिखिए।

उदाहरण मान लीजिये प्रश्न है –

1. आपको क्या करना अधिक रूचिकर लगता है?

(क) पुस्तकें पढ़ना

(ख) मित्रों से मिलना–जुलना

(ग) पूजा–पाठ करना

(घ) संगीत सुनना

(ड़) राजनीति में भाग लेना

(च) अधिक धन कमाने की योजनायें बनाना

अब यदि आप वैकल्पिक (घ) को सबसे अधिक पसन्द करते हैं तो (घ) के नीचे वाले कोष्ठ में '1' लिखिए। इसके पश्चात् यदि आप (ड़) को दूसरा स्थान (क) को तीसरा स्थान, (ख) को चौथा स्थान, (च) को पाँचवा स्थान और (ग) को सबसे अन्तिम स्थान देते हैं तो आप (ड़) के नीचे '2', (क) (क) के नीचे '3' (ख) के नीचे '4' (च) के नीचे '5' और (ग) के नीचे '6' लिखेंगे।

क	ख	ग	घ	ड़	च
3	4	6	1	2	5

कृपया स्मरण रहे कि आपको र्पथम पसन्द '1' अंकित होगी और अन्तिम पसन्द '6'।

अब प्रत्येक प्रश्न को ध्यानपूव्रक पढ़ें और अपने उत्तर उत्तर–पत्र में लिखें।

कृपया पन्ना उलटिए।

1. **आप अपने अतिरिक्त समय में किस विषय का अध्ययन करना चाहेंगे?**

(क) व्यवसाय प्रबन्ध

(ख) ललित कलाएँ

(ग) दर्शन शास्त्र

(घ) मानवीय सम्बन्ध

(ङ) सार्वजनिक भाषण कला

(च) अपने धर्म के बारे में अधिक ज्ञान।

2. **आपके दैनिक समाचार पत्र के प्रथम पृष्ठ पर छपी निम्नलिखित घटनाओं को आप प्राथमिकता के किस क्रम से पढ़ेंगे?**

(क) अन्तरिक्ष यात्रा में नये प्रयोग

(ख) चीन का राष्ट्रीय संघ में प्रवेश

(ग) बाजार परिस्थिति में विशेष सुधार

(घ) पूर्वी बंगाल में सामुदायिक तूफान से हजारों पीड़ित

(च) बारहवीं शताब्दी के प्रसिद्ध चित्र मिले

(च) विश्व के धार्मिक नेताओं का सम्मेलन।

3. **यदि किसी से भेंट करने के हेतु कुछ समय के लिए किसी कमरे में अकेले हों और वहाँ निम्नलिखित पत्रिकाएँ मेज पर पड़ी हों तो आप उन्हें किस क्रमानुसार पढ़ने के लिए चुनेंगे?**

(क) ललित कला एवं सजावट

(ख) हरिजन–कल्याण

(ग) भक्ति मार्ग

(घ) विज्ञान प्रगति

(ङ) आर्थिक जगत

(च) राजनैतिक समीक्षा

4. **यदि आपके पास पर्याप्त अवकाश हो तो आप उसका किस ढंग से उपयोग करना चाहेंगे?**

(क) किसी समूह के साथ मिल कर गन्दी वस्तुओं की स्थिति सुधाने में

(ख) कोई दार्शनिक लखे लिखकर

(ग) संगीत लिख कर

(घ) कोई अंशकालिक नौकरी करके

(ड़) धार्मिक सभाओं में भाग लेकर

(ड़) राजनीति में अधिक सक्रिय भाग लेकर

5. **यदि आप समर्थवान हों तो आप हमारी शिक्षण संस्थाओं की नीतियों का मार्गदर्शन करने हेतु निम्नलिखित उद्देश्यों को किस क्रमानुसार प्राथमिकता देंगे?**

(क) शिक्षाको कार्यभिमुखी बनाना

(ख) छात्रों में ईश्वर के प्रति दृढ़ विश्वास पैदा करना

(ग) सामाजिक समस्याओं के अध्ययन को उद्दीप्त करना।

(घ) छात्रों में विश्लेषणात्मक मन और समालोचनात्मक विचार शक्ति को उत्पादन करना।

(ड़) संगीत और ललित कलाओं के अध्ययन और इनमें भाग लेने को प्रोत्साहन देना।

(च) छात्रों में आज्ञा पालन और अधिकारी के प्रति आदर की भावना को अन्तर्निविष्ट करना।

6. **आप किस प्रकार के मित्र पसन्द करेंगे?**

(क) जो दार्शनिक प्रकृति के हों

(ख) जिन्होंने भौतिक दृष्टि से बहुत उन्नति की हो

(ग) जो कलात्मक स्वभाव के हों

(घ) जो विचारों में और कर्म से अत्यन्त धर्मनिष्ठ हों

(ङ) जिनमें अच्छे नेतृत्व के गुण हों

(च) जिन्हें दूसरों की सहायता करने से प्रसन्नता हो।

7. आप आने वाली ग्रीष्म कालीन छुट्टियों में क्या करना अधिक पसन्द करेंगे? (यदि आप में योग्यता हो और परिस्थितियाँ अनुकूल हों)

(क) ऐसी जगह जायें जहाँ आप सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों का आनन्द ले सकें और उनकी प्रशंसा कर सकें।

(ख) प्रसिद्ध तीर्थ स्थानों की यात्रा करें।

(ग) भारतीय तथा पाश्चात्य दर्शन पर पुस्तकें पढ़ें।

(घ) अपने इलाके में युवक सभा का आयोजन करें और उसे चलायें।

(ङ) रेडक्रास के माध्यम से पीड़ित लोगों के कष्ट निवारण के लिए कार्य करें।

(च) कोई छोटा मोटा धन्धा सीखें जिससे आपकी आय में वृद्धि हो।

8. आप अपने विद्यालय में शिक्षण कार्य के अतिरिक्त निम्नलिखित कार्यों को प्राथमिकता के किस क्रम से सहयोग देने में सहमत होंगे।

(क) साहित्यक सभा

(ख) समाज सेवा संघ

(ग) भक्ति गीत गायक सभा

(घ) नाटक क्लब

(ङ) छात्र सहकारी भण्डार

(च) एन.सी.सी.।

9. किन चारित्रिक गुणों को आप अधिक वांछनीय समझते हैं?

(क) निःस्वार्थता और सहानुभूति

(ख) ईश्वर में विश्वास

(ग) मितव्ययता

(घ) ज्ञान का प्रेम

(ड़) सौन्दर्य-बोध

(च) राजनैतिक सजगता।

10. निम्नलिखित क्रियायेंआपको किस सीमा तक आकर्षित करती हैं?

(क) फूल प्रदर्शनी देखना

(ख) पड़ोस के किसी अकेले वृद्ध अथवा वृद्धा को संगीत देना

(ग) प्रयोगशाला में वैज्ञानिक प्रयोग करना।

(घ) विद्यालय की पिकनिक के लिए धन एकत्रित करना और सामान खरीदना।

(ड़) किसी गोष्ठीका सभापतित्व करना।

(च) भक्ति संगीत सुनना

11. आप अपने निम्नलिखित भूतपूर्व विद्यार्थियों में से किन पर अधिक गर्व करेंगे?

(क) जो आई.ए.एस. अधिकारी है।

(ख) जिसने समृद्ध व्यापार स्थापित कर लिया है।

(ग) जो एक प्रसिद्ध चित्रकार है।

(घ) जो मुख्यतः मानसिक और शारीरिक रूप से ग्रस्त बच्चों की सेवा में तल्लीन है।

(ड़) जिसने मानव जीवन के आध्यात्मिक पक्षों का गहन अध्ययन किया है।

(च) जिसने वैज्ञानिक अनुसन्धान की सुथरी हुई कार्य-पद्धति विकसित की है।

12. आप अपने बच्चों में कौन से गुणों को अधिमान देंगे?

(क) धन के समुचित प्रबन्ध की योग्यता

(ख) दूसरों की सहायता करने की अभिलाषा

(ग) दूसरों का नेतृत्व करने की योग्यता

(घ) तर्क वितर्क करने की योग्यता

(ङ) सौंदर्य–बोध

(च) आपके धार्मिक सिद्धान्तों की समझ और उने साथ प्रेम।

13. आप किस विषय में और अधिक जानना चाहेंगे?

(क) कला में आधुनिक प्रचलन

(ख) स्थानीय राजनीति

(ग) व्यावहारिक अर्थशास्त्र

(घ) विश्व के धर्म

(ङ) विश्व के महान विचारकों के सिद्धान्त

(च) आपके इलाके में समाज सेवी संस्थाओं का कार्यक्रम।

14. आप किस पद पर कार्य करना पसन्द करेंगे?

(क) जहाँ आप पर्याप्त धन कमा सकें।

(ख) जहाँ आप ही मुख्याधिकारी हों।

(ग) जहाँ आप अकिंचन लोगों की सेवा कर सकें।

(घ) जहाँ आप अपने कलात्मक कौशल का उपयोग कर सकें।

(ङ) जहाँ आपको धार्मिक व्यक्तियों की संगति प्राप्त हो।

(च) जहाँ आप अपनी बौद्धिक वृत्तियों में रत रह सकें।

15. कल्पना कीजिए कि आपको लाटरी में एक लाख रूपये का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। आप इस धन से क्या करना चाहेंगे।

(क) राज्य विधान सभा में निर्वाचन के लिए खड़े होंगे।

(ख) प्रसिद्ध, कलाकारों के बनाये हुए चित्र खरीदेंगे।

(ग) मन्दिर (गुरुद्वारा, मस्जिद, गिर्जाघर) बनवायेंगे।

(घ) असहाय लोगों की सहायता करेंगे।

(ड़) किसी व्यापार में लगा देंगे।

(च़) विश्व के महान विचारकों द्वारा लिखी हुई पुस्तको से निजी पुस्तकालय स्थापित करेंगे।

16. आप कहाँ जाना चाहेंगे?

(क) संगीत समारोह में.

(ख) लघु उद्योग प्रदर्शनी में

(ग) चुनाव सभा में

(घ) धार्मिक उपदेश सभा में

(ड़) बाल सुधार समिति की बैठक में

(च) साहित्यिक समिति सभा में।

17. यदि आप में आवश्यक योग्यता हो तो आप निम्नलिखित विषयों को किस क्रम में पढ़ाना पसन्द करेंगे? (जो विषय आप अभी पढ़ाते हैं उनको ध्यान में रखिए)

(क) ललित कलाओं की कोई शाखा

(ख) शुद्ध विज्ञान

(ग) वाणिज्य से सम्बन्धित विषय

(घ) लोक प्रशासन

(ङ) धर्मशास्त्र

(च) समाजशास्त्र

18. आपको अपेक्षाकृत अधिक सन्तुष्टि कब मिलती है?

(क) जब आप कोई गम्भीर पुस्तक अथवा लेख पढ़ते हैं।

(ख) जब आप किसी सभा की प्रधानता करते हैं।

(ग) जब आप अपनी पसन्द का संगीत सुनते हैं।

(घ) जब आप समाज सेवा करते हैं।

(ङ) जब आप अपने धर्म ग्रन्थ पढ़ते हैं।

(च) जब आप आर्थिक विषयों पर चर्चा करते हैं।

19. यदि आपको निम्नलिखित विषयों में से किसी एक पर बोलने के लिए कहा जाय तो आप किसे प्राथमिकता देंगे? (कृपया अपना दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवाँ और छठा क्रम भी बताइये)

(क) कला, कला के लिए ही

(ख) सत्य की खोज

(ग) मित्र कैसे बनायें?

(घ) प्रजातन्त्र बनाम तानाशाही

(ङ) प्रार्थना का महत्व

(च) दाम कराये काम।

20. आप किस क्षेत्र में प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहेंगे?

(क) व्यावसायिक सफलता

(ख) मानवीय कल्याण में योगदान

(ग) कला अथवा संगीत के क्षेत्र में

(घ) राजनैतिक नेतृत्व

(ङ) किसी नये वैज्ञानिक सिद्धान्त की खोज के लिए

(च) ईश्वर के सच्चे अन्वेषक का जीवन जीने के लिए।

21. यदि आप कुछ धन दान करना चाहें तो निम्नलिखित संस्थाओं को किस क्रम में अधिमान देंगे?

(क) वैज्ञानिक अनुसन्धानशाला।

(ख) नृत्य तथा नाटक मण्डली।

(ग) आपकी मनपसन्द राजनैतिक पार्टी।

(घ) रेडक्रास।

(ङ) मन्दिर (गुरुद्वारा, मस्जिद अथवा गिर्जाघर)।

(च) वाणिज्य विद्यालय (जो धनाभाव के कारण बन्द होने की स्थिति में हैं)।

22. आपके विचार में जीवन का मार्गदर्शन सिद्धान्त क्या होना चाहिए?

(क) परिश्रम करके धनवान बनना।

(ख) स्वयं के लिए सत्ता और प्रभाव का स्थान प्राप्त करना।

(ग) अपने धर्म के प्रति दृढ़ रहना।

(घ) प्रत्येक सुन्दर वस्तु का आनन्द लेना और उसकी प्रशंसा करना।

(ङ) जरूरतमन्द और दुःखी लोगों की सेवा करना।

(च) सदैव सत्य की खोज में लगे रहना।